शाश्वत धर्म

सितम्बर १९९२

वर सिद्धचक्रं नमो नित्य भावे, कुभोगा कुरोगा सवे दूर जावे;
करे ऋद्धि सिद्धि वरे सुखवासं, जपे जेह प्राणी सुचिते हुलासं।
अछे मंत्रराजं इदं यंत्रसिद्धं, जिनेन्द्रागमे अेह सारं प्रसिद्धं;
कहे कोण संख्या गुणानां विशालं, पवित्रं विचित्रं चरित्रं रसालं।
'असिआउसा' या पदं पंच मुक्खं, सुनाणा समं दसणं दितु सुक्खं;
चउत्थं तवं कम्मनासं सुसारं, कहे 'सूरि राजेन्द्र' सेवो सुधारं।

(गांधीनगर)

प्रधान संपादक – जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी देहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छ जैन संघ-आणंद • श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छ जैन संघ - जावरा

1302

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रधान सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र

कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३

शाश्वत धर्म कार्यालय

डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक ४ ★ सितम्बर १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

SOE!

झरोखा

- ❉ सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
- ❉ शीलत्व की सौरभ .... आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. ५
- ❉ श्री अरनाथ जिनस्तवन (१८) .... मुनि श्री जयानंदविजयजी ९
- ❉ मनोविज्ञान ज्ञाता राजाभोज .... मुनि श्री प्रशान्तरत्नविजयजी ११
- ❉ आओ सागर से कुछ सीखें .... मुनि श्री रत्नसेनविजयजी १५
- ❉ समाचार दर्शन .... संकलित ३१
- ❉ परिषद के प्रांगण से .... श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ३९
- ❉ समाचार सार .... संकलित ५२
- ❉ श्रद्धांजली ३१

स्थाई स्तम्भ

- ❉ ज्ञान कसौटी (१८) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी १३
- ❉ एक दृष्टि समाचार पत्रों पर .... चकोर दृष्टि १९
- ❉ क्या आप जानते हैं? .... धर्ममित्र २१
- ❉ प्रेरक-कथा (पाप) .... रवि दिवाकर २२
- ❉ सरे राह चलते चलते .... प्रवासी २३
- ❉ रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! .... मुसाफिर २५
- ❉ स्वास्थ्य चर्चा .... संकलित २७
- ❉ युवा सन्देश .... मुनि श्री रत्नसेनविजयजी म. सा. २९
- ❉ शब्दसागर ईनामी स्पर्धा (१३) .... प्रदीप एम. जैन. ३०

गुजराती विभाग

- ❉ चेल्लणा .... पं. श्री पूर्णानन्द विजयजी 'कुमार-श्रमण' ६१

आवरण पृष्ठ परिचय :

थाने स्थित श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय में सिद्धचक्रजी

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

अपनी बात

आइये ! मुस्कान बांटे

दुनिया में कई तरह के लोग होते हैं। कुछ लोग अपनी रोनी सूरत बनाकर जब भी कोई मिले, लम्बी कहानी सुनाना शरू कर दते हैं। भले ही उनकी शारीरिक या घरेलू समस्याओं का सिलसिला सुनते सुनते अगला व्यक्ति परेशान हो जाये, किन्तु उनकी बात पूरी नहीं होती!

जरा सोचिये! संसार में दु:खों की परम्परा है, किन्तु उसे समभाव में सहन करने के बजाय जो मिला उसके आगे कथा करने से क्या लाभ होगा? हाँ, किसी विषय की आवश्यक जानकारी हेतु या सलाह हेतु कोई घटना संक्षिप्त में सुनायें, वह बात अलग हैं किन्तु वह कहते हुये भी मायूसी तो नहीं होनी चाहिये और न ही हाँ में हाँ मिलाकर कायरता का पाठ पढ़ाते हुये उसके दर्द को बढ़ाने में सहायक बनना चाहिये।

अपने अनुभवों के आधार पर जब हम यह मानते है, कि दु:खी होना किसी को पसन्द नहीं, तो हम अपने सारे व्यवहारों को भी इस प्रकार रखें कि हमारे कारण किसी को दु:ख न हो, जब सभी को हम अपना सुख बाँटेंगे तभी हम सुखी होंगे। सभी के सुख में ही अपना सुख समाया हुआ है।

जीवन भर दु:ख ही तो बांटा है हमने। अपने कार्यकलापों से अब तक कितने जीवों को संतप्त किया होगा? न जाने कितने ही लोगों की व्याकुलता के कारण बने होंगे हम?

महान पुण्योदय से जब हमें महामंगलकारी धर्मरत्न की प्राप्ति हुयी है जिसके फलस्वरूप मन में मैत्री, प्रमोद का सागर लहरा रहा है, क्रमश: विषय-विकारों में मंदता आने से जीवन में प्रफुल्लता का अनुभव हो रहा है, तारक वितराग भगवंतो एवं गुणीजनों को देखकर हृदय मोर के समान नृत्य कर रहा है, विभाव से स्वभाव की ओर लौटने में जिन खुशियों का अनुभव हो रहा है वही तो है मुस्कान, वही तो है सुख।

हमारा प्रयत्न अब यह है कि जीवमात्र अब इस सुख को प्राप्त करे। प्रत्येक प्राणी मंगल मैत्री प्रमोद की भावना में रहे।

सम्पादक
T.K. Sanghvi

पालसोड़ा पंथ ग्राम में मन्दिर जिर्णोद्धार सहायतार्थ विनम्र अपील

पालसोड़ा पंथ ग्राम नीमच से १९ किलोमीटर (महू-नीमच हाइवे) दूर स्थित है। जहां आठ जैन परिवार निवास करते हैं। मूलनायक श्री नेमीनाथजी भगवान की प्रतिमा ८०० वर्ष प्राचीन है। वर्तमान में मन्दिर की हालत जीर्णशीर्ण स्थिति में है।

मन्दिर का जिर्णोद्धार कार्य करवाना अति आवश्यक है, जिसका अनुमानित व्यय लगभग ७,००,००० (सात लाख) रूपये है।

अतः समस्त जैन शासन प्रेमी भाईबहनों तथा जैन सेवा संस्थाओं आदि से पालसोड़ा जैन श्वे. संघ की विनम्र अपील है कि इस जिर्णोद्धार कार्य में सहयोग देकर पुण्योपार्जन करें।

चेक/ड्राफ्ट भेजने का पता -
श्री नेमीनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर
C/o. नानालाल सागरमल जैन
पो. पालसोड़ा पंथ,
जि. मन्दसौर - ४५८ ४४७ (म. प्र.)

विनीत
श्री जैन श्वे. मूर्ति पूजक संघ,
पालसोड़ा पंथ - मन्दसौर

प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वर गुरूभ्यो नमः

पधारिये! सुरत नगर अवश्य-पधारिये!

श्री उपधान तप आराधना

सानिध्यता

प. पू. राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा.

प्रथम प्रवेश
आसोज सुदि - ७
ता. ३-१०-९२

卐

द्वितीय प्रवेश
आसोज सुदि - ९
ता. ५-१०-९२

सम्पर्क सूत्र : ☎ - ३०४४३
श्री राज राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर
हनुमान चार रास्ता
सुरत - (गुजरात) ३९५ ००१

आयोजक
श्री सौधर्म वृहत्पागच्छीय
त्रिस्तुतिक जैन संघ
सुरत

ऐतिहासिक कथा

शील की सौरभ

आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी

गतांक से आगे

"अनुमति" शब्द उच्चारण में जितना सरल है, उसे अमल में लाना उतना ही मुश्किल है। यदि मित्रता एक दिन की भी हो, तो भी विरह दुःसह हो जाता है, तो जिन आप्त जनों के बीच जीव छोटे से बड़ा हुआ हो, उसे सदा के लिए दूर जाने की अनुमति देना कितना मुश्किल होता है, यह तो भुक्त भोगी ही जान सकता है। सच ही तो है — 'जौहरि की गति जौहरि जाने।'

जो स्त्री जौहर करती है, वही जौहर करनेवाली का दुःख जान सकती है, अन्य कोई नहीं।

कन्या ससुराल के लिए बिदा होती है, तब माता-पिता का कलेजा उसे बिदा देते समय टुकड़े-टुकड़े हो जाता है। हृदय की वेदना आँखों से आँसू बनकर बाहर आ जाती है। विजय विजया जैसे गुणवान दंपति को मोक्षमार्ग की ओर बिदा करते समय उनके माता-पिता की क्या स्थिति हुई होगी, यह सहज ही समझ में आ सकता है।

पिता ने कहा – "पुत्र! तुम दोनों बड़े भाग्यशाली हो, जो संयममार्ग के पथिक बनने जा रहे हो। सच तो यह है कि हम दोनों को इस मार्ग की ओर प्रयाण करना चाहिये था, पर हम कमजोर हैं। यह संसार का मार्ग बड़े भाग्य से और पूर्व पुण्योदय से ही प्राप्त होता है। तुम दोनों धन्य हो। 'शुभास्तु ते पन्थानः।'

सूनो बहू! जिसने महामंत्र नवकार को और अरिहन्त परमात्मा को अपने हृदय का हार बनाकर चारित्र ग्रहण किया है, वह अवश्य ही भवसागर से पार हो जायेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं है। तुम भी सदा नवकार मंत्र के ध्यान मे रत रहते हुए चारित्र पालन करके भवसागर से पार हो जाओ। तुम लोग ज्ञान के समग्र प्रकाश से प्रकाशित बनो। तुम्हारे अज्ञान मोह का विसर्जन हो जाये, यही मेरी मंगल कामना है।

नाणस्स मोहस्स पगासणाए,
अन्नाण मोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएगं,
एगंत सोक्ख समुवेइ मोक्खं॥

मोक्ष एकान्त सुख प्रदान करता है। जाओ तुम लोग सत्य का अनुसंधान कर अपने जीवन को सफल बनाओ।

अप्पणा सच्च मेसेज्जा,
न य दुग्गहियं कहं कहेज्जा।

विग्रहों से दूर रह कर आत्मानुशीलन करते हुए तुम लोग स्वयं का जीवन तो सार्थक करो ही, पर अन्य जीवों का भी कल्याण करना।

मैं तुम्हें बिदा देता हूँ। शुभास्तु ते पन्थानः। आप लोगों का मार्ग प्रशस्त हो।"

बड़ी धूमधाम से महामहोत्सव पूर्वक उन दोनों की भागवती प्रव्रज्या संपन्न हुई। किसी दिन उनके विवाह की शहनाई बजी थी, तो आज उनके महाभिनिष्क्रमण की शहनाई बज उठी।

यह महोत्सव उस दिन के महोत्सव से अलग प्रकार का था। इसकी अपनी अलग ही विशेषता थी। वह बन्धन का महोत्सव था यह मुक्ति का, जिसके लिए देवगण तक तरसते हैं। प्रबल पुण्योदयवाला ही संयम ग्रहण कर सकता है।

आज उन्हें उस सौन्दर्य की उपलब्धि हो रही थी, जो कभी भी फीका पड़ता नहीं है। उत्कृष्ट चारित्र पालन के सुख की बराबरी बेचारा भवभ्रमण भरा सुख कैसे कर सकता है। संसार सुख सान्त है और जाते वक्त दुःख रख कर जानेवाला है। चारित्र पालन से प्राप्त होनेवाला सुख ऐसा है कि जिससे मृत्यु स्वयं हार जाती है और चिर शाश्वत अमरत्व प्राप्त हो जाता है।

तू मरता कटता नहीं, जलता नहीं महाभाग!
जयन्त सेन तू अमर है, तज मद माया राग॥

उन दोनों ने दीक्षा के पश्चात् पाँच साथी अपने संग के लिए - सरल हृदय, सद्भाव, स्नेह, सुमति और सहकार।

सरल हृदय सद्भावना, स्नेह सुमति सहकार।
जयन्त सेन निज मार्ग में, सुखदा पाँच सकार॥

संयम ग्रहण के पश्चात् वे दोनों धर्म के क्षेत्र में अपने-अपने गन्तव्य की ओर पृथक् पृथक् चल दिये। यद्यपि दोनों का उद्देश्य एक ही था, फिर भी भौतिक रूप से उन्होंने अपना अपना मार्ग अलग कर दिया और वे साधना मार्ग की ओर अग्रसर हो गये।

प्रिय पाठक! अपनी जीवनगाथा जो इस लोकावश में अमर कर गये, उनके गीत हम आज भी गाते हैं। वे अमर हो गये, पर आज भी इस अज्ञान के अन्धकार में भटक रहे जीवों को ध्रुवतारे के समान वे मार्गदर्शन व दिशादर्शन कर रहे हैं।

धन्य है उनका शील! अनुकरणीय है उनका आचरण!

जिस हिम्मत के साथ उन्होंने व्रत लिया, उसी हिम्मत के साथ उन्होंने व्रत का पालन करके भी दिखा दिया। उन्होंने परमात्मा की शिक्षा ग्रहण कर अपना जीवन सफल बनाया।

शिक्षा गमोपदेशश्रवणान्ये कार्थिकान्यधिगस्य।
एकार्थ परिणामो भवति निसर्ग स्वभावश्च॥

जो मुनि जिनोक्त शिक्षा ग्रहण करते हैं और आगम का उपदेश सुनते हैं, वे प्रशम सुख के अधिकारी होते हैं।

प्रशमाव्याबाध सुखाभिकाङ्क्षिण: सुस्थितस्य सद्धर्मे।
तस्य किमौपम्यं स्यात्, सदेव मनुजे ऽपि लोके ऽस्मिन्॥

प्रशमसुख के आगे ऊँचे से ऊँचा देवलोक का सुख भी तिनके के समान है। स्वर्ग के सुख तो परोक्ष हैं और मोक्ष का सुख उससे भी परोक्ष है जब कि प्रशम सुख प्रत्यक्ष है,

इसी जन्म में स्वाभावानुगम्य है। यह सुख किसी की अपेक्षा नहीं रखता और न ही इसके लिए कुछ व्यय ही करना पड़ता है।कहा भी है—

स्वर्ग सुखानि परोक्षाण्यत्यन्त परोक्षमेव मोक्षसुखम्।
प्रत्यक्षं प्रशम सुखं न परवशं न व्यय प्राप्तं।।

अत: यह मुनि जीवन कितना मूल्यवान है! जरा सोचो तो सही। थोड़ा-सा आत्मविश्लेषण भी करो। खाना, पीना, जीना, संसार करना ये सब व्यवहार तो पशु भी करते हैं, फिर मनुष्य में और पशु में क्या अन्तर रहा? मनुष्य जन्म प्राप्त करने के बाद भी यदि केवल इतना ही काम करते रहे, तो समझ लो कि जीवन की बाजी हार गये। लाख मोल का रतन गँवा बैठे।

यह मन मर्कट सा चंचल है। इसे बाँधकर रखो। इसे संयम की डोरी से बाँधो।

स्वच्छन्दी मन मत रखो, मन मर्कट सा जान।
जयन्तसेन मन वश करो, तब होगा कल्याण।।

एक किशोर युगल की यह अमर गाथा युगों-युगों तक मानव को शीलपालन का अमर सन्देश सुनाती रहेगी और कई जीवों का कल्याण करेगी। आवश्यकता है विचारपूर्वक और तन्मयतापूर्वक इस गवाक्ष में झाँकने की। कबीर ने ठीक ही कहा है —

'जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।'

अत: अपनी निर्मल बुद्धि में संयम ग्रहण और पालन का लक्ष्य बनाये रखना ही अपने लिए उचित है। संसार का यह विभ्रम सुख कभी किसी को सुखी नहीं बनाता।

परिजन पैसा पत्नि अरू पद-प्रतिष्ठा भूख।
जयन्तसेन जग में सदा, इनसे आखिर दु:ख।।

हमेशा कर्मों का क्षय करने की बात सोचो। कर्म निर्जरा के मार्ग में आस्रव और बंध से बचते हुए आगे बढो। यह संसार का सुख कर्मपाश में जकड़ने वाला है और आस्रव तथा बंध का क़ारण है। निवृत्ति मार्ग में जितने आगे बढोगे, उतनी ही मोक्ष मार्ग में प्रवृत्ति बढ़ेगी।

तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा

तृष्णा कभी बूढी नहीं होती, हम ही बूढे होते है। 'तृष्णैका तरुणायते' - तृष्णा तो सदा जवान बनी रहती है।

इच्छा पूरी कब हुई, इच्छा करो निरोध।
जयन्तसेन निरोध से कर्मों का अवरोध।।

यह छोटी-सी कथा एक महान आत्मज्योति की लघुकिरण है। सामान्य से सामान्य घटना भी बड़े से बड़ा परिणाम उत्पन्न कर सकती है। मात्र चाहिये विलक्षण मनोयोग से चिन्तन की प्रवृत्ति। फिर तुम्हें मालूम होगा कि कथा-सागर में ऐसे कितने सारे मोती भरे पड़े हैं।

गोताखोर चाहिये, फिर तो बस मोती ही मोती हैं।

इतिशुभम्

शब्दसागर इनामी स्पर्धा १२ के परिणाम एवं उत्तर

परिणाम - निम्नांकित प्रतियोगी इस स्पर्धा में सफल रहे।

१) कु. मीना ए. मेहता - जालोर (राजस्थान) सदस्यसंख्या - एच-७२, २) श्री प्रवीणकुमार जैन - काकीनाड़ा (आ. प्र.) सदस्यसंख्या-सी-७३१, ३) कु. सारिका मंडलेचा - बाग (म. प्र.) सदस्यसंख्या - सी-१११८, ४) श्री जितेन्द्र जैन - पूना सदस्यसंख्या - सी-१०१५, ५) श्री आशिषकुमार जैन - बाग (म. प्र.) सदस्यसंख्या - डी-९३९।

पांचों उत्तीर्ण प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप पांच सौ रूपये का समान भाग ५००/५ = १०० (एक सौ रुपये नगद) म. आ. द्वारा भेज दिये गए हैं।

उत्तर - बाएँ से दांयी ओर - १) कपट ३) पसंसा ५) अभयदेव ९) लाट १०) छकाय ११) सुभग १२) वध १३) चना १४) मिक १६) यव १७) सुग्रीव १८) पीतवर्ण १९) तीन २२) अजीव २४) महावीर २६) नीरव २८) रेवती २९) करत ३०) वितत ३१) सुत ३२) लाख ३६) गगन ३७) विमल ३८) हवा ४०) जमा ४१) दामोदर ४४) पाँच ४६) पत्ता ४७) राजीमती ४८) सय ५०) चन्द्रप्रभा ५१) दाग ५२) साल

उपर से नीचे की ओर - १) कला २) पट ३) पका ४) संयमित ५) अभय ६) भगवतीजी ७) देवकी ८) वध १०) छना १३) चवला १५) कवलाहार १७) सुग्रीव १८) पीला २०) नवनीत २१) मानव २२) अर २३) भतीजी २४) मकर २५) वीतराग २७) रतलाम २८) रेत ३०) विष ३१) सुन्दरी ३३) खलल ३४) अनाथी ३५) रहजता ३७) विरूद ३९) वामा ४१) दाम ४२) मोतीशा ४३) रस ४४) पाँच ४५) चन्द्र ४६) पभा ४७) राग ४९) यम।

ज्ञानकसौटी १८ के उत्तर

(४२६) सामायिक, (४२७) सुदेव, सुगुरू, सुधर्म, (४२८) सोलह, (४२९) समवसरण, (४३०) सम्मेतशिखर, (४३१) सुदर्शना, (४३२) सुतारका, (४३३) सौम्यप्रकृति, (४३४) सुव्रतसेठ, (४३५) सच्चुता, (४३६) स्नात्रपूजा, (४३७) संसारदावा, (४३८) स्वामीअदत्त, (४३९) संवर, (४४०) सड़सठ, (४४१) समय, (४४२) संधान (आचार), (४४३) सम्यग्दर्शन परिषह, (४४४) सौधर्म सभा, (४४५) समभाव, (४४६) सामायिक, (४४७) स्वाध्याय, (४४८) सांवत्सरिक प्रतिक्रमण, (४४९) सुस्थितसूरिजी (सुप्ततिबद्धसूरिजी), (४५०) सारस्वत।

श्री अरनाथ जिन स्तवन (१८)

(देखी कामिनी दोय के.......... ए राग)

विवेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

अरनाथ अरिहंत के भेट्यां भय हरे-हो लाल के, भेट्यां भय हरे।
सुदर्शन सिंह नो पुत्र के, संपत्ति सवि करे-हो लाल के, संपत्ति सवि करे।
देवी माता दक्ष के, जायो जगपति-हो लाल के, जायो जगपति।
पावे नवे निधान के, लीला लहे थती-हो लाल के, लीला लहे थती ॥ १ ॥

श्री अरनाथ अरिहंत भगवंत को मिलने से, उनके चरणों में सर्वस्व समर्पण करने से, भव भय को दूर कर देते हैं। और सभी प्रकार की संपत्तियों को प्राप्त करवा देते हैं। माता देवी की कुक्षी से प्रभु का जन्म हुआ था। नवनिधान शब्द से श्री अरनाथजी अरिहंत पद के साथ चक्रवर्ती पद भी प्राप्त किया था। यह दर्शाया है।

घाती अघाती घात के, सहजे शिववरी हो लाल के, सहजे शिववरी
सादि अनंते सिद्ध के, त्रिपदी तिहां खरी हो लाल के, त्रिपदी.।
अवगाहना अट्टल के, ज्योति सुं ज्योत में हो लाल के, ज्योति।
जाण्यो नवि जावे रूप के केवल लोक में हो लाल के, केवल ॥ २ ॥

छःखंड का आधिपत्य रूप चक्रवर्ती पद की ऋद्धि सिद्धि का भोगोपभोग कर चारित्र ग्रहण कर घाती अघाती दोनों प्रकार के कर्मों का घात, क्षय कर, सहज में शिवनारी का वरण कर लिया। सादि अनंत भंग से अर्थात् सिद्ध बने वह सादि अनंत काल तक वहां रहना है वह अनंत इस प्रकार अनंत काल सिद्धावस्था में ही आपश्री को रहना है। वहां पर भी "उप्पैन्नेई वा, विगमेई वा, धुव्वेई वा," रूप त्रिपदी तो है।

केवलज्ञान में तीनों जगत के तीनों काल के पुद्गल पर्यायों के परिणमन का ज्ञान उत्पन्न होता है, नष्ट होता है, कायम रहता है। अतः त्रिपदी वहां है।

वहां अवगाहना निश्चल है। ज्योति में ज्योत के रूप में आत्मा के असंख्य प्रदेश मिल गये हैं। सत्ता के रूप में अलग-अलग है। सिद्धात्माओं के स्वरूप को छद्मस्थ जान नहीं सकता। केवल ज्ञान के प्रकाश में ही उनका रूप जाना जा सकता है।

जिणे जाण्यो एह स्वरूप के, किम कहे मुख थकी हो लाल के, किम.।
गूंगा गल गत स्वाद के, रीति छे रटन की हो लाल के, रीति.।
वाणीना वर्ण विशेष के, जे जग दीपतां हो लाल जें ०।
ओपमा नहीं उपमान के, रवि कर जीपतां हो लाल के रवि ०। अ ०। ॥ ३ ॥

केवलज्ञान के प्रकाश में सिद्धात्माओं के स्वरूप को जान लेने पर भी उस स्वरूप को मुख से कह नहीं सकते। गूंगा व्यक्ति गुड़ादिके स्वाद का अनुभव कर सकता है पर उस स्वाद का वर्णन नहीं कर सकता। केवलज्ञानी भगवंत सिद्धात्माओं के स्वरूप का अनुभव कर सकते हैं पर आयुष्य की परिमितता एवं गुणों की अपरिमितता होने से उनके सुखों का वर्णन नहीं कर सकते हैं। वाणी के अनेक वर्णाक्षर जगत के अंदर देदीप्यमानरूप से हैं। पर सिद्धात्माओं के गुणगान के लिए कोई ऐसा पदार्थ भौतिक जगत में नहीं है कि जिससे उनके सुख की/गुणों की तुलना किसी से की जा कर समझाया जा सके। सूर्य की किरणों से जगत में ऐसा कोई पदार्थ देखने जाए तो भी नहीं मिल सकता।

सुखशोभन श्री संग के, रमे जिम रति पति हो लाल के रमे ०।
ते जाणे तन मांहि के, सुख सवि संपत्ति हो लाल के सुख ०॥
भाषे सखि ने भाव के, यद्यपि योग्यता हो लाल के यद्यपि ०।
तो पिण ते मन मध्य के, किमपि कृत्यता हो लाल के किमपि ॥ अ ॥ ॥ ४ ॥

रतिपति जो कामदेव लक्ष्मी के साथ जिस सुखों का उपभोग करता है वह उन सुखों का स्वयं अनुभव करता है उसी में वह सुख-संपत्ति मानता है। लक्ष्मीदेवी उस सुख की बात अपनी सखी से कह भी दे तो उसे योग्य कहा जा सकता है।

पर मोक्ष सुख के विषय में कहने की बात तुलना करने की बात नहीं बैठती। क्योंकि उस सुख को केवली भगवंत ही जानते हैं। उनका कथन है, मुक गुड न्याय के दृष्टांत से मुक्ति के सुख को समझने का वही योग्य है। इस कथन को नीचे की पंक्ति से स्पष्ट किया है।

केवलि कथन प्रमाण के, दृष्टांत देखीयो हो लाल के, दृष्टांत।
समकित सांचो चित्त के, स्वचित्त साखीयो हो लाल के, स्व.॥
राचियो सूरि राजेन्द्र के, अम मन आज थी हो लाल के, अम.।
रहीश्युं चाकर राज के, मन भर भाव थी हो लाल के, मन ॥ अ ॥ ॥ ५ ॥

मोक्ष सुख के विषय में तुलना करने की बात योग्य नहीं लगती वहां तो केवलज्ञानियों का कथन प्रमाणभूत मान कर मुक गुड़ न्याय के दृष्टांत से ही समझना है।

समकित गुण रूप प्रकाश में चित्त की साक्षी प्राप्ति हो गई है कि शिव-सुख को किसी उपमा से उपमित कर नहीं कहा जा सकता।

गुरुदेव श्री कहते हैं कि आज से विशेष रूप से देवाधिदेव मेरे मनोमंदिर में विराजमान हो गये हैं। अब मैं मेरा पूर्ण जीवन मन, वचन, काया रूप तीनों योगों से भक्ति रस सेवा, आज्ञा पालन रूप सेवा में व्यतीत करूंगा।

गुरूदेव श्री ने इस स्तवन में सिद्धात्माओं के वर्णन के साथ मोक्ष सुख का कथन कोई नहीं कर सकता इस हकीकत का विशेष रूप से स्पष्टीकरण किया है।

मनो विज्ञान ज्ञाता राजाभोज

मुनि श्री प्रशान्तरत्न विजयजी

राजा भोज की राजधानी में एक बार चोरी हुई, चोरी करनेवाले लोग पकड़े गये। उन चोरों में एक ब्राह्मण था, एक क्षत्रिय सेनापति का पुत्र, एक नगरसेठ का पुत्र और एक कलाल जो मांस बेचने वाले का पुत्र था।

चारों में सब युवान भिन्न भिन्न जाति के थे।

अब इनका न्याय राजा किस ढ़ग से करते है, यह जानने की जिज्ञासा से जिस दिन उसका फैसला होने वाला था,उस दिन बड़ी भारी भीड़ न्यायालय में आई।

राजा भोज के समक्ष चोरों को खड़ा किया गया।

सबसे पहले ब्राह्मण का नंबर लगा, राजा ने उसे कुछ भी नही कहा सिर्फ सामने देखा ब्राह्मण शर्मिन्दा हो गया, राजा ने उसे घर जाने की इजाजत दे दी।

अब क्षत्रिय का नंबर आया,

राजा ने उसको कहा "तुम तो प्रजा के रक्षक हो, फिर चोरी करने की क्या जरुरत पडी बस इतना ही सुनाकर उसे भी छुट्टी दी गई।

तीसरा क्रम नगरसेठ के पुत्र का था,

जिज्ञासुओं के मन में जिज्ञासा थी अब राजा इस को दण्ड देंगे "आपके घर इतना धन होते हुए भी चोरी करते शरम न आई?"इतना सा प्रश्न पूछकर उसे भी घर के लिए छुट्टी मिल गई।

अन्तिम क्रम में था कलाल पुत्र का नम्बर!

राजा ने उसको इतनी सारी भीड़ के मध्य फटके लगाये; गधे पर बिठाकर सारे गाँव में घूमाने की आज्ञा दी।

राजा भोज का एक ही कक्षा की चोरी में, चारों का समान गुनाह देखते हुए भी इस ढ़ंग का अन्याय पूर्ण पक्षपात जनता को खटका, किन्तु राजा के सामने कहने की हिम्मत कौन करे?

आपस में बात बहुत चली, आखिर यह बात अधिकारी के कानों तक पहुँची। अधिकारी ने राजाभोज को प्रश्न पूछा "महाराज ! एक ही चोरी के किस्से में सबको भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा क्यों?"

तब राजन् ने प्रत्युत्तर दिया।

मैंने जो भी न्याय दिया हैं युक्तिसंगत है अगर परीक्षा करनी चाहो तो चारों के घर जाकर खात्री कर सकते हो।

यह सुनकर तलाश की गई ब्राह्मण के घर पर उस ब्राह्मण के पुत्र ने घर पर आकर आत्मघात कर लिया।

क्षत्रिय पुत्र राज्य छोड़कर अन्यत्र चला गया उसके घर से यह समाचार मिले।

नगरसेठ के घर गये तो उसी वक्त नगरसेठ का पुत्र भी आत्महत्या के लिए तैयार हो चुका था।

जिसको सब से भारी शिक्षा दी गई थी उस कलाल पुत्र के यहाँ तलाश हुई वह कलाल पुत्र तो मांस मदिरा में मस्त था, उसको तो शिक्षा का कोई असर भी नहीं हुआ था।

जब लोगों ने चारों की शिक्षा के विविध प्रत्याघात सुनें तो उन्हे भी यह महसूस हुआ की राजाभोज वास्तव में न्यायी है। लोगों के दिल में राजा भोज के लिए मान बढ़ गया।

भारतीय प्राचीन संस्कृति का द्योतक यह द्रष्टान्त है। उच्च घराने का व्यक्ति कभी हलके कार्य नहीं करता, अगर करना भी पड़े मजबूरी से तो उसके दिल में वह दृष्कृत्य कंटक की भाँति चुभता रहता है। ठीक इसके विपरित मनोविज्ञान है निम्नस्तर के व्यक्ति के लिए, कैसा भी भयंकर दुष्कृत्य क्यों न किया हो, उसके दिल में कोई अफसोस नहीं देखने को मिलेगा।

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनाकर सम्यगज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोग दीजिये।

अस्तित्व तो है, व्यक्तित्व विकास करें

अस्तित्व तो आत्मा का सदा-सदा रहा है हर गति और हर शरीर में रहा है लेकिन व्यक्तित्व विकास का अवसर इस मनुष्य जीवन में ही प्राप्त है। व्यक्तित्व विकास के लिए पहले चिन्तन करना होगा। जीवन में सद्गुणों का संग्रह व बुराईयों का विदाई समारोह करना होगा। एक वर्ष में यदि एक सद्गुण का भी अभ्यास करें, तो पहले पहल कठिनाई प्रतीत होगी, भूल भी होगी, लेकिन धीरे धीरे लक्ष्य के निकट अवश्य पहुँच जायेंगे; क्योंकि जहाँ गति है, वहाँ प्रगति है, वहाँ पूर्णता है।

साध्वी मणीप्रभा श्री जी

★ ★ ★

रसना पर विजय : इन्द्रिय संयम

जिह्वा के तीन कार्य हैं। भजन, भोजन व भाषण। मनुष्य का अधिक समय भोजन और भाषण में जाता है। जानवरों का अधिक समय मुहँ हिलाने में जाता है क्योंकि वे आहार से तृप्त नहीं हो पाते, इसलिए दिन भर घांस खोजते व खाते रहते हैं। जबकि कई मनुष्य भोजन से तृप्त होने के बावजूद पान गुटका, सुपारी आदि मुहँ में डालकर, मुहँ को हिला-हिलाकर पशुवृत्ति का परिचय देते हैं। यद्यपि यह जिन्दगी प्रभु—भजन के लिए मिली है, पर थोड़ी देर किया गया भजन भी आदमी को अधिक लगता है।

साध्वी मणीप्रभा श्री जी

ज्ञानकसौटी (१८)

- महेन्द्र जे. संघवी - थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे फिर इसी अंक में पृष्ठ.८ पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। - **सम्पादक**)

(नोट - सभी उत्तर 'स' अक्षर की वर्णमाला से शुरू होते हैं।)

४२६) श्रावक की ११ प्रतिमाओं में से एक।
४२७) आराधना करने योग्य तत्व।
४२८) कार्योत्सर्ग के आगार कितने?।
४२९) तापसों को क्या देखकर केवलज्ञान हुआ।
४३०) सबसे अधिक कल्याणक कहाँ पर हुये?
४३१) किस राजकुमारी ने जाति स्मरण से (पूर्व भव स्मृति से) मंदिर बनवाये?
४३२) तीर्थंकर की शासनदेवी का नाम।
४३३) श्रावक के २१ गुणों में से एक।
४३४) मौन एकादशी की आराधना किसने की?
४३५) तीर्थंकर की अधिष्ठायिका देवी।
४३६) देवचंद्र महाराज रचित एक पूजा।
४३७) हरिभद्रसूरि रचित एक सूत्र का नाम।
४३८) अदत्तादान का एक भेद।
४३९) एक तत्व का नाम।
४४०) समकित के कितने बोल हैं।
४४१) काल गणना का अंतिम भेद।
४४२) अनन्त काय का एक भेद।
४४३) एक परिषह का नाम।
४४४) प्रथम देवलोक की सभा का नाम।
४४५) सामायिक में कौनसे भाव में रहना चाहिये?
४४६) छः आवश्यक में से एक का नाम।
४४७) एक अभ्यंतर तप का नाम।
४४८) एक प्रतिक्रमण का नाम।
४४९) आर्यसूहस्तिसूरि के शिष्य का नाम।
४५०) नौ लोकांतिक देवों में से एक।

॥ प्रातः स्मरणीय प्रभु श्री राजेन्द्रसूरीश्वर गुरूभ्यो नमः ॥

स्पेशीयल ट्रेन द्वारा मद्रास से सम्मेतशिखरजी, पावापुरी, मोहनखेड़ा, आदि जैन तीर्थों की यात्रा

- शुभ प्रयाण -	- शुभागमन -
कार्तिक सुदि ११ शुक्रवार	मार्गशीर्ष शुक्ला ८ बुधवार
६-११-१९९२	२-१२-१९९२

-: टिकट दर :-

वयस्क (पुरा) – रूपये - ५,४११/-

बालक (उम्र ५ से ११ वर्ष) – रूपये ३,७०१/-

टिकट आरक्षण स्थल

(१)
श्री राजेन्द्र जैन भवन
९-एकाम्बरेश्वर अग्राहरम
मिंट स्ट्रीट, मद्रास - ६०० ००३
फोन - ५८६३१२, ५६६३२१

(२)
शा. कान्तिलाल जयन्तिलाल
६७, नारायण मुदली स्ट्रीट
मद्रास - ६०० ०७९
फोन - ५८८८५४, ५८६२७१

(३)
महेन्द्रा एन्टरप्राइजेस
२००-गोविन्दप्पा नायक स्ट्रीट
मद्रास - ६०० ००१
फोन - ५१६५२०, ५१९४६८

संचालन कर्ता
महावीर टूर एण्ड ट्रॉवल्स
बोरीवली, बम्बई - ४०० ०९२
फोन - ८०१ ४४ ३०

आयोजक
श्री राजेन्द्रसूरि जैन परिषद
नं. ९ - एकाम्बरेश्वर अग्राहरम
मिन्ट स्ट्रीट, मद्रास - ६०० ००३
फोन - ५८ ६३ १२, ५६ ६३ २१

सुचना :- १) आरक्षण समय सुवह ८.३० से १०.३० एवं शाम ७ से ९ तक।

२) आरक्षण शनिवार ५/९/९२ से प्रारंभ। आरक्षण की अग्रीम राशी रूपये - १,०००/- भिजवाकर अपनी यात्रा टिकट अतिशीघ्र वुक करवा लें।

३) टिकट दर में रेल व वस किराया, भोजन, आवास शामिल है।

४) दो बच्चों के लिए रेलगाडी में एक शायिका (वर्थ) एवं वस मे हर बच्चे को एक पुरी सीट दी जायेगी।

आओ! सागर से कुछ सीखें!

[मुनि श्री रत्नसेनविजयजी]

सागर के नाम मे भला कौन अपरिचित है? बम्बई आदि क्षेत्रों में रहनेवाला शायद ही ऐसा कोई व्यक्ति होगा जिसने अपने जीवन में सागर को अपनी सगी आंखों से नही देखा हो!

जब समुद्र तट पर जाकर सागर को देखते हैं तो चारों ओर पानी – पानी और पानी ही दिखाई देता है। अमाप जल संपत्ति को धारण किए हुए सागर का भी प्रकृति मंडल में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सचमूच सागर अपने आप में अनेक विध विशेषताओं को संजोए हुए है। इसके साथ ही वह अनेकविध प्रेरणाएँ भी देता है।

सागर का एक नाम रत्नाकर भी है। उसे रत्नों की खान कहा जाता है। सागर के तल भाग में डूबकी लगानेवाला तैराक अमूल्य रत्नों को प्राप्त कर बाहर निकलता है।

परंतु आश्चर्य है कि अमाप संपदा को धारण करने पर भी वह कितना गंभीर है।

सचमुच सागर की गंभीरता जीवन मे अपनाने योग्य है। 'नामस्तव' सूत्र में श्री. अरिहंत परमात्मा को सागर से भी अधिक गंभीर कहा गया है।

सागर कभी अपने रत्नों का प्रदर्शन नहीं करता। वह अपने मुख से कभी नहीं कहता है कि मेरे पास ये – ये किमती रत्न है, मोती है।

उत्तम पुरुष सागर के समान गंभीर होते हैं। उनके जीवन में कभी क्षुद्रता के दर्शन नहीं होते। गंभीर व्यक्ति ही किसी की हल्की बात को अपने पेट में रख सकता है।

क्षुद्र व्यक्ति तुरंत ही प्रदर्शन करने लग जाता है। सागर में कोई पत्थर फेंक दे तो वह सागर उस पत्थर को भी अपने में समा देगा। 'ईंट का जवाब पत्थर से दो' की दुर्नीति में वह विश्वास नहीं करता। किसी ने सागर में थूंक भी लिया – – तो किसी ने आकर सागर की पूंजा भी की, परन्तु वह सागर उन दोंनों को स्वीकार लेगा। कभी किसी का प्रतिकार नहीं करता।

गंभीर व्यक्ति सब कुछ स्वीकार लेगा – किसी के अपमान जनर्क शब्दों को भी सुगंधी पुष्पमाला की भांति स्वीकार लेगा।

मानवी को थोडी–सी सम्पति मिलती है और वह एकदम फूल जाता है– – अभिमान के नशे में आकर अपनी संपति का प्रदर्शन करने लग जाता हैं, परन्तु जरा नजर करे उस सागर की ओर। वह न कभी फूलता है और न कभी अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है। सचमुच, सागर की गंभीरता जीवन में अपना ले तो बहुत से प्रश्न अत्यंत ही सरलता से हल हो सकते हैं।

सागर की अपनी दूसरी विशेषता है – वह कभी अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता। सागर का दूसरा नाम समुद्र अर्थात जो मुद्रा/मर्यादा सहित है। चाहे जितने विकट प्रसंग क्यों न खड़े हो जाय – सागर कभी अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करता। मर्यादा पालन सागर की अपनी बड़ी विशेषता है।

मनुष्य के सामाजिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए जीवन में मर्यादाओं का पालन अत्यंत ही आवश्यक है। धार्मिक मर्यादाएँ लक्ष्मण रेखा की भांति है। लक्ष्मण रेखा के उल्लंघन से सीता के अपहरण की घटना तो विशालकाय रामायण ग्रंथ में एक ही बार सुनने में आती हैं, परंतु जीवन में आचार–मर्यादाओं के भंग के कारण देश–दुनियाँ में हो रही हिंसा अपहरण व बलात्कार की घटनाएँ तो आए दिन अखबारों में पढते–सुनते रहते हैं।

आचार संबंधी मर्यादाओं के पालन में जीवन की सुरक्षा रही हुई है और उन मर्यादाओं के भंग में जीवन की बरबादी रही हुई है।

आहार–संबंधी मर्यादाओं के उल्लंघन से हर व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार के रोग पैदा हुए हैं।

वस्त्र–संबंधी मर्यादाओं के भंग से हिंसा, अपहरण और बलात्कार की घटनाओं को चारों ओर से प्रोत्साहन मिला है।

न्याय–नीति संबंधी मर्यादाओं के उल्लंघन से धन संबंधी भ्रष्टाचार की बाढ सी आ गई है।

सदाचार की मर्यादाओं के भंग से समाज में व्यभिचार का पाप फला–फूला है।

'सागर' – हमें मर्यादा में रहने की अपूर्व प्रेरणा देता है। मर्यादाओं के पालन में जीवन की सुरक्षा हैं, आत्मा का उत्थान हैं, समाज, धर्म और राष्ट्र का विकास रहा हुआ है।

सागर की अपनी तीसरी विशेषता है वह मुर्दों का कभी संग्रह नहीं करता है। वह मुर्दों को किनारे पर लाकर बाहर फेंक देता है। सागर रत्नों का संग्राहक है कूड़े–कचरे का नहीं।

उत्तम पुरुषों की यह विशेषता होती है – वे गुण रत्नों के संग्राहक होते हैं – दोष रुपी कचरे को अपने हृदय में स्थान नहीं देते है, उन्हें तो बाहर ही फेंक देते है।

सचमूच, सागर की यह विशेषता जीवन में अपनाने योग्य है। जीवन में गुण ग्राहकता की वृत्ति आ जाय तो हमारे जीवन बाग में गुण–पुष्पों की महक पैदा हो सकती है।

सागर जिस प्रकार मुर्दों को बाहर फेंकता है, उसी प्रकार यदि हम अपनें जीवन में से दोष रूपी मुर्दों को बाहर निकाल दें तो हमारा जीवन वास्तविक आनंद से भर सकता है।

सागर की अपनी चौथी विशेषता है – वह बहुत ही विशाल होता है। दूर–सुदूर तक दृष्टिपात करने पर भी उसका अंत कहीं नजर नहीं आता है। चारों ओर एक

मात्र पानी – पानी और पानी ही नजर आता है।

सागर हमारी दृष्टि को विशाल बनाने की प्रेरणा देता है। संकुचित दृष्टिवाला व्यक्ति स्वार्थी होता हैं; उसे केवल अपना ही विचार होता है। हर प्रसंग में वह अपनें हित को ही नजर रखता है–– परन्तु जिस व्यक्ति की दृष्टि सागर की भांति विशाल होती हैं; वह कभी अपने स्वार्थ के लिए नहीं रोता है। वह अपना नहीं सबका विचार रखता है।

विशाल दृष्टिवाला व्यक्ति सुख – दुःख के प्रसंगों में मात्र **अपना ही** विचार नहीं करता है, बल्कि सबके हित का विचार करता है।

सागर की अपनी पांचवी विशेषता हैं – उसमें छिछलापन नहीं होता है। नदी में थोड़ा–सा भी जल बढ जाने पर वह उछलने – कूदनें लग जाती है, जबकि सागर में सैकडों नदिर्यों आकर मिलती हैं परंतु इतने मात्र से वह कभी उछलता नहीं है।

कई व्यक्ति थोड़ी–सी शक्ति या संपत्ति को प्राप्त कर तुरंत उछलने लग जाते है। बात–बात में अपनी शक्ति व अहं का प्रदर्शन करने लग जाते हैं, जब कि उत्तम पुरूष शक्ति व संपत्ति को प्राप्त कर कभी भी उछलते–कूदते नहीं है। अपनी शक्ति के प्रदर्शन की तुच्छ वृत्ति उनमें देखने को नही मिलती है। विश्व के प्राणाधार रूप बादलों के निर्माण का यश भी सागर को ही जाता है।

भोजन में से नमक को निकाल दिया जाय तो भोजन स्वाद हीन बन जाता है। ऐसे नमक – समरस का उत्पादक भी सागर ही है।

मगरमच्छ आदि अनेकविध जलचर जंतुओं को आश्रय देनेवाला भी सागर ही है।

इस प्रकार अनेक विध विशेषताओं से युक्त सागर के जीवन में से यदि हम यत्किंचित भी प्रेरणा लेंगे तो उस सागर का अस्तित्व हमारे लिए लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

कर्म गति ?

जैसा करें वैसा भरें, सूखी कोई हरी चरें,
चारों ही गति में घूमें, कर्म के सताए हैं।

रामचंद अवतारी, राज तिलक तैय्यारी,
वे भी साल चवदह, वन में घुमाए हैं।

महावीर स्वामी ध्यानी, बने थे केवलज्ञानी,
दोनों कानों में उनके, कीले भी ठुकाए हैं।

कर्म–गति बलवान, नाचे शिव–भगवान,
''पारदर्शी'' राजा–रंक, बच नहीं पाए हैं।

छंदराज ''पारदर्शी''

हार्दिक श्रद्धांजली

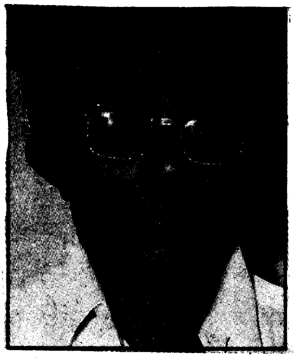

स्व. श्री कुशलराज माण्डोत

जन्म २९/१०/१९२६

स्वर्गवास १५/७/१९९२

शोकाकुल

धर्मपत्नि - धापुबाई
भाई - चम्पालाल
पुत्र-पुत्रवधु - ललित-मंजुला, सुरेश-आशा
पुत्री-दामाद - विमला-अगरचंद
भतीज - महेन्द्र, फुटरमल
पौत्र - रितेश, अमित
पौत्री - रिंकल, पायल, रूचि

एवं समस्त माण्ड़ोत परिवार

प्रतिष्ठान - शाह बोहरमल कुशलराज,
४, नारायण मुदली लेन,
मद्रास - ४०० ०७९

एक दृष्टि समाचार पत्रों पर

❀ **जोरों से चल रहा है नकली शीत पदार्थों का व्यापार** **(जनसत्ता १५-६-१९९२)**

सरकारी अफसरों और पुलिसों की मिली भगत से इस देश में हर कारोबार संभव है। व्यक्ति को स्वयं अपने स्वास्थ्य के बारे मे सोचकर शीत पेयों को पीना बन्द कर देना चाहिये। ५ या ७ रूपये प्रति बोतल देकर भी कोई स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद तत्व उसमें नहीं होता है, हॉ हानिकर तत्व जरूर होते हैं।

❀ **दूषित पानी से मरनेवालों की संख्या बढ़ी** **(जनसत्ता ३-८-१९९२)**

महानगरपालिका बम्वई की रपट के मुताबिक १९८९ के बाद से टाइफाइड, पीलिया और सांस की वीमारियों की वजह से हुई मौतों के आंकडे मे वृध्दि हुयी है।

डाक्टरों और स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार इस वृध्दि की वजह प्रदूषण है। दूषित पानी, बढती हुयी वाहनों की संख्या, धूम्रपान आदि के कारण पर्यावरण दूषित हो गया है। आज न शुध्द पानी है, न हवा और न ही भोजन। - **'चकोरदृष्टि'**

१ अगस्त से ३१ अगस्त १९९२ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य वनाने वाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल सदस्य
श्री पारसमलजी मुथा - लोनावला	२	--	८	१०
श्री जे. के. संघवी - थाने	१	--	१२	१३
श्री जीवराजजी बी. जैन - थाने	--	--	१०	१०
श्री माणकचंदजी गुन्देचा	--	--	५	५
श्री अशोक श्रीश्रीमाल - टाण्डा	--	--	३	३
श्री मोहनलालजी जैन-जोगेश्वरी-वम्वई	--	--	३	३
श्री कांतिलालजी भंडारी-राजगढ़-धार	--	--	१	१
कार्यालय - थाने	--	२	४	६
	३	२	४६	५१

कार्तिकी पंचाग हेतु सम्पर्क करें ☎ 5340724
संवत २०४९ कार्तिक मास से प्रारंभ होरे वाले 'राजेन्द्र तिथि दर्पण' (साइज ७ से. मी. x ११ से. मी.) चार रंगी कवरपृष्ठ एवं दो रंगी मेटर के साथ प्रिंटींग में गये हैं जो महानुभाव दीपावली भेंट हेतु अपनी ओर से छपवाना चाहें वे सम्पर्क करें—
शाश्वत धर्म कार्यालय - जामली नाका - थाने - ४००६०१ (महा.)

हार्दिक श्रद्धांजली

॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः ॥

स्व. श्रीमती सुनन्दाबाई "मामा"

स्वर्गवास आश्विन सुदि ५ दि. १२/१०/१९९१

हम सभी परिवार जन आपको अपने अश्रुपूरित श्रद्धा सुमन अर्पित करते है। एवं आपकी पवित्र आत्मा को चिरशान्ति प्राप्त हो, यही ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

परिवार जन

परिवार प्रमुख - केशरीमल रायचन्दजी 'मामा'

पति - बाबुलाल मामा

पुत्र - विजय, संजय, सन्तोष

पुत्रवधु - श्रीमती सरिता, श्रीमती रजनी

पुत्री - सौ. गुणवन्ता W/o. शेखरजी - इन्दौर

पुत्री - कु. सोनाली

पौत्र-पौत्री - मा. शाहील, बेबी शालिनी एवं चानू

प्रतिष्ठान - दुरभाष - ३२२

* बाबूलाल केशरीमल जैन
* विजयकुमार बाबुलाल
* राजेन्द्र रेडिमेड वस्त्रालय
* राजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस

राजगढ़ (धार) म. प्र. - ४५४ ११६

क्या आप जानते हैं कि - -

- ताप बिजली घर के एक मेगावाट विद्युत उत्पादन में १४ टन कोयला और १४३० किलोलीटर जल की खपत होती है।
- एक गाय प्रतिवर्ष ३ हजार रूपये का दूध, १५ हजार रूपये का गोबर एवं खाद देती है।
- एक बैल प्रतिवर्ष डेढ से दो लाख रूपये ट्रांसपोर्ट के भाडे के बराबर माल ढ़ोता है। ग्राम्य विस्तार में बैल, गधे, उंट, घोड़ों द्वारा जो माल ढोया जाता है, वह रेल्वे एवं ट्रांसपोर्ट की क्षमता से बाहर है।
- १२ वर्ष पहले अमेरिका विश्व का सबसे बड़ा ऋण दाता देश था, वही आज विश्व का सबसे बड़ा कर्जदार देश बन चुका है। देश के आंतरिक बजट का घाटा भी आश्चर्यजनक ऊंचाइयों को छू रहा है।
- जापान और यूरोपीय देश विकास के अनेक क्षेत्रों में अमेरिका से बाजी मार रहे हैं।
- विश्व संगठन द्वारा प्रसारित आंकड़ों के अनुसार समग्र विश्व के अलग-अलग देशों में ४ करोड़ लोग भूखे रह रहे है।
- एक संशोधन के अनुसार बालकों की कल्पना शक्ति पर टी. वी कुठाराघात के समान है। ज्यादा समय टी. वी. देखने के कारण उसकी कल्पनाशक्ति निष्प्राण बन जाती है।
- विडम्बना यह रही कि आजादी के बाद देश के नीति-नियमकों ने शिक्षा क्षेत्र में पश्चिमी पद्धति की मान्य अवधारणाओं को स्वीकार कर बतौर शिक्षानीति उन्हे लागू किया जो निश्चित तौर पर देश, काल और भारतीय प्राचीन संस्कृति के अनुरूप तो थी ही नहीं बल्कि उसने गुरू और आश्रम व्यवस्था के विचार को पूरी तरह ग्रस लिया।
- दिल्ली के अ. भा. आयुर्विज्ञान संस्थान ने एक सर्वेक्षण में पाया कि सड़क दुर्घटनाओं में २५ प्रतिशत दुर्घटना शराब की वजह से होती है।
- यह मानना कि दिल का दौरा सिर्फ पुरूषों को ही अपना शिकार बनाता है, गलत है। बदले हुए जमाने में जिस तरह महिलाओं के कंधो पर जिम्मेदारियाँ बढ़ रही हैं, उससे उन्हें भी काफी तनाव झेलना पड़ता है। इस तनाव का असर उनके रक्तचाप पर भी पड़ सकता है और वे भी दिल के दौरे की शिकार हो सकती हैं।
- दुनियाँ में आज मलेरिया द्वारा प्रतिवर्ष लगभग बीस लाख लोग मरते हैं। विज्ञान परिषद में यह शंका व्यक्त की गयी है कि आगामी पांच वर्षों में यह बढ़कर पचास लाख हो जाने की संभावना है।
- प्राथमिक शिक्षा भी पूरी न कर पाने वाले छात्रों की तादाद हमारे देश में ४७.६१ प्रतिशत है, जो एक रिकॉर्ड है।
- हमारे देश में इस्तेमाल होनेवाले कीटनाशकों में ७० फीसदी ऐसे हैं जिन पर पश्चिमी देशों में या तो प्रतिबंध लगा हुआ है या उनके बहुत सीमित उपयोग की छूट दी गई है। ऐसे कीटनाशकों में डी.डी.टी., बी.एच.सी., मिथाइल पैराथिमान, हेप्टाक्लोर, डाई ब्रोमो क्लोरो प्रोफ्ते, हर्वीसाइड्स-२,

फोर.डी., फारवेल, एल्ड्रिन, क्लोडरेन और ई.पी.एन आदि प्रमुख हैं। इनमें अनेक कीटनाशक तो डी.डी.टी. से पॉंच से बीस गुना तक ज्यादा जहरीले है, जिनका दुनिया में कहीं भी इस्तेमाल नहीं होता, मगर हमारे कृषि विशेषज्ञों की सलाह पर धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहे हैं।

- सारे शरीर की क्षमता को सुधारने के लिये पैदल चलना सबसे अधिक प्रभावशाली व्यायाम है। इसमें किसी भी व्यायाम की अपेक्षा शरीर की मांस पेशियॉं अधिक गतिशील रहती है।
- प्रयोगशाला की एक रपट के मुताबिक पाँच कैडबरी ब्राडों (औल सिल्क डेयरी मिल्क, फाइव स्टार, फ्रूट एंड नट और क्रीम बार), तीन अमूल ब्राडों (मिल्क, फ्रुट एंड नट और औरेंज), दो नेस्ले ब्रांडो (मिल्क बार और क्रंच और कैम्पो के व्हाइट क्रीमी चाकलेट में निकल की मात्रा सुरक्षित स्तर से अधिक पाई गई। इनमें से हर ब्रांड के ५० चाकलेटों का परीक्षण किया गया।
- विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक निकल पेट में जाने से कैंसर भी हो सकता है। इसका गुर्दा और यकृत पर बुरा असर पड़ता है। इससे चर्म रोग हो सकते हैं और बाल सफेद हो सकते है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (युएनईपी) ने निकल को अत्यधिक खतरनाक पदार्थ की श्रेणी में रखा है।
- वेस्टन विश्वविद्यालय के डॉक्टर लेविन के मत से सप्ताह में मात्र तीन दिन ४५ मिनट रोज का भ्रमण स्वस्थ जीवन के लिए पर्याप्त है।

- **धर्ममित्र**

पाप

बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी का निर्माण कार्य जोरों पर चल रहा था। निर्माण में कार्यरत जितने भी लोग थे सब की रसोई एक साथ बनती थी। मालवीयजी भी सब के साथ ही भोजन करते थे।

एक दिन की बात है कि मालवीयजी के पौत्र ने उनसे कहा, 'दादा आज हम भी आपके साथ भोजन करेंगे। मालवीयजी बोले 'नहीं तुम यहां भोजन नहीं कर सकते।'

'क्यों नहीं कर सकते, जहां आप खाना खाते हैं, मैं क्यों नहीं खा सकता ?'

मालवीय ने डांटकर कहा जब हम कह रहे है फिर हठ क्यों कर रहे हो? उन्होंने अपने पौत्र को एक रूपया दिया और कहा कि लो स्कूल में कुछ खा लेना। बच्चा रूपया लेकर चला तो गया मगर उसने उस रूपये का कुछ खाया नहीं।

बच्चे को झिड़क तो दिया लेकिन कोमल ह्रदय पंडित मदन मोहन मालवीय अपने व्यवहार से इतने दुखी हुए कि उन्होंने दिन भर कुछ नहीं खाया। शाम को जब बालक स्कूल से आया तो उन्होंने उसे बुलवाया। पूछा - 'तुम ने कुछ खाया ?'

बालक बोला - 'नहीं दादा।' मालवीयजी की आखों में आंसू आ गए। वे बोले - तुम दिन भर भूखे रहे ? मैंने भी कुछ नहीं खाया। वे पौत्र का हाथ पकड़ कर खाने के लिए ले चले।

खाना खाने से पहले मालवीयजी ने पौत्र से कहा - 'देखो बेटा जो भोजन मैं करता हूं वह लोगों के चंदे के धन से बनाया जाता है। मैं तो इसलिए खाता हूं क्योंकि मैं समर्पित होकर समाज का कार्य करता हूं। इसीलिए जिसका काम करता हूं उसीका खाने में कोई हर्ज नहीं लेकिन तुम तो समाज का कोई काम नहीं करते इसलिए समाज के धन से बननेवाले भोजन को ग्रहण करना तुम्हारे लिए पाप है। इसीलिए मैंने तुम्हें मना कर दिया था।

- **रवि दिवाकर**

सरेराह चलते-चलते

❋ **प्रधानमंत्रीजी का नया अभिगम** - १५ अगस्त को राष्ट्र के नाम संदेश में प्रधानमंत्रीजी ने आतंकवाद, रामजन्मभूमि, बैंक शेअर कौभांड आदि राष्ट्रीय प्रश्नों का सर्वसम्मति से हल एवं तीन वर्ष के लिये मतभेदों को भूलाकर प्रगति की दिशा शक्ति को केन्द्रित करने का अभिगम बताया। यह जरूरी है कि सभी पक्ष इन विषयों में सरकार के साथ सहमति का मार्ग ढूंढने का प्रयास करे किन्तु प्रथम प्रश्न यह है कि क्या कॉंग्रेस में भी इन राष्ट्रीय प्रश्नों को लेकर एक मत है? केन्द्र और राज्यों में सत्ता को नजर सामने रखकर स्वयं क्रॉंग्रेस ने कई समस्यायें उत्पन्न की है, उसका क्या? बौफार्स कौभांड को दबाने की कोशिश, संपूर्ण राष्ट्र में सभी के लिये समान नागरिक कानून, शाहबानो प्रकरण में वरिष्ठ अदालत के निर्णय के वावजूद कानून में सुधार इत्यादि विषयों पर पहले क्रॉंग्रेस स्वयं एक मत पर आये। सवसे वडे विपक्ष भा. ज. पा. को कोमवादी एवं मुस्लीम लीग को राष्ट्रवादी मानकर उसके साथ सहयोग करेंगे तो एकमत कैसे संभव होगा! इसी प्रकार भ्रष्टाचार, पक्ष पलटा, सरकारी वैभववाद एवं सर्वत्र फिजूलखर्ची का चित्र है।

❋ **हमारे प्रधानों के वैभवी महल** - हमारे यहाँ से राजाओं का राज गया किन्तु चुने हुए प्रजातंत्रीय राजाओं ने उनका स्थान ले लिया है। दिल्ली मे केबिनेट एवं राज्य प्रधानों के बंगलों के विस्तार की ओर नजर करें तो मालूम होगा कि इनका वैभव किसी राजा से कम नहीं है। केन्द्रीय मंत्रीमंडल ११ प्रधानों के बंगलों का विस्तार ३ से ५ एकड भूमि में है। सलमान खुरशीद का आवास १५३७८ चौरस मीटर, पेट्रोलियम प्रधान बी. शंकरानंद का निवास १३,५९७ चौ. मी., गृहप्रधान श्री एस. बी. चव्हाण का निवास १२,४६४ चौ. मी., श्री माधवराव सिंधिया का निवास १२,४६४ चौ. मी., श्री शरद पवार का निवास ११,२५० चौ. मी., श्री गुलाम नबी आझाद का निवास ११,२९० चौ. मी. मे है। श्री राजीव गांधी केबिनेट के ६ मंत्रियों ने तो अभी तक अपने सरकारी मकान खाली भी नहीं किये है, जिनमें आठवी लोकसभा के उपाध्यक्ष श्री थांबीदुराई, भूतपूर्व सांसद वैजयंतिमाला, श्री हरमोहन धवन आदि है।

❋ **उत्पादक व उपभोक्ताओं का शोषण एवं विदेशी मुद्रा** - गत बजट सत्र के समय वित्तमंत्री मनमोहनसिंह ने बड़े गर्व के साथ सदन में कहा था कि चंद महिने में ही हमने ११४२४ करोड रूपये विदेशी मुद्रा अर्जित कर घाटे की अर्थ व्यवस्था को सुधारा है, पर इसके पीछे हकीकत कुछ और है। वास्तव में भारत के किसानों की श्रम और पसीने की कमाई कृषि उपज को विश्व बाजार में 'मिट्टी के भाव' पर बेचा गया था। पिछली जनवरी-फरवरी में जब भारत में गेहूं का भाव ५०० रूपये प्रति क्विंटल हो गया था। उस समय सरकार ने दस लाख टन गेहूँ ९५ डालर प्रतिटन (२३७ रू. प्रति क्विंटल) निर्यात किया था तथा ५ लाख ६० हजार टन शक्कर दो हजार रूपया प्रतिटन (२ रु. किलो) और ७ लाख टन चावल (गैर बासमती) २५५ रूपये प्रति क्विंटल निर्यात किया था जब कि भारत

में उस समय शक्कर ९ रूपये प्रति किलो, ६ रूपये प्रति किलो गेहूँ व ७ रूपये प्रति किलो चावल बिक रहा था। इस तरह उत्पादक व उपभोक्ता दोनों का शोषण कर विदेशी मुद्रा अर्जित की गयी।

❋ **मच्छर हो गये हैं डी. डी. प्रूफ एवं बुखार दवाई प्रूफ** - बरसात में कई जगह कीचड आदि के कारण गंदगी बढ जाने से छोटे-मोटे दवाखानों में रोगियों की संख्या बढ गयी है। जिसमें बुखार की बीमारी सबसे ज्यादा हो रही है। अनेकों प्रकार की लेबोरेटरी टेस्ट की सुविधाओं के बावजूद भी बुखार का सच्चा निदान नहीं हो पा रहा है। परिणाम स्वरूप टाइफाइड, पीलिया एवं मलेरिया इन तीन-तीन दवाओं का आसरा लेने की जानकारी मिली है। मच्छरों का उपद्रव बढते ही बुखार की हवा चलने लगती है। मच्छर तो डी. डी. टी प्रूफ बन ही चुके थे अब बुखार या मलेरिया भी दवाई प्रूफ बनता जा रहा है।

❋ **कोई आश्चर्य नहीं** - जिस देश को अपनी भाषा पर गर्व नहीं है, जिस राष्ट्र में शिक्षा का अर्थ रोटी हो और जिस देश का भविष्य विदेशी संस्कृति के गर्भ में ही पल रहा हो, उस देश का युवा यदि पलायनवादी हो तो, कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये।

❋ **दोषपूर्ण शिक्षा निति** - आज दोषपूर्ण शिक्षा नीति के कारण अभिजात्य वर्ग के अतिरिक्त समाज अभिशप्त है। इस क्रूर शिक्षा पद्धति का सर्वाधिक विपरित प्रभाव बच्चों के जीवन पर हो रहा है। शिक्षा नीति में परिवर्तन की बातें बार-बार उठती है, लेकिन कोई निर्णय नहीं होता है। जिस शिक्षा नीति का नविनीकरण संविधान निर्माण के समय होना चाहिये था, उसका परिवर्तन आज लगभग पेंतालीस वर्ष बाद भी नहीं हो पा रहा है।

❋ **परमाणु अस्त्र और दुनियाँ** - इन दिनों दुनियाँ में संग्रहित परमाणु अस्त्रों से दो सौ चालीस अरब से अधिक लोग मारे जा सकते हैं। अपंग होने वालों की संख्या इससे अधिक ही होगी। दुनियाँ की आबादी लगभग ६ अरब होगी।

❋ **हम कौन थे ? क्या हो गए ?** - सन १९४७ में विश्वयुद्ध के पश्चात् सभी मित्र राष्ट्र भारत के कर्जदार थे। हमारे कोष के अरबों रूपये देश और विदेश में जमा थे और भारत विश्व में औद्योगिक विकास में पांचवे क्रमांक पर था, आज वह लुढक कर पन्द्रहवें स्थान पर आ गया है। आज तो हमारी स्थिति यह है कि कर्ज लेकर गिरवी रखा सोना छुडाने को उपलब्धि मानते हैं।

❋ **मौजूदा शिक्षा प्रणाली** - आज शिक्षा के नाम पर पूरी पीढी एक अंधे कुएं में धकेली जा रही है। जिसमें रटी हुयी बातों के अलावा और कोई बात नहीं गूंजती। इसका सीधा असर विभिन्न समस्याओं के रूप में दिखाई देता है जैसे बेरोजगारी, बेकारी, अनुशासनहीनता, असामाजिकता आदि। जब तक शिक्षा क्षेत्र को मुनाफाखोरी का अड्डा बनने से रोका नहीं जाता तब तक स्थिती में संतोषजनक सुधार होने की उम्मींद कम है।

❋ **बार्सिलोना में ऑलिम्पिक और भारत** - दक्षिण अमेरीका का पेरु जैसा छोटा देश भी आठ स्वर्णपदक प्राप्त कर लेवे एवं सूरीनाम जैसे छोटे से देश का नाम भी भारत के आगे आवे यह देखकर सिर शर्म से झुक जाता है, लेकिन जहाँ हमारे नेता एवं व्यवस्थापक कोरे स्वार्थ एवं केवल भ्रष्टाचार में ही आकंठ डूबे हो व अमन-चमन में ही रत हों वहाँ यह स्थिती कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है।

- प्रवासी

रुकिये! पढ़िये!! सोचिये!!!

- एक भ्रांति यह है कि पृथ्वी पर मनुष्य श्रेष्ठतम है, इसलिये हम इस पृथ्वी के साथ कुछ भी कर सकते हैं। दुनिया के सभी प्रशासन कहते हैं कि हमारा लक्ष्य हैं किसी भी कीमत पर विकास। क्या वे जानते हैं कि वह कीमत क्या है? वह कीमत है सर्वनाश। क्या वे सर्वनाश करके विकास करना चाहते हैं।
- इस सदी के अंत तक पशु-पक्षी, जीव-जंतु, बैक्टीरिया, बाइरस की ३० लाख जातियाँ विनष्ट हो जायेंगी, क्यों कि हमें हाइवे बनाने हैं, शहरों का विस्तार करना है।
- संयुक्त राष्ट्र शिशु कोष (युनिसेफ) द्वारा १९९१ में दुनियाँ में बच्चों की स्थिती पर जारी रपट में इस वात पर दुःख व्यक्त किया गया है कि संसार में एक अरब लोगों को अभी भी पर्याप्त भोजन, साफ पानी, प्राथमिक चिकित्सा सुविधायें और बुनियादी शिक्षा भी सुलभ नहीं है।
- दुनिया के किसी भी गरीब से गरीब और संस्कृति विहीन देश के लोग किसी पराई भाषा को सीखने में इतना समय बरबाद नहीं करते, जितना हम करते हैं। और दुनिया का कोई भी देश किसी पराई, खासकर अपने विदेशी शासक की भाषा का इतना सम्मान नहीं करता जितना हम करते हैं।
- राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान की एक रपट के अनुसार देश की नदियों का ७० प्रतिशत पानी दुषित है।
- केन्द्रीय जल प्रदूषण नियंत्रण द्वारा तैयार की गयी रिपोर्ट के अनुसार गंगा नदी कानपुर और इलाहाबाद के वाद इतनी गंदला जाती है कि इसके पावन जल का हुलिया ही बिगड़ जाता है।
- प्रकृति ने हवा-पानी वगैरह की सफाई के जो तरीके बना रखे हैं वे ही सुरक्षित हैं उसमें तमाम रसायन डाल देने से और गड़बडियाँ हो जाती है।
- हिन्दुस्तान लीवर ने वर्ष १९९० में अपने टूथपेस्ट 'क्लोजअप' के विज्ञापन के लिये दूरदर्शन को ३ करोड ५४ लाख रूपयों का भुगतान किया। कोलगेट-पामोलिव ने कोलगेट के विज्ञापन के लिये २ करोड ३० लाख दूरदर्शन को चुकाये। वस्तुओं की कीमतों को बढाने में क्या ये विज्ञापन भी जिम्मेदार नहीं है?
- भारतीय चिकित्सा अनुसंधान ने अपने सर्वेक्षण में यह पाया है कि देश के चार महानगरों यानि दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में करीब बीस प्रतिशत लोग शराब के गुलाम हो चले हैं।
- थाईलेन्ड से दक्षिण अमेरिका तक मच्छर जनित मलेरिया इतना फैल गया है कि उसे काबु में लेना मुश्किल हो गया है। थाई-कंवोदिया की सरहद पर तो अभी पांच वर्ष पहले विकसीत की गयी दवायें अनुपयोगी सावित हो रही है। डॉ. ब्रिजेट ओगील्वी नामक चिकित्सक के

अनुसार उपलब्ध दवाओं द्वारा पूर्व देशों में मलेरिया पर काबु पाना मुश्किल है।

- न्यूट्रीशनीस्ट वैज्ञानिकों के अभिमत के अनुसार कुदरती खुराक का ८५ प्रतिशत भाग पाचन होकर शरीर में मिश्रीत हो जाता है जब कि बनावटी सिन्थेटिक फूड का अधिक से अधिक २० प्रतिशत भाग ही शरीर मे पाचन होकर बाकी बाहर फेकने में शरीर के अवयवों को ज्यादा श्रम करना पडता है।

- एस. एन. डी. डी. रीसर्च युनिट के विभूति पटेल के अनुसार विज्ञापन कम्पनियों के बुद्धिशाली (हकीकत में कुटिल) मेनेजरों द्वारा आक्रमक विज्ञापन प्रचार के कारण सामान्य जनता पौष्टिक, सस्ते और स्वादिष्ट खुराक से दूर होती जा रही है। और रोगोत्पादक कचरे जैसे आहार को अपनाती जा रही है।

- नशेकी जिस खतरनाक प्रवृत्ति ने इन दिनों युवाओं को अपनी गिरफ्त में ले रखा है, वह इस सदी की सबसे बड़ी विडम्बना है।

- सिगरेट, तम्बाकू और शराब को खतरनाक नशा मानकर धिक्कारनेवाला समाज आज स्मैंक, हेरोइन और कोकीन जैसी विकट नशीली चीजों के तेजी से बढ़ते चलन को अपनी नियति मानकर स्वीकार करने को मजबूद है। हमारे देश में अभी तक कोई ऐसा प्रतिरोध इन चीजों के खिलाफ खड़ा नहीं किया जा सका है जो युवाओं में इनका चलन बढ़ाने के लिये जिम्मेदार लोगों को मुंह की खाने पर विवश कर सके।

- आजादी के बाद शिक्षा को सर्वमुखी विकास का वाहक बनाने की दिशा में सैडलर आयोग, राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग और कोठारी आयोग जैसे न जाने कितने ऐसे प्रयास हुए लेकिन राजनैतिक संकल्पहीनता के चलते वे निष्प्रभावी रहे।

- बहुराष्ट्रीय कंपनी शेल केमिकल्स के 'एल्ड्रिन' नामक कीटनाशक को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने असुरक्षित और बेहद जहरीला करार दिया था। इसके आधार पर विश्व के अधिकांश देशों ने इस कीटनाशक के इस्तेमाल पर पूरी तरह पाबंदी लगा दी तो इस कंपनी ने १९ जुलाई १९९१ को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर घोषणा की कि वह ३१ दिसंबर १९९१ से आल्ड्रक्स (भारत में ब्रांड नाम 'एल्ड्रिन') कीटनाशक की विक्री बंद कर देगी। इस बीच अपनी सरकार ने एल्ड्रिन व कुछ अन्य कीटनाशकों की कृषि में उपयोगिता पर विचार करने के लिए डॉ. एस.एन. बनर्जी की अध्यक्षता में विशेषज्ञों की एक समिति बनाई। इस समिति ने अपनी रपट में कहा कि भारत की फसलों पर 'एल्ड्रिन' कीटनाशक का इस्तेमाल जारी रखना हानिकारक नहीं है। करोड़ों देशवासियों के स्वास्थ्य से खिलवाड़ के पीछे कारण यह था कि यह विशेषज्ञ कमेटी एक बड़ी रसायन उत्पादक कंपनी को लाभ पहुँचाना चाहती थी, जिसके पास एल्ड्रिन का अगले दो साल तक का पर्याप्त स्टाक था। यही नही एल्ड्रिन की विक्री को बढ़ावा देने की होड़ में इन 'विशेषज्ञों' ने इसे दुसरे कीटनाशकों की तुलना में बढ़िया कीटनाशक भी बताया। ऐसे विशेषज्ञों के सहारे हमारा कृषि-तंत्र कृषि या किसानों का कैसा कल्याण करेगा - यह सहज ही समझा जा सकता है।

- स्वतंत्रता के बाद आज तक सरकार की निष्क्रियता के कारण ब्रिटिश शिक्षाविद टामस मैकाले की शिक्षा पद्धति, जो कि हमारे देश की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना को कुंद करने का हथियार मात्र थी, कायम रही।

- मुसाफिर

स्वास्थ्य चर्चा

कुछ उपयोगी घरेलू नुस्खे

जुकाम होने पर :

- एक चाय वाली चम्मच पीसी हुई सौंठ खाकर ऊपर से गर्म दूध पी ले। जुकाम के लिये यह बहुत लाभकारी दवा है।
- ६ लौंग १ गिलास पानी में उबालें। उबाल कर पानी जब आधा रह जाये तो उतार कर छान ले, इसकी भाप नाकों में लें तथा कुछ ठण्डा होने पर पी लें।
- ३ ग्राम काली मिर्च को पीस लें। उसे २५ ग्राम गुड़ और ५० ग्राम दही में मिलायें। सुबह एवम् शाम को सेवन करें। बिगड़ा हुआ जुकाम तक इससे ठीक हो जायेगा।
- एक कच्चे नीम्बू का रस पानी में मिलाकर दिन में पांच-छः बार पीयें।
- एक चम्मच आंवले का चूर्ण पानी के साथ दिन में ३-४ बार लें।
- एक चम्मच अजवाइन को हाथ में मसलकर दिन में बार-बार सूंघते रहें।
- शुद्ध हींग २-३ बार दिन में सूंघने से लाभ होता है।
- देशी कपूर और चीनी बराबर मात्रा में लेकर बारीक पीस लें। फिर पानी के साथ ६-६ ग्राम की गोलियां बना लें। इन गोलियां को काली मिर्च के चूर्ण में रखें। २-२ घण्टे के अन्तर से गोली चूसें। तीन दिन में जुकाम ठीक हो जाएगा।
- चार-पांच काली मिर्च, दस बताशे एक कप पानी में पकाकर सुबह-शाम पीयें।

पेट दर्द होने पर :

- पेट-दर्द होने पर हींग को पानी में घोलकर पेट पर लगाइये लाभ होगा।
- पेट-दर्द में अमरूद की कोमल पत्तिया पीसकर पानी में मिलाकर पीने से आराम होता है।
- पेट-दर्द में धनिये का शर्बत हितकारी है।
- पौदीना, जीरा, हींग, काली मिर्च, नमक सबको पीसकर पानी में मिलाकर पीने से पेट-दर्द में आराम होता है।
- पिसी हुई सौंठ और सेंधा नमक एक गिलास पानी में गर्म करके पीने से पेट दर्द, कब्ज, अपच ठीक हो जाती है।
- पेट में दर्द भूखे होने पर हो तो छाश पीने से यह दर्द ठीक हो जाता है।
- अनार के दानों पर काली मिर्च और नमक डाल कर चूसें इससे पेट-दर्द बन्द हो जाता है।

मसूढ़ों का दर्द :

- गरम पानी में फिटकरी डालकर उसका कुल्ला करने से मसूढ़ों की तकलीफ में आराम पहुँचता है।
- अमरूद के पत्तों को उबालकर काढ़ा बना लें। उससे कुल्ला करें। मसूढ़ों के दर्द के लिये यह बड़ा प्रभावकारी है।

- गेंदे के पत्तों को मसल कर मसूढ़ों पर रखें। दाँतों और मसूड़ों की तकलीफ में तुरन्त आराम पहुँचता है।
- मसूढ़े फूलना, दर्द, टीस आदि होने पर भुना हुआ जीरा और सेंधा नमक समान भाग में पीस कर छान कर मसूढ़ों पर रगड़े और लार टपका दें।
- अजवाइन को तवे पर जलाकर पीसकर मन्जन करने से मसूढ़ों के रोग मिटते हैं, दाँत साफ होते है।
- मसूढ़े फूल जायें तो तीन ग्राम सौंठ दिन में एक बार गरम पानी से फंकी लें, इससे दांत का दर्द भी ठीक होगा।
- शलगम को कच्ची चबा-चबाकर खाने से मसूढ़ों और दांतो के रोग ठीक हो जाते हैं तथा दांत साफ रहते हैं।

चक्कर आने पर :

- २५ ग्राम मुनक्का घी में भूनकर सेंघा नमक डालकर खाने से चक्कर आना बन्द हो जाता है।
- तुलसी के पत्तों का रस चीनी में मिलाकर पीने से चक्कर नहीं आते।
- पेट की गैस से चक्कर आते हों तो गर्म पानी में नीम्बू निचोडकर पीने से लाभ होता है। सामग्री - १ कप पानी, २ टी स्पुन नीम्बू का जूस।
- ८-१० काली मिर्च शुद्ध घी में तले। घी नितार कर, इसमें गेहूँ का आटा सेक कर गुड़ या चीनी डालकर सुबह, शाम भोजन से पहले खायें। चक्कर आना बन्द हो जायेगा।
- सिर में चक्कर आने पर सूखा धनिया ४ टी स्पून एक गिलास पानी में उबाल कर छानकर मिश्री मिलाकर पीयें।

कांटा चुभने पर :

- कांटा चुभने पर हींग का घोल उस स्थान पर भर देने से कुछ समय बाद वह स्वयं बाहर आ जाता है।
- कांटा चुभ जाये, बाहर न निकले तो जहां काटा चुभा हो, उसे सूई से कुरेद कर गुड़ और अजवाईन गरम करके बांधने से कांटा बाहर निकल जाता है।

मुंह से दुर्गन्ध आने पर :

- तुलसी का पत्ता सब तरह की दुर्गन्ध का नाश करने वाला है।
- खाना खाने के बाद तुलसी के पत्ते चबाने से मुंह से बास नहीं आती।
- मुंह में बदबू आती हो तो जीरे को भून कर खाने से दूर हो जाती है।
- प्रतिदिन लौंग खाने से मुंह की दुर्गन्ध मिटती है।
- मुंह में दुर्गन्ध, मुंह में पानी आता हो तो अनार के पिसे हुए छिलके आधी छोटी चम्मच सुबह-शाम पानी से ले। दुर्गन्ध गायब हो जायेगी।

● मुनिश्री रत्नसेनविजयजी

चरित्रवान् बनो

वैज्ञानिक साधनों के माध्यम से व्यक्ति
दिन-प्रतिदिन ऊँचा उठता जा रहा है ।
उसकी बिल्डिंगें ऊँची !
उसके फर्नीचर ऊँचे !!
उसके उड़ने के साधन ऊँचे !!!
फिर भी आश्चर्य है कि
मानवी का मन
मानवी का चरित्र
कितना नीचे गिर रहा है !
भौतिक साधन
ऊँचे से ऊँचे चाहिये,
ऐसी मान्यता वाला मानव भी
नीच मन को
स्वीकार करने के लिए
तैयार हो गया है
यह कितने आश्चर्य की बात है ?
मन की ऊँचाई/विशालता की कीमत
अभी तक समझ नहीं पाया है ।

बुद्धि का सदुपयोग

जिसने तुझ पर
थोड़ा भी उपकार किया है,
उसे कभी भी मत भूलना ।
अरे !
रोटी का टुकड़ा खानेवाले
उस कुत्ते में भी अपने स्वामी के प्रति
कितनी वफादारी होती है ?
वह तो पशु है, फिर भी
अपने उपकारी को नहीं भूलता है ।
जब कि तू तो मानव है ।
तेरे पास बुद्धि का बल है ।
तू तो अपने उपकारी की
ऋण मुक्ति के लिए
उसका भी भला कर सकता है ।
भला न हो सके तो भी कोई
हर्ज नहीं, परन्तु अपने उपकारी का
बुरा तो कभी मत करना ।

महावीर-वाणी

हठधर्मिता : उलझन का मूल

जीवन की समस्त उलझनों का मूल कारण है मनुष्य की हठधर्मिता या उसका दुराग्रह । यह उलझन सामाजिक या राष्ट्रीय किसी भी स्तर की क्यों न हो; यदि उसके मूल में हठ या दुराग्रह है; तो उसका सुलझना मुश्किल है । मनुष्य जब किसी बात को अपनी प्रतिष्ठा या इज्ज़त का प्रश्न बन लेता है; तब उसे अपनी हर गलत बात सही लगती है । इसका परिणाम यह होता है कि उसके कारण अनेक लोगों का जीवन मुसीबत में फस जाता है और उन्हें कष्ट सहन करना पड़ता है । हठाग्रह बुरा ही है । जो मनुष्य इससे स्वयं को मुक्त करता है वह दूसरों को भी सुखी कर सकता है ।

– मधुकर

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (१३)

- श्री प्रदीप एम. जैन

प्रस्तुत स्पर्धा १३ का उत्तर अलग कागज पर लिखकर पूर्ण नाम पता एवं शाश्वत धर्म सदस्यता क्रमांक के साथ कार्यालय के पते पर ३० अक्टोबर तक पहुंचाएं।

सफल प्रतियोगियों का चयन लकी ड्रॉ द्वारा किया जाकर प्रथम विजेता को एक सौ रूपये, द्वितीय को साठ रूपये एवं तृतीय को चालीस रूपये का नगद पुरस्कार दिया जाएगा।

सभी सफल प्रतियोगियों के नाम स्पर्धा १३ के उत्तर के साथ नवम्बर अंक में प्रकाशित किए जाऐंगे। - **सम्पादक**

पुरस्कार सौजन्य - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा जोगेश्वरीं (बम्बई)

१) जब मिथ्यात्व समाप्त होता है तब यह प्रकट होता है ☐◯☐☐

२) बीस तीर्थकरों की निर्वाण भूमि ◯☐☐☐☐☐☐

३) मधु लिप्त तलवार की तरह होता है यह कर्म ◯☐☐☐

४) दस धर्म मे से एक उत्तम ◯☐

५) जब यह उत्पन्न होता है तब संसार असार लगता है ☐☐◯☐
(आधे शब्द के लिए भी एक खाना दिया गया है।)

६) ◯☐ पालक संघ ब्रह्मचारी, एकलहारी, समकितधारी, भूमिसंथारी आदि का पालन करता है।

७) मेहसाणा के पास 'भटेवा' पार्श्वनाथजी के तीर्थ का नाम ◯☐☐☐

८) ☐☐◯ समिति मे मुनि मल विसर्जन के लिए प्रासुक भूमि एवं हिंसा और क्लेश रहित भूमि का चयन करता है।

९) नेमिनाथजी का जन्म नक्षत्र ☐◯

१०) एक बहिरंग तप ☐◯☐◯

११) धार के निकट पेथडशाह के काल में संग्राम सोनी द्वारा निर्मित श्री सुपार्श्वनाथजी का मंदिर ◯☐☐☐☐ में है।

१२) जैसलमेर तीर्थ में ☐☐☐◯ पार्श्वनाथजी का मंदिर है।

१३) ☐◯☐☐☐☐☐ कर्म के क्षय होने पर, अनंतदर्शन प्रकट होता है।

१४) सर्वथा ☐◯☐☐☐ विरमणव्रत, अर्थात चोरी न करना होता है।

१५) पाँच ज्ञान में से एक ☐☐☐☐☐◯☐

अब गोलाकार के शब्दों को निकालकर व्यवस्थित रूप से जमाये, आप जो वाक्य पायेंगे वह तत्वार्थ सुत्र का एक वाक्य होगा।

गोल वर्गों में प्राप्त अक्षर ◯◯◯◯◯◯◯◯◯◯◯◯◯◯◯◯

वाक्य एवं उत्तर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

प्रतियोगी का नाम पता एवं सदस्य संख्या

समाचार दर्शन

आचार्य श्री मधुकरजी की निश्रा में सुरत में विविध धर्माराधनायें, नवकार आराधना सम्पन्न पर्युषण पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया

भव्यातिभव्य उद्यापन महोत्सव

सुरत - साहित्य मनीषी जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' मुनि श्री नित्यानंदविजयजी मुनि श्री हेमरत्नविजयजी, मुनि श्री विश्वरत्नविजयजी, मुनि श्री सिद्धरत्नविजयजी, मुनि श्री प्रशान्तरत्नविजयजी तथा साध्वीजी श्री भुवनप्रभाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में नवकार आराधना के अंतर्गत विविध राज्यों से पधारे ७०० आराधकों ने भाग लेकर सवा करोड़ जाप किये। समापन अवसर दि. १३/८/९२ को भव्य शोभायात्रा आयोजित की गयी।

साध्वीजी श्री अमितदृष्टाश्रीजी के ३१ उपवास की महान तपस्या का पारणा उनके संसारी भाई श्री हिम्मतलाल चिमनलालजी वोहेरा के यहाँ हुआ।

सुरत में पूज्य साहित्यमनीषी - राष्ट्रसंताचार्यदेव श्रीमद्विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. 'मधुकर' मुनि श्री नित्यानंदविजयजी, मुनि श्री हेमरत्नविजयजी मुनि श्री विश्वरत्नविजयजी, मुनि श्री सिद्धरत्नविजयजी एवं मुनि श्री प्रशान्तरत्नविजयजी म. तथा साध्वी श्री भुवनप्रभाश्रीजी आदि की परम तारक निश्रा में बड़े ही भावोल्लास पूर्वक पर्वाधिराज की आराधना सानंद सम्पन्न हुई।

प्रथम के तीन दिन तक पूज्य गुरूदेवश्री ने श्रीमद् क्षमाकल्याणजी गणि द्वारा रचित अष्टान्हिका व्याख्यान पर सरल एवं सचोट प्रवचन दिये।

प्रवचन में श्रावकों को पर्वाधिराज के इन दिनों में क्या करना चाहिये और क्या वर्जित है? क्या कर्तव्य है और क्या अकरणीय है, अवश्य करणीय पाँच कर्तव्य एवं वार्षिक ग्यारह कर्तव्य का विशद विवेचन किया।

श्रद्धालु गुरु भक्त वर्ग ने विशाल पैमाने पर ज्ञानगंगा प्रवचन धारा का अनुपम लाभ लिया।

श्रावणकृष्णा-चतुर्दशी से कल्पसूत्र बालावबोध (पूज्य विश्ववन्द्य - प्रातः स्मरणीय प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. द्वारा सम्पादित) से प्रवचन दिये।

महावीर स्वामी जन्मवांचन के दिन का कार्यक्रम सचमुच बड़ा ही शानदार रहा, सपने व पारणे की बोली के चढ़ावे समग्र सुरत में रिकार्ड रूप रहे। महावीर स्वामी जन्म वांचन के दिन स्पेश्यल रूप से बनाया हुआ राज-राजेन्द्र व्याख्यान मंडप भी छोटा प्रतीत होने लगा।

पर्वाराधना हेतू सुरत के निकटवर्ती कतारगाम-वेडदरवाजा-अडाजण पाटिया. रांदेर रोड़-लालबंगला नानपुरा-कैलासनगर-आदि उपनगरों से प्रतिदिन हजारों की तादाद में गुरू भक्तवर्ग यथासमय राजराजेन्द्रसूरि ज्ञानमन्दिर पहुँच जाता था। संवत्सरी क्षमापर्व यानि पर्वाधिराज पर्युषण के अंतिम दिन सुबह ८.३० बजे से बारसासूत्र का पूज्य गुरूदेव श्री ने वांचन प्रारंभ किया, इस सूत्रवांचन के कार्यक्रम में विशाल जनमेदनी उपस्थित रही।

पर्वाधिराज के आठों ही दिन व्याख्यान में गुरु भगवंत के समक्ष गहूँली (स्वस्तिक) करने की एवं गुरुदेव प्रातःस्मरणीय-जगत्पूज्य-परम योगीन्द्राचार्य प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वर म. की आरती के चढ़ावे होते थे, जिसमें गुरुभक्तों ने अपार द्रव्य का सद्व्यय कर स्वययं की गुरुभक्ति के दर्शन कराये।

जीवदया की टीप

संवत्सरी महापर्व समस्त विश्व के प्राणिमात्र के साथ मैत्री भाव रखने का संदेश देता है। उसी भावना की पुष्टि हेतू पूज्य गुरूदेवश्री ने प्रतिक्रमण करते समय 'अहिंसा परमो धर्म' का तात्पर्य समझाया और कहा - **"मैत्री भाव बड़ा बतलाया, जिसने उसको यहाँ अपनाया,**

उसका जीवन सफल कहाया, उसने ही सब सुख को पाया;

बात यही सिखलाने आतें हैं यह पर्व महान, पधारे पर्व पर्युषण राज.

पूज्य गुरूदेव श्री की वाणी से प्रभावित होकर प्रतिक्रमण में ही गुरुभक्तों ने जीवदया हेतू करीब १ लाख रूपये की राशि एकत्रित कर ली।

प्रतिदिन शाम के प्रतिक्रमण में सामायिक सूत्र एवं प्रतिक्रमण सूत्र बोलने की बोलियाँ लगती थी। प्रतिक्रमण पश्चात् प्रतिदिन गुरुदेव श्री की आरती की भी बोलीयाँ लगती थी। जिसमें गुरुभक्तों ने लक्ष्मी का सद् व्यय कर धन्यता का अनुभव किया।

दर्शनशुद्धि के अनुष्ठान के साथ-साथ ज्ञानभक्ति का भी आयोजन सुन्दर रूप से रहा, कल्पसूत्र-वारसासूत्र पूज्य गुरु भगवंत को अर्पण कर वासक्षेप पूजा, धूपपूजा, दीपकपूजा, ज्ञान की आरती द्वारा ज्ञान भक्ति की। कल्पसूत्र को सुवर्ण एवं रौप्य के पुष्प से बधाया गया।

पर्युषण-पर्व भव-भव के संचित कर्ममल को हटाने का पर्व है। यह लौकिक नहीं पर, अलौकिक - लोकोत्तर पर्व है। इस पर्व की आराधना करते समय छोटे-से छोटा जैन भी यथाशक्ति तपोधर्म की आराधना करता है। इस वर्ष सुरत शहर में अद्भूत तपश्चर्याएिं हुई। ४ मासक्षमण - ३३ सिद्धितप, १६ उपवास - ९, ११ उपवास - ३, १० उपवास - १५, ८ उपवास यानि अट्ठाई - ६८ तथा पांच उपवास - चार उपवास - बेले - तेले यानि छट्ठ - अट्ठम की तपस्याएँ हुई।

तपस्वीयों के पारणे

अट्ठम एवं उससे ज्यादा तपस्या करनेवाले तपस्वीयों कें पारणे करवाने का लाभ दुधवा निवासी वीरचंद लक्ष्मीचन्द वोरा परिवार ने लिया। तपस्वीयों की तपधर्म अनुमोदना हेतू 'राज राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञानमन्दिर में एक विशाल समारोह का आयोजन कर श्री सौधर्मबृहतपागच्छीय समस्त जैन त्रिस्तुतिक संघ ने सिद्धितप-मासक्षमण तप के तपस्वीयों को सोने की अंगूठी व अट्ठाई तथा अट्ठाई से उपर की तपस्या वाले तपस्वीयों को चांदी की गिलास एवं अट्ठम से अट्ठाई तक के तपस्वीयों को स्टील के टीफिन देकर सन्मानीत किया, अन्य महानुभावों ने भी तपस्वीयों को विविध बर्तन, दर्शन-ज्ञान-चारित्र के उपकरण देकर भक्ति की।

तपोधर्म की सेवना में मुनिप्रवर श्री विश्वरत्नविजयजी म. ने ९ उपवास, साध्वी श्री चन्द्रयशाश्रीजी साध्वी श्री दिव्यदृष्टाश्रीजी साध्वी श्री अनुपमदृष्टाश्रीजी ने सिद्धितप, साध्वी श्री अमितदृष्टाश्रीजी ने मासक्षमण, एवं साध्वीश्री चरित्रकलाश्रीजी ने १६ उपवास की उग्र तपश्चयऐं की।

विविध तपश्चर्या की अनुमोदना निमित्त श्री सौधर्मवृहत्तपागच्छीय समस्त त्रिस्तुतिक जैन संघ ने विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया। इस शोभायात्रा ने त्रिस्तुतिक जैन संघ सुरत शहर की शोभा में चार चाँद लगाये।

इस शोभायात्रा में सर्व प्रथम नगरपति द्वारा वर्षीदान देते हुए सवारी, पश्चात क्रमशः प्रसिद्ध टपाली बैंड सिद्धितप-मासक्षमण तप के तपस्वीयों की ३१ वगी, परमात्मा एवं गुरुभक्ति की धुन वजाते हुए पोलीस बैन्ड, जहाज धर्म की प्रभावना करता हुआ निशान डंका वजाते आगे बढ़ रहा था, हेलिकॉप्टर इन्द्रध्वज को वहन करता हुआ, पांच मेटाडोर गाडी, पॉच झोपडीयाँवाली मनोहर रचनायें, सुरत का प्रसिद्ध ए.रोडफ बैन्ड पूज्य गुरु भगवंतों एवं विशाल गुरु भक्तवर्ग पश्चात् साध्वीजी और श्राविका वर्ग।

यह विशाल शोभायात्रा राजराजेन्द्रसूरि जैन ज्ञानमंदिर हनुमान चार रास्ते से शुरू होकर कोटस-फिल रोड-एयर इण्डिया-नवापुरा-पारसीशेरी-पिरछडी रोड़-वाणियाशेरी-भवानीवड़-भाजीवाली पोल भागल-लालगेट मेनरोड़-भागातलाव होते हुंए पुनः ज्ञानमंदिर पहुँची।

ज्ञानमंदिर पहुँचते ही संघ के द्वारा समस्त त्रिस्तुतिक जैन संघ सुरत का मैत्री भोजन का कार्यक्रम हुआ।

ऐसे पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना सानंद बड़े ही उमंग-उल्लासपूर्वक संपन्न हुई।

पूज्य आचार्यदेव श्री का ५६ वें वर्ष के उपलक्ष में ५६ छोड के उद्यापन निमित्त जिनेन्द्र भक्ति स्वरुप अष्टान्हिका महोत्सव १०/९/९२ से १९/९/९२ तक आयोजित किया गया। महोत्सव के अंतर्गत विविध ऐतिहासिक झांकिया रखी गयी थी। भक्तामर महापूजन एवं सिद्धचक्र महापूजन भी रखा गया था।

राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणियों के समाचार

पाटण - साध्वीजी श्री प्रेमलताश्रीजी, पूर्णकिरणाश्रीजी, कल्परेखाश्रीजी आदि ठाणा ३ की निश्रा में राजेन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर में पर्युषण पर्व आराधना हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुयी। भाद्रव सुदि ७ को त्रिस्तुतिक जैन संघ का स्वामीवात्सल्य रखा गया।

धानेरा - साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी म. की सुशिष्या साध्वीजी श्री पुण्यंदर्शनाश्रीजी की निश्रा में पर्युषण पर्व में कल्पसूत्र, व्याख्यान, धन्यकुमार चरित्र आदि का वाचन हुआ।

धार - साध्वीजी श्री शशीकलाश्रीजी की शिष्याएँ विदुषी साध्वी दर्शितकलाश्रीजी, दर्शनकलाश्रीजी एवं साध्वी जीवनकलाश्रीजी की निश्रा में गौतमस्वामी बेला, अखण्डबेला, अखण्ड आयंबिल, पंचरंगी तप, दीपक एकासणा, नमस्कार महामंत्र आराधना, सिद्धितप आदि आराधना सम्पन्न हुई। वैराग्यशतक एवं मलयसुन्दरी चरित्र व्याख्यान में चल रहा है। साध्वीजी दर्शनकलाश्रीजी के वीशस्थातक तप एवं सिद्धितप अनुमोदनार्थ सकल श्रीसंघ ने पंचान्हिका महोत्सव का

आयोजन किया।

उज्जैन - मुनिराज श्री पद्मरत्नविजयजी आदि ठाणा की सद् प्रेरणा से श्री मिश्रीलालजी चौरड़िया की पुत्र वधु सुशीलाबाई ने ३१ उपवास की तपस्या सानंद पूर्ण की। इस पुनित अवसर पर चल समारोह (वरघोड़ा) व साधार्मिक भक्ति का कार्यक्रम रखा गया।

राणापुर - पू. साध्वीजी श्री अनंतगुणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री अभयकुमार की धर्मपत्नि श्रीमति कोकिलाभंसाली ने मासक्षमण की तपस्या सानन्द पूर्ण की।

भीनमाल - पू. साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में चन्दनबाला के अट्ठम तप का आयोजन विविध प्रकार के प्रसंग के अनुरूप दृष्य बनाकर समारोहपूर्वक किया गया। समारोह के एक दिन पूर्व चलसमारोह का आयोजन किया गया तथा श्री संघ की ओर से तपस्वियों का बहुमान किया गया एवं पारणा करवाया गया।

नौ दिवसीय श्री नमस्कार महामंत्र की आराधना चल समारोह के साथ सानन्द सम्पन्न हुई। इसी दिन श्री घीसुलालजी शीवराजजी द्वारा ४१ उपवास की तपस्या का पारणा किया गया। तपस्या के इस दौर में दो मास क्षमण की तपस्या भी हुई।

पू. साध्वीश्रीजी की निश्रा में चातुर्मास काल में आयम्बिलतप एक वर्ण चांवल के एकासने, एक वर्ण गेहू के एकासने, अखण्ड ४ घण्टे का जाप, पंचरंगीतप, एक वर्ण चने के एकासने, चातुर्मास काल में अखण्ड सांकली अट्ठम तप की आराधना आदि विविध तपश्चर्याएं सानन्द सम्पन्न हुई एवं चल रही है। चातुर्मास काल में प्रति रविवार को विविध ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।

थराद - मुनिराज श्री मुक्तिचंद्रविजयजी, वीररत्नविजयजी, अपूर्वरत्नविजयजी, नयरत्नविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में प्रतिदिन भक्तामर स्तोत्र व गुरुगुण इक्कीसा का पाठ किया जाता है। अखंड अट्ठम, अखंड तीन आयंबिल, पंचरंगीतप, खीर एकासणे, नवकार आराधना, दीपक एकासणे, उणोदरी एकासणे, सीमंधर स्वामी के अट्ठम तप आदि सम्पन्न हुए। व्याख्यान में अध्यात्मकल्पद्रुम एवं मलयसुंदरी चरित्र चल रहा है। समोवसरण व सिद्धितप १६ भाई-बहनों ने किये। मुनिश्री नयनरत्नविजयजी ने अट्ठाई की तपश्चर्या की। श्री संघ द्वारा पंचान्हिका महोत्सव के अंतर्गत भक्तामर पूजन पढाया गया। स्व. मुनिराज श्री हर्षविजयजी की पुण्यतिथि मनायी गयी।

सांथु - मुनिराज श्री केवलविजयजी, जयानन्दविजयजी, सम्यग्रत्नविजयजी, हरिश्चन्द्रविजयजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी श्री कोमललताश्रीजी आदि ठाणा का चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश आषाढ सुदि १० को हुआ। प्रतिदिन अभिधान राजेन्द्र कोष गिहिधम्म (गृहस्थ धर्म) शब्द पर एवं श्री चक्कवट्टीस्स कसा (श्री द्वादश चक्रवर्ती चरित्र) पर प्रवचन चल रहा है। नमस्कार महामंत्र आराधना श्रावण सुदि ८ से सुदि १५ तक सम्पन्न हुयी। समापन के दिन भक्तामर पूजन आयोजित किया गया था।

नेनावा - मुनिराज श्री जयकीर्तिविजयजी की निश्रा में नवकार आराधना, चन्दनबाला अट्ठम इत्यादि तपश्चर्यायें एवं पर्युषण पर्व आराधना उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुयी।

सियाणा - श्री महिलाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में उपदेशमाला व विक्रमादित्य चरित्र पर व्याख्यान चल रहे हैं। विविध आराधनाओं में नवकार आराधना, अट्ठम, खीर एकासणे आदि तपश्चर्याऐं हुयी।

श्री सिद्धाचल-गिरनार-शंखेश्वर नाकोड़ा तीर्थयात्रा

चरली - शा. वालचंद, चम्पालाल, भरत, विपुल, मुकेश, बेटा-पोता धन्नाजी बाल्दीया द्वारा ७ मई से १५ मई तक बामणवाडजी, आबुजी, तारंगाजी, सिद्धाचल, गिरनार, शंखेश्वर, भीलड़ीयाजी, स्वर्णगिरी, नाकोड़ाजी आदि तीर्थों की यात्रा का आयोजन किया गया। यात्री संघ के सिद्धाचल पहुंचने पर वहाँ विराजित पूज्य आचार्यदेव भगवंत श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में सिद्धाचल नवाणुं प्रकारी पूजा पढ़ायी गयी एवं संघवी परिवार का बहुमान संघवी मांगीलालजी शेषमलजी ने तिलक श्रीफल द्वारा, संघवी शान्तिलालजी हरजीवालों ने साफा पहनाकर किया। नाकोड़ाजी में तीर्थ माल पर शा. पुखराजजी प्रतापजी, शा. मांगीलालजी, शेषमलजी, शा. सुखराजजी गुलाबचंदजी,. शा. तोलचंदजी जुहारमलजी, शा. कीर्तिलालजी लालचंदजी द्वारा अभिनन्दन किया गया। सन्मानपत्र शा कीर्तिलालजी लालचंदजी द्वारा अर्पित किया गया। यात्री संघ के चरली पहुंचने पर गांव वालों द्वारा भव्य सन्मानित किया गया।

महाविदेह तीर्थधाम में प्रतिष्ठा मगसर सुदि ६ को होगी

सुरत - कामरेज चार रास्ता हाइवे पर दादा भगवान ट्रस्ट द्वारा निर्माणाधीन विशाल तीर्थ श्री महाविदेह तीर्थधाम की प्रतिष्ठा मगसर सुदि ६ सोमवार ३० नवम्बर को राष्ट्रसन्त साहित्य मनीषी प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में सम्पन्न होगी। ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री प्रकाशभाई ने बताया कि यहाँ सिमंधरस्वामी की १४५ इंच की भव्य प्रतिमा विराजमान की जायेगी, जो कि मेहसाणा के बाद इतनी उंचाई की यह दूसरी मूर्ति होगी। तीर्थ परिसर में विशाल धर्मशाला व भोजनशाला भी यात्रियों के लिये बनायी गयी है। तीर्थ की विशेषता यह है कि यहाँ किसी भी दानदाताओं के नाम की तख्ती नहीं होती। प्रतिष्ठा अवसर पर देश-विदेश से दस हजार लोगों के आने की संभावना है। परिसर में शिवालय व कृष्णमंदिर की प्रतिष्ठा भी उसी दिन होगी।

ठाणे के मानपाड़ा में पर्युषण पर्व आराधना सम्पन्न

ठाणे (मानपाड़ा) - श्री शान्तिनाथ जैन मंदिर में पर्युषण पर्व आराधना हर्षोल्लासपूर्वक की गयी। आराधना करवाने हेतु श्री बसंतीलालजी जैन पुणे से पधारे थे। कल्पसूत्र शा. सोहनराजजी मीठालालजी परमार के यहाँ रात्रि-जागरण के लिये गया। महावीर स्वामीजी के पारणे का लाभ शा. पारसमलजी मीठालालजी ने लिया। नित्य प्रभावना, प्रभुजी की सुन्दर आंगी, व्याख्यान, धार्मिक विडियो केसेट्स, प्रतिक्रमण, संघपूजन आदि कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुए। भाद्रव सुदि ५ को प्रातः सामूहिक क्षमापना कार्यक्रम के अंतर्गत सभी तपस्वियों का बहुमान एवं पंडितजी का बहुमान मानपाड़ा श्री जैन संघ व संघवी कुन्दनमल भुताजी परिवार आहोर वालों की ओर से किया गया। द्वार खोलने का लाभ शा. अमृतलालजी मेहता ने लिया।

ठाणे से चैत्यपरिपाटी का आयोजन

ठाणे - आहोर निवासी संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार की ओर से श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन मंदिर-ठाणे से श्री शांतिनाथ जैन मंदिर-मानपाड़ा दर्शनार्थ चैत्यपरिपाटी का आयोजन रविवार दि. ६-९-९२ को किया गया। आचार्यदेव श्री राजयशसूरीश्वरजी की आज्ञानुवर्तीनी पू. तपस्विनी साध्वीजी श्री सुधांशुयशाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में आयोजित इस चैत्यपरिपाटी में ८०० भाई-बहनों ने भाग लिया। इस अवसर पर संघपूजन व अल्पाहार रखा गया था। बेंड सेवा श्री अभिनन्दन जैन मण्डल-थाने ने दी। श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक पूजा श्री पार्श्वराजस्थानी महिला मंडल ने पढायी।

खाचरोद :- पू. गुरूदेव श्री रूपेन्द्रमुनिजी प्रवर्तक श्री उमेश मुनिजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में पर्युषण पर्व आराधना विविध तपश्चर्याओं के साथ सम्पन्न हुई। इसी क्रम में शाश्वत धर्म कार्यालय सचिव महेन्द्र जैन की धर्मपत्नि श्रीमति मधुबाला जैन (बोल्या) ने ३३ उपवास की तपस्या की।

ठाणे के मानपाड़ा में प्रतिष्ठा ५ फरवरी को होगी

ठाणे के मानपाड़ा में निर्माणाधीन श्री शान्तिनाथ जैन मंदिर की प्रतिष्ठा हेतु श्री मानपाड़ा संघ व संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार एवं स्नेहीजन सुरत में विराजित राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी को विनंती करने हेतु २१ सितम्बर को गये। पूज्य आचार्य भगवंत ने मुनिमंडल सह बम्बई पधारने एवं माह सुदि १३ शुक्रवार दि. ५ फरवरी १९९३ को प्रतिष्ठोत्सव में निश्रा प्रदान करने की कृपा करते ही हर्ष व्याप्त हों गया।

पूज्य आचार्य भगवंत सुरज में उपधान तप की पुर्णाहुति के बाद कामरेज चार रास्ता पर निर्माणाधीन महाविदेह तीर्थधाम में मगसर सुदि ६ को प्रतिष्ठा सम्पन्न कराने के बाद सुदि ११ को दीक्षायें प्रदान करेंगे। दीक्षा कार्यक्रम के पश्चात् पूज्य श्री विहारकर पोषसुदि १ तक बम्बई पधारेंगे, जहाँ आपकी निश्रा में 'गुरू सप्तमी' वृहत्त् स्तर पर मनायी जायेगी।

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट

● २५१/- शा. घेवरचंदजी चम्पालालजी मुथा, कराड़ की ओर से श्रीमती कमलाबाई, श्रीमती प्रसन्नबाई एवं श्रीमती मीराबाई द्वारा सिद्धितप की तपश्चर्या निमित्ते।
● २५१/- शा. फुलचंदजी ताराचंदजी छाजेड़ कराड़ द्वारा पर्युषणपर्व में तपस्वीयों के पारणे करवाने निमित्ते। ● २५१/- शा. सोहनराजजी पारसमलजी तलावत कराड़ द्वारा श्रीमती रोहिणीबाई, श्रीमती भगवतीबाई एवं पारसमलजी की अट्ठाई एवं सिद्धितप की तपस्या निमित्ते। ● २५१/- शा. लालचंदजी वस्तीमलजी छाजेड़ कराड़ द्वारा श्रीमती ललिताबाई W/o. लालचंदजी के वर्षीतप पारणा निमित्ते।

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा से

● २०१/- धरू सरूपचंद देवचंदजी द्वारा।
● १५१/- दोशी मफतलाल त्रिभोवनदास द्वारा।
● १०१/- शांताबेन प्रेमचंद खीमेलवाला द्वारा। ● १०१/- देसाई महासुखलाल हालचंदभाई द्वारा। ● १०१/- वोहरा रसीकलाल मफतलाल वापीवाला द्वारा। ● १०१/- दोशी पुनमचंद लल्लुभाई द्वारा। ● १०१/- वोहरा परसोतम भाई उजम भाई द्वारा। ● १०१/- शा. बाबुलालजी चुन्नीलालजी छाजेड़-कराड़ द्वारा राजेन्द्रकुमार बाबुलालजी की अट्ठाई की तपस्या निमित्ते।
● ५१/- वोहरा हँसमुखलाल कांतिलाल द्वारा।

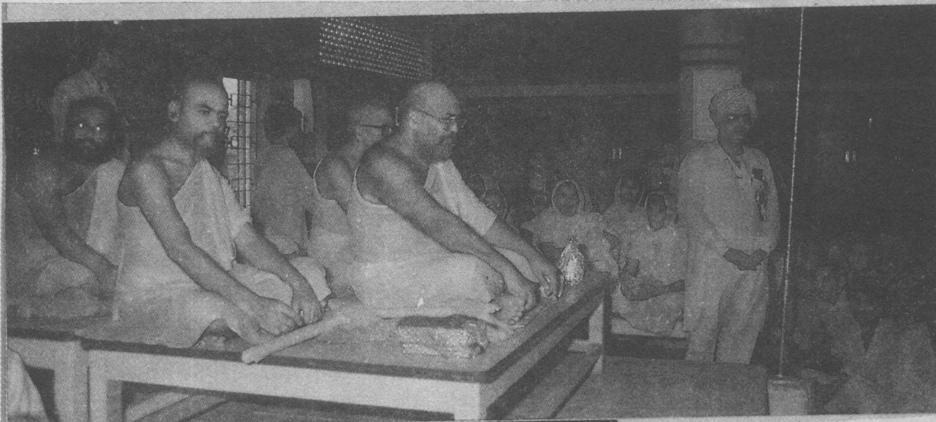

सूरत में आयोजित परिषद सम्मेलन

१. झंडा वंदन करते हुए अध्यक्ष श्री सेवंतीभाई मोरखीया

२. दीप- प्रज्वलन सुरत के मेयर श्री अजित देसाई

३. लो, कर लो द्रव्य विचार' पुस्तक का विमोचन

आपका पत्र मिला

- आप द्वारा प्रेषित शाश्वतधर्म प्राप्त हुआ। शाश्वत धर्म अंक बहुत ही उपयोगी एवं निखर रहा है। आपके मार्गदर्शन व कुशल सम्पादन से पत्रिका दिल दुगना और रात चौगुना तरक्की करें। यही शुभकामना। **- भंडारी मदनराज (महानिदेशक) जोधपुर**
- हमें अगस्त माह का शाश्वत धर्म मिला। चौदह स्वप्नों का रहस्य अच्छा लगा। आशा करता हूँ यह पत्रिका दिन प्रतिदिन वट वृक्ष की तरह फैलती रहें। यही शुभकामना है। **- डी. रमेशकुमार जैन (मदुराई)**
- शाश्वत-धर्म की सुन्दर छपाई एवं विद्वानों की रचनाऐं प्रशंसा के कारणीय है। 'रूकिए! पढिये!! सोचिये!!!' लेख अत्यन्त सराहनीय हैं। **- सुभाषचंद्र जैन - वम्वई**
- शाश्वत धर्म अति रूचिपूर्ण लग रहा है। यह उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर होकर जिन-शासन की सेवा करता रहें। इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ। **- हस्तीमल जैन - ईरोड**
- शाश्वत धर्म अगस्त अंक ९२ मिला। सम्पादकीय बहुत ही प्रशंसनीय है। इसी मंगल कामना के साथ। **- एन. डी. मेहता - देवास**
- अगस्त अंक ९२ मिला। मुख्य पृष्ठ सामयिक प्रकाशन प्रशंसनीय है। सम्पादकीय ह्रदय को झकझोर गया। हमारी वधाई स्वीकारें। **- कांतिलाल भंडारी - राजगढ़ (धार)**
- शाश्वत धर्म अगस्त अंक मिला। आपके द्वारा सम्पादकीय अत्यन्त विचारणीय है। सभी बिन्दु बार-बार व्यक्ति को सोचने पर मजवुर करते हैं। **- जितेन्द्र जैन - कुक्षी**
- आप द्वारा प्रेषित अगस्त शाश्वत धर्म अंक मिला। नमोकार मंत्र और मनोविज्ञान, चौदह स्वप्नों का रहस्य, रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!! रूचिकर लगा। मेरी शुभकामनाऐं। **- राजेश कोठारी - पारा**
- आपके सम्पादन व देख-रेख में शाश्वत धर्म ने एक नया ही रूप ग्रहण कर लिया है। **- रत्नेश संघवी - मंदसौर**
- आपका मासिक नियमित रूप से संप्राहत होता है। मैं नियमित रूप से इसे पढ़ता हूँ। आपके कुशल सम्पादक से पत्रिका का गेट-अप, प्रिंटिग एवं मेटर काफी अच्छा एवं नयनरम्य बना है। **- प्रकाश शाह (सम्पादक - दिव्य-ध्वनि)**
- अगस्त की शाश्वत-धर्म मे सीख के लायक कई समाचार है। मुझे बहुत पसंद आया। आपको आत्म दिल से धन्यवाद देता हूँ। **- एस. जे. क्रीस्टोफर - राजमन्द्री**
- शाश्वत धर्म पढ़ने का प्रथम अवसर मिला। बेहद अच्छी लगी। जो अबालवृद्ध के लिए उपयोगी है। पत्रिका मे निरंतर निखार आ रहा है। मेरी शुभकामना। **- बी. आर. नलवाया (प्रोफेसर) - बडवाह**
- शाश्वत धर्म पत्रिका मिली। मानव मे मानवता कब आती है (आचार्य यतीन्द्रसूरि) का संकलित अच्छा लगा। हमारी शुभकामना ग्रहण करे। **- शरद डूंगरवाल - रतलाम**
- अगस्त अंक बहुत अच्छा लगा। यह पत्रिका निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर हो यही कामना है। **- दिनेश जैन - बालोतरा**

परिषद के प्रांगण से

राष्ट्रीय अध्यक्ष की ओर से

आदरणीय परिषद साथियों,

सादर जयजिनेन्द्र !

पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वर जी महाराज के पवित्र सानिध्य में सम्पन्न परिषद के वार्षिक सूरत राष्ट्रीय सम्मेलन में कई ठोस कदम उठाये जाने का संकल्प किया गया है। परिषद संस्थापक गुरूदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वर जी महाराज ने जिन उद्देश्यों समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रसार, समाज सुधार तथा आर्थिक विकास को लेकर इस संगठन की संकल्पना की थी, उस दिशा में हमें निरन्तर बढ़ना है। परिषद ने प्रमुखता के साथ दो सूत्रों पर बल दिया है - सेवा एवं धार्मिक शिक्षा परिषद के प्रत्येक सदस्य में सेवा का भाव अन्तर्निहित हो जाना चाहिए। उसके समाज के प्रति कर्तव्य हैं तथा इन कर्तव्यों की सम्पूर्ति वह जीवन में सेवा को अपना कर सकता हैं। हम स्वयं अपने आप से पूछे कि हमने सेवा भाव का स्वयं में कितना विकास किया है ? सेवा की कितनी प्रवृत्तियों को जीवन में अपनाया है ? दूसरों की सहायता करने में अपने साधनों का कितना समर्पण किया है ? समाज में अपने द्वारा किए गए कार्यों में मन की प्रामाणिकता के साथ कितनी सेवाभावना का परिचय दिया है ? जिसमें सेवा भावना नहीं है, वह परिषद के संकल्पों तथा गुरूदेव के आदेशों के प्रति समर्पित नहीं कहा जा सकता। पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज ने सूरत सम्मेलन में कार्यकर्ताओं को यही संदेश दिया है। इसे ग्रहण कर परिषद की कार्य शैली से जुड़ने पर हम सभी को अनूठे आनंद की अनुभूति होगी।

दूसरा सूत्र हमारे सन्मुख धार्मिक शिक्षा का है। वर्तमान में संस्कारहीनता के कारण जीवन में कई विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं। आचरण गिरता जा रहा है। विशेषतः नई पीढ़ी में आस्था का अभाव होता जा रहा है। जीवन मूल्यों का ह्रास हो रहा है। इस स्थिति में धार्मिक शिक्षा से ही राहत प्राप्त हो सकती है। परिषद में धार्मिक शिक्षा के व्यापक प्रचार एवं इसे सुव्यवस्थित करने के लिए ठोस कदम उठाये जाने का निर्णय किया है। इसके कार्यान्वयन के लिए पहली आवश्यकता पाठशालाएं स्थापित करने की है। हर स्थान पर श्री संघ या परिषद के माध्यम से धार्मिक पाठशालाएं बनाई जाएं जिसमें छात्रों को विद्याध्ययन करने हेतु जाने के लिए प्रेरित किया जाए। ऐसी पाठशालाएं ही भावी पीढ़ी के लिए संस्कार केन्द्र बन सकती हैं। परिषद द्वारा श्रीमद् यतीन्द्रजयंत ज्ञानपीठ की स्थापना की गई है। ज्ञानपीठ द्वारा पाठ्यपुस्तकों को संशोधित कर प्रकाशित कर दिया गया है। इन्हीं के आधार पर वार्षिक परिक्षा होगी। अतएव अनुरोध है कि अपने ग्राम/नगर में पाठशालाओं की स्थापना करने का कष्ट करें ताकि ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित की जाने वाली अग्रीम परीक्षा में छात्रों को अधिक से अधिक संख्या में सम्मिलित किया जा सके।

परिषद समाज का ऐसा संगठन है जिससे हजारों सदस्य जुड़े हुए हैं। परिषद का भविष्य समाज को अर्पित है आशा है हम सभी मिल कर इन दो सूत्रों को साकार करने के लिए अग्रसर होंगे।

सेवन्तीलाल एम. मोरखिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

मिच्छामि दुक्कड़म्

गत वर्ष के दरम्यान जाने या अनजाने में आपका दिल दुखाया हो तो आप सभी से करबद्ध क्षमा चाहते हैं।

सेवंतीभाई मोरखिया (अध्यक्ष)

सुरेन्द्र लोढ़ा (महामंत्री)

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

स्थानीय कार्यकर्ता शिविरों का आयोजन करें

परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र जी. लोढा सूचित करते हैं कि राजगढ़ जिला धार म. प्र. स्थित परिषद भवन पर अ. भा. श्री राजेन्द्रजैन नवयुवक परिषद द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर पर्याप्त सफल रहा है। कार्यकर्ताओं को संगठनात्मक कार्य करने की नवीन चेतना प्राप्त हुई तथा उनमें उर्जा का संचार हुआ है। परिषद के सूरत सम्मेलन में आए प्रस्ताव के अनुसार यह मार्गदर्शक सिद्धान्त निश्चित किया गया है कि स्थानीय स्तर पर कार्यकर्ता शिविर लगाए जाएं। परिषद शाखाओं को चाहिए कि वे प्रातः ७ बजे से सायं ७ बजे तक के लिए एक दिवसीय स्थानिय कार्यकर्ता शिविर लगाने की योजनाएं बनाएं। जिनमें बारह घंटों का एक सुव्यवस्थित कार्यक्रम हों। ऐसे शिविर में अपने नगर या ग्राम से पचास से अधिक कार्यकर्ता न लिए जाएं। इससे कार्यकर्ताओं में आपसी मेंलजोल बढ़ेगा, वे सेवा सीखेंगे तथा परिषद उद्देश्यों के प्रति उन्हें प्रेरणा प्राप्त होगी। दिन भर पवित्र वातावरण में रहकर वे समाज के प्रति विनम्र चिन्तन कर सकेंगे। ऐसे शिविरों के संचालन के लिए केन्द्रीय महामंत्री कार्यालय से संचालक दल भेजे जा सकेंगे जो कि शिविरों के कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित रूप देंगे। आशा है शाखाएं गंभीरता पूर्वक विचार कर एक दिवसीय स्थानिय कार्यकर्ता शिविर की योजनाएं बनाएगी। किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, राष्ट्रीयमहामंत्री, अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, धानमंडी, मंदसौर म. प्र. से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। प्रत्येक शाखा को वर्ष में एक बार ऐसे शिविर का आयोजन करना है।

आदर्श जीवन पत्राचार स्पर्धा में भाग लें

श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ द्वारा पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंत सेनसूरीश्वरजी महाराज द्वारा लिखित पुस्तक "अरिहंते सरणमपवज्झामम" के आधार पर आदर्श जीवन पत्राचार स्पर्धा क्र. २ का आयोजन किया जा रहा है, जिससे आकर्षण पुरस्कार रखे गयें हैं। ज्ञानपीठ द्वारा प्रश्नपत्र भेजे जाऐंगे जिनका उत्तर का अध्ययन कर लिखना हैं। प्रथम पांच उत्तीर्ण प्रतियोगियों को सन्मानित किया जाएगा। विशेष जानकारी के लिए १) श्री सुरेन्द्र लोढा, अधिष्ठता श्रीमद्यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ, धानमंडी मंदसौर म.प्र. २) श्री जे. के. संघवी, सम्पादक शाश्वत धर्म कार्यालय ठाणे महाराष्ट्र को लिखें।

श्रीमति काश्यप प्रदेश महिला प्रभारी

सूरत : यहाँ आयोजित अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वार्षिक सम्मेलन में राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में परिषद महिला की बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें अ. भा. महिला प्रभारी डॉ. कोकिला भारतीय भी उपस्थित थीं। बैठक में महिला परिषद के संगठन को सक्रिय बनाने का निर्णय किया गया। श्रीमति नीतादेवी काश्यप को महिला परिषदकी म. प्र. इकाई का प्रभारी मनोनीत किया गया। श्रीमति काश्यप प्रदेश में शिघ्र ही दौरा कर शाखाएं गठित करेंगी। राष्ट्रसंत श्री ने महिलाओं से अपील की कि वे अपने घरों में ऐसा वातावरण बनाएं जिससे बच्चों को सुसंस्कार प्राप्त हो सके।

हमारी परिषद शाखाएँ : परिचय

पारा : जिला झाबुआ (म.प्र.) की शाखा पारा द्वारा गठित श्रीमद् राजेन्द्रसूरि बाल विकास समिति द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर में शासकीय मान्यता प्राप्त पाठ्यक्रम अनुसार तीसरी तक अध्यापन किया जा रहा है। वर्तमान में एक सौ छात्र हैं। महावीर जयंति के अवसर पर त्रिदिवसीय सांस्कृतिक तथा धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। नव दिवसीय नवकार महामंत्र की आराधना तथा ओलीजी की आराधना का आयोजन हुआ श्री राजेन्द्र अल्प बचत योजना चल रही है जिसके माध्यम से चार लाख रूपए का ऋण प्रदान किया गया है। प्रतिदिन आठ सौ रूपये की बचत हो रही है। परिषद शाखा के माध्यम से जीवदया के कार्य में नियमित रूप से कुत्तों को रोटी डाली जाती है। पक्षियों के लिए अन्न उपलब्ध किया जाता हैं। श्री राजेन्द्र वेंड तथा श्री राजेन्द्र संगीत मण्डल प्रगति पथ पर है। धार्मिक शिक्षण शिविर में प्रतिवर्ष छात्र भेजे जाते हैं। मोहनखेंड़ा कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर में भी कार्यकर्ता भेजे गए। इस शाखा के माध्यम से कई गतिविधियाँ चल रही हैं।

जावरा : रतलाम जिले की जावरा परिषद शाखा ने खाचरौद में बन रहे श्रीमद् राजेन्द्रसूरि हास्पिटल के निर्माण के सहायतार्थ लक्की ड्रा का आयोजन किया तथा इकतालीस हजार रूपए की राशि एकत्र कर अर्पित की। शाखा के वीस सदस्यों ने अपना रक्तदान करने के लिए संकल्प पत्र भर दिए है। आवश्यकतानुसार वे रक्तदान भी करते हैं।

इस शाखा ने गत वर्ष परिपद का अधिवेशन विरार रूप में आयोजित किया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा का आगमन हुआ। इसे सानिध्य राष्ट्रसंत पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा ने प्रदान किया। श्री संघ जावरा के संयुक्त प्रयास से परिषद ने श्रीमद् जयंतसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन समारोह विराट रूप से आयोजित करवाया जिसके मुख्य अतिथि तत्कालिन उपराष्ट्रपति तथा वर्तमान राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयालजी शर्मा थे। गत वर्ष में बुक बैंक योजना के अंतर्गत परिषद ने तीन हजार रूपये मूल्य की पुस्तके निर्धन छात्र छात्राओं को वितरित की। पुज्य राष्ट्रसंत श्री के. ऐतिहासिक चातुर्मास में परिपद के कार्यकर्ता जुटे रहें। कई विराट आयोजनों की व्यवस्था परिषद कार्यकर्ताओं ने सम्पन्न की।

थराद : जिला बनासकांठा (गुजरात) में शाखा परिषद साधर्मिक भक्ति व अनुकम्पा के अनुकरणीय कार्य कर रही है। प्रतिमाह एक सौ जरूरत मंद परिवारों को राहतकारी मार्गों पर वस्तुएं देकर प्रतिमाह चार हज़ार रूपये का घाटा उठा रही है। व्यवसाय के लिए तीन परिवारों को साधन जुटाए गए। बीमार व्यक्तियों की सहायता के लिए भी धन दिया जाता है। पाठशाला के बालक-बालिकाओं की परिक्षा लेकर उन्हें पुरस्कृत किया जाता है। वृद्ध तथा अशक्त व्यक्तियों के लिए तारंगा आदि तीर्थो की यात्रा आयोजित की गई। अगले वर्ष में यह शाखा दो बेरोजगारों को व्यवसाय में लगाने का प्रयास करेगी। साथ ही दस परिवारों के आवास की सुविधा के लिए योजना बना रही है।

टाकवे बुद्रुक (महाराष्ट्र) : स्थानीय शाखापरिषद का नूतन गठन श्रावणसुदी १५ के दिन शा. रतनचंदजी गोमाजी मुथा की अध्यक्षता में शा. पारसमलजी मुथा के प्रयास से किया जाकर चुनाव कराये गए। जिसमें अध्यक्ष - शा. मांगीलालजी हेमाजी बाफना, सचिव - शा. पोपटलालजी हिम्मतमलजी सोलंकी एवं कोषाध्यक्ष - शा. रमेशकुमार रतनचंदजी मुथा निर्वाचित किये गए। उपरोक्त संस्था पिछले कई वर्षों से संगीत मंडल के नाम से अनेक तीर्थ स्थानों पर अपने कार्यक्रम आयोजित करती रही है।

इन्दौर : शाखा परिषद के तत्वाधान में स्व. श्री कन्हैयालालजी पारेख की स्मृति में पारेख ब्रदर्स द्वारा निशुल्क नेत्र शिविर एवं पोलियो केन्द्र (रविवार) का उदघाटन केन्द्रीय उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यजी काश्यप द्वारा श्री ललितजी जैन विधायक के मुख्य आतिथ्य में दि. ६-९-९२ को श्री राजेन्द्र उपाश्रय जूनी कसेरा बाखल में सम्पन्न हुआ।

सुरत में आयोजित परिषद के राष्ट्रीय सम्मेलन को
राष्ट्रसंत पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के आशीर्वचन

आज की यह वेला सुरत की धरती पर सदैव याद की जाएगी। गुरूदेव स्व. श्रीमदविजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज द्वारा स्थापित परिपद के वार्पिक सम्मेलन एवं इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रान्त-प्रान्त तथा ग्राम-ग्राम से कार्यकर्ताओं का ऐतिहासिक आगमन। यह सभी परिपद के प्रति समर्पित भावना है। परिपद की स्थापना गुरूदेव द्वारा निश्चित विकास के लक्ष्य को लेकर हुई थी। गुरूदेव समाज के भविष्य को देखनेवाले थे, वे भविष्य दृष्टा थे तथा उन्हें परिपद के माध्यम से समाज का भविष्य दिखाई दे रहा था। यह भविष्य गुरूदेव श्री ने तीस वर्ष पूर्व ही देख लिया था। आज का युग बदल रहा है। लोगों के व्यवहार में, विचार तथा मानस में परिवर्तन आ रहे हैं। लोगों का मानस अव धीर नहीं वल्कि अधिर वनता जा रहा है। गुरूदेव ने यह स्थिति उस समय देखी एवं जो कर्तव्य का मार्ग भूल जाता है, उसे मार्ग दर्शन दिया। परिपद कर्तव्य मार्ग का ध्यान तथा ज्ञान रखनेवाली संस्था है। परिपद कार्यकर्ता के लिए गुरूदेव का उपदेश पथ प्रदर्शक है। परिपद के सभी कार्यकर्ताओं के अंदर सेवा का मंत्र तथा समाज के कल्याण की भावना होनी आवश्यक है। जिसमें कर्तव्य की भावना होती है, उसे कुछ समझाना नही पड़ता है। जिसे जब समझाना पड़ता है तब पता चलता है कि वह कर्तव्य व सेवा मंत्र से दूर चला गया है। प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने कर्तव्य के प्रति सजग होना पड़ेगा। उसे आत्म संकल्प करना पड़ेगा कि मैं सब कुछ भूल कर कर्तव्य के लिए तैयार हो जाऊं। परिषद सेवा का मंत्र लेकर चलनेवाली संस्था है। समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रसार, प्रचार, समाज सुधार तथा समाज के कमजोर वर्ग का आर्थिक विकास जैसे उद्देश्यों के लिए कार्य करने की प्रेरणा से चलना ही सेवा है। सेवा में सभी कुछ समाविष्ठ हो जाता है। व्यक्ति को इस हेतु अपने विवेक से सोचना पड़ेगा, अपनी तैयारी को तोलना पड़ेगा। गुरूदेव द्वारा दिए गए आदेश को अपने अंतर में प्रतिष्ठापित करना पड़ेगा। दक्षिण भारत में रहनेवाले कार्यकर्ता या सुदूर प्रदेशों में रहनेवाले परिपद प्रेमी एक छपे हुए कागज के टुकड़े को प्राप्त कर इतने दूर चले आते हैं। वे गुरूदेव के प्रति समर्पित तथा परिषद के प्रति निष्ठावान हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता नहीं है कि उन्हें बुलाया जाएगा या नहीं। उन्हें न्योते की पर्वाह नहीं है। उनमें तो एक ही भाव ठूस-ठूस कर भरा है - मैं परिषद का एक स्वयंसेवक हूँ, एक कार्यकर्ता हूँ। मैं गुप्त रहूंगा, मैं मौन रहूंगा लेकिन सदैव विनम्र भाव से समर्पित रहूंगा। उन्हे कुछ समझाने के लिए कोई आवश्यकता ही नहीं है। परिपद के इस सम्मेलन के प्रसंग पर हर शाखा परिषद को यह तय कर लेना है कि मैं प्रतिक्षण कर्तव्य के लिए तैयार रहूंगा। परिषद की प्रवृत्तियों के लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को सजग रहना चाहिए, सभी को मिल कर कार्य करना है। परिषद समाज से अलग संस्था नहीं है। सभी 'नवयुवक हैं जिसमें कार्य करने की शक्ति, लालसा, इच्छा है, वही नवयुवक है। नवयुवक की परिभापा को कोई उम्र के बन्धन में नहीं बांध सकता। जिसमें भी काम करने की ताकत है वह परिषद में आगे आये। परिषद मे पैसठ वर्ष के बुजुर्ग भी है तथा अठारह वर्ष के युवक भी है। परिषद के माध्यम से कई कार्य संचालित हो रहे है। समाज के लिए परिषद वरदान स्वरूप बन जाए। परिषद के लिए आज भी बुजुर्ग लोग तक आदेश मांगते हैं। सभी परिषद के उद्देश्यों से परिचीत हों तथा परिषद के लिए समर्पित हों। यही शुभ कामना।

विकास किरणों का विसरण

जय जयकार के गगनगूंजित निनादों, परिषद साथियों के अपूर्व उत्साह तथा पंक्तिबद्ध अनुशासित कतारों के साथ गुजरात के महानगर सुरत के मार्गों पर तीन अगस्त ईसवी सन उन्नीस सौ बानवे के शुभप्रभात में विशाल जुलूस राष्ट्रसंत जैनाचार्य पूज्य श्रीमद्विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज सा. के पुण्यदायी सानिध्य में बढा जा रहा था। पूज्य राष्ट्रसंत श्री का यहां ऐतिहासिक चातुर्मास हो रहा है। अठ्ठासी वर्ष पूर्व पूज्य गुरूदेव प्रभुं श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज ने यहां चातुर्मास कर पहली बार त्रिस्तुतिक मान्यता एवं पहचान का बीजारोपण किया था। उपरांत पहली बार समाज के कोई आचार्य भगवन्त उसे पल्लवित करने के लिए इस वर्ष पधारे हैं। श्रीमद् राज राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर का विशाल भवन इस गौरव गाथा का साक्षी है। जुलूस में परिषद के केन्द्रीय पदाधिकारी साफे बांधे हुए चल रहे थे। सुरत संघ व शाखा परिषद के महानुभावों का उल्लास देखते ही बनता था। जुलूस सनातन हॉल में पहुंचा, जहां अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के सोलहवें सम्मेलन का आयोजन था। सम्मेलन में भाग लेने के लिए म. प्र., राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र तथा दक्षिण भारत के प्रान्तों के प्रतिनिधी बड़ी संख्या में पहुंच चुके थे, उनके पहुंचने का क्रम जारी था। विशाल सनातन हॉल खचाखच भर चुका था। परिषद शाखा सुरत के सदस्यों ने रात दिन जागते हुए इसे सुरूचिपूर्ण ढंग से सजाया था। जुलूस के पहुंचते ही यहां सम्मेलन की कार्यवाही प्रारंभ हुई।

प्रातः प्रथम सत्र उद्घाटन समारोह के रूप में था। मुख्य अतिथि सुरत के महापौर श्री अजितभाई देसाई थे। उनके आगमन का करतल ध्वनि के साथ स्वागत किया गया। मंच पर उच्चासन पर गुरुदेव प्रभु श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म. का चित्र स्थापित था। एवं राष्ट्रसंत पूज्य जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महा. मुनिमंडल सह बिराजमान थे। मंच पर परिषद के केन्द्रिय पदाधिकारी, सुरत संघ के आगेवान तथा विभिन्न प्रान्तों के अग्रणीय आसीन थे। पूज्य राष्ट्रसंत श्री ने जनसमुदाय को मंगलाचरण प्रदान किया उपरांत गुरूदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज के चित्र के सन्मुख मेयर श्री देसाई ने दीप प्रज्ज्वलित किया तथा चित्र को माल्यार्पण अ. भा. श्री सौधर्मबृहत्त्पोगच्छीय जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी ने किया। स्वागत भाषण श्री भूपेन्द्र भणशाली अध्यक्ष शाखा परिषद सुरत ने दिया। पश्चात् स्वागत की बेला प्रारंभ हुई। मेयर श्री देसाई, परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया, संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गगलभाई संघवी, परिषद के प्रथम अध्यक्ष श्री सौभाग्यमलजी सेठिया, परिषद के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यजी काश्यप, उपाध्यक्ष डॉ.कोकिलाजी भारतीय, महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढा, संघ के महामंत्री श्री भंवरलालजी छाजेड़, शाश्वतधर्म के सम्पादक श्री जे. के. संघवीजी, परिषद के सहमहामंत्रीगण श्री नवीनचंद्रभाई देसाई, श्री पारसमलजी कोठारी, श्रीमती कांताबहन आंचलिया, कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी कठिड़, अल्पबचत मंत्री श्री जवाहरलालजी जैन काकड़ीवाला, गुजरात इकाई के अध्यक्ष श्री चंद्रकांतभाई वोरा, राजस्थान इकाई के अध्यक्ष श्री पारसमलजी भंडारी, सुरत श्री संघ के प्रमुख श्री महासुखभाई, अग्रणीय श्री चुन्नीलालजी नागरदासजी अदाणी, श्री कांतिलालजी

भणसाली, श्री जीतुभाई हालचंदजी, श्री खूबचंदभाई भाणजीभाई तथा म. प्र. महिला परिषद की अध्यक्ष श्रीमती नीताजी काश्यप, श्रीमती कैलाशीबाई कर्नावट, श्रीमती कांतावहन जैन, श्रीमती पारसमणी मारवाड़ी का स्वागत किया गया। स्वागत भाषण परिषद शाखा अध्यक्ष श्री भूपेन्द्रभाई भणसाली ने दिया। आपने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन में ठोस निर्णय लेने का आव्हान किया। श्रीमती सुरेखा वहन मोदी ने परिषद गीत गाया। परिषद क राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने प्रगति का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया (जो इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित है)। परिषद पाठ्यक्रम भाग एक व दो की पुस्तकों का विमोचन क्रमशः श्री चुन्नीलाल श्री नागरदासजी संघवी (सुरत) तथा श्री कनुभाई भीखालालजी धानेरा निवासी (सुरत) ने किया। **दोनों ने ग्यारह हजार ग्यारह हजार एक रूपये परिषद पाठ्यक्रम प्रकाशन के लिए देने की घोषणा की।** श्री हालचंदभाई रतनसीभाई वोरा ने परिषद पाठ्यक्रम प्रकाशन के लिए पांच हजार एक रूपये देने की घोषणा की। श्री सौभाग्यमलजी सेठिया तथा श्री भंवरलालजी छाजेड़ के सारगर्भित भाषण हुए। मेयर श्री अजितभाई देसाई ने कहा कि सुरत नगर की ओर से मैं अखिल भारतीय प्रतिनिधियों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। राजनीति के रण से संतों के मध्य आने पर संतोष मिलता है। जैसे धूप से परेशान व्यक्ति को वृक्ष की छाया जरूरी है। पानी की बूंद तथा वृक्ष की छाया उसे राहत देते हैं, इसी प्रकार पूज्य राष्ट्रसंत श्री की छाया में आने से आत्म संतोष प्राप्त होता है। जैन धर्म के प्रति आज आस्था वढ रही है। आप बड़े गुणीजन तथा तपस्वी हैं। सम्मेलन रचनात्मक निर्णय ले। परिषद के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यजी काश्यप ने परिषद के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि हमें पूज्य राष्ट्रसंत श्री की प्रेरणा से समाज में विकास करना है। आपने अपनी ओर से घोषणा की कि जो परिषद सर्व श्रेष्ठ कार्य करेगी उसे एक हजार एक रूपए का वार्षिक 'श्रीमद् जयंत ज्योति पुरस्कार' दिया जाएगा। आपकी इस घोषणा का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया त्रिस्तुतिक श्री संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गगलभाई संघवी ने आशीर्वाद दिया। उपरान्त राष्ट्रसंत श्री ने परिषद के लिए प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्रदान किया। (जिसके अंश इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित्त हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने ही इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने कहा कि परिषद स्थान स्थान पर कार्य करते हुए राष्ट्रसंत श्री के मार्गदर्शन में उपलब्धियां प्राप्त कर रही हैं। हमें प्रेम, सहयोग व स्नेह से आगे बढना है। अंत में आभार प्रदर्शन सुरत श्री संघ के प्रमुख श्री महासुखभाई देसाई ने किया। इस का संचालन परिषद की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री. डॉ. कोकिलाजी भारतीय ने किया। दो वजे तक के लिए सम्मेलन भोजन हेतु स्थगित हो गया। सुरत श्री संघ ने भोजन की काफी बढिया व्यवस्था की थी।

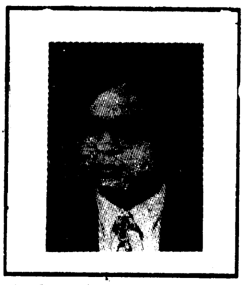

दोपहर पुनः सेंकड़ों कार्यकर्ताओं द्वारा की जा रही जयजयकार के साथ पूज्य राष्ट्रसंत श्री का आगमन सम्मेलन स्थल सनातन हॉल पर हुआ। द्वितीय सत्र राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवन्तीभाई मोरखिया की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ। पूज्य राष्ट्रसंत श्री ने आशीर्वाद प्रदान किया। विभिन्न नगरों से पधारे प्रतिनिधियों द्वारा अपनी शाखाओं का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का क्रम प्रारंभ हुआ। इससे पूर्व श्री सुरेशजी समीर, श्रीमती कलाबहन जैन आदि

के गीत हुए। राणापुर, खाचरौद, थराद, महिदपुर, नीमच, जावरा, सुरत, कुशलगढ, पारा, मंदसौर, जमुनिया कला, जालोर, इंदौर, बड़नगर, नारोली, बालोतरा, ठाणे, टांडा, लोनावला, दुधवा, धुंधड़का, दलौदा, बदनावर, निम्बाहेड़ा, मेघनगर, महिला परिषद रतलाम, आलीराजपुर, आकोली, पिपलौदा, प्रार्थना समाज, बम्बई आदि नगरों के शाखा पदाधिकारियों ने वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया। इस अवसर पर पूज्य गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराज द्वारा लिखित अप्रकाशित ग्रंथ षड्द्रव्य विचार का विमोचन श्री घेवरचंदजी आकोलीवाला ने किया। आपने अपनी ओर से ग्रंथ प्रकाशन में पांच हजार एक रूपये देने की घोषणा की। सत्र में वार्षिक पुरस्कारों की घोषणा मूल्यांकन के आधार पर निम्नानुसार की गई।

(१) श्री मणीभाई प्रेमचंद मोरखिया चिकित्सा पुरस्कार - शाखा परिषद जावरा तथा आलीराजपुर दोनों को।
(२) श्री अशोककुमार काश्यप सेवा पुरस्कार - शाखा परिषद थराद।
(३) श्री कुन्दनमलजी भूताजी संघवी शिक्षा पुरस्कार - शाखा परिषद पारा।
(४) श्री सुखराजजी चमनाजी कबदी शाश्वत धर्म प्रचार पुरस्कार - श्री रमेशभाई एच. गांधी बम्बई।

समारोह में राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी कठिड़ ने पिछले वर्ष की आय-व्यव पत्रक तथा आगामी वर्ष का बजट प्रस्तुत किया। जिसे पारित किया गया। राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने प्राप्त प्रस्तावों का वाचन किया (जो इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित हैं) जिन्हें पारित किया गया। राजगढ़ परिषद भवन पर आयोजित कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर के प्रायोजक श्री मोतीलालजी हरण (उपाध्यक्ष परिषद म.प्र. इकाई) का बहुमान मंच पर किया गया तथा कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर का व्यय भार वहन करने के लिए आभार माना गया। राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यकुमारजी काश्यप ने प्रेरणा दी कि परिषद शाखाएं अधिक से अधिक कार्य करें। जिससे गुरूदेव श्री के स्वप्न साकार हो सकें। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया ने पूरे वर्ष की गतिविधियों का सिंहावलोकन कर परिषद उद्देश्यों की परिपूर्ति के लिए क्रियाशील रहने का आव्हान किया। अंत में समाज के विभिन्न अग्रणीय महानुभावों के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित करते हुए तेरह नवकार का स्मरण किया गया। इससे पूर्व पूज्य राष्ट्रसंत श्री ने प्रवचन देते हुए अनुशासन पर बल दिया। श्री कमलचन्द्रजी भूतीवाला ने आभार माना। सुरत श्री संघ की ओर से श्री महासुखभाई तथा सुरत शाखा परिषद की ओर से श्री भूपेन्द्रभाई सी. भणसाली ने आभार माना। इस सत्र का संचालन महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने किया।

सम्मेलन में सुरत श्री संघ तथा सुरत शाखा परिषद के महानुभावों ने पूरे उल्लास व जोश के साथ रातदिन परिश्रम कर सभी व्यवस्थाएं कीं। इनमें सर्व श्री महासुखभाई देसाई, अमृतलालजी हालचंदजी, मफतलालजी संघवी, चुन्नीलालजी नागरदासजी, कांतिलालजी सवाणी, मगनलालजी आकोलीवाला, मांगीलालजी सांथुवाला, मांगीलालजी आहोर, सुरेशजी सवाणी, जितुभाई हालचंदजी वोरा, वाडीलालजी नेमचंदजी मोरखिया, खूबचंदजी भाणजी,

भंवरलालजी मादाजी, केशवलाल खेतसीभाई, हालचंदजी मणीलालजी बसु, पोपटलालभाई धरू, मोहनलालजी नाथालालजी वोरा, रसिकलालजी नानचंदजी मोरखिया, कांतिलालजी भणसाली, जयंतिलालजी उत्तमचंदजी दोशी, राजमलजी कानजी, संघवी अमृतलालजी हरिलालजी तथा भूपेन्द्रभाई सी. भणसाली, अमितभाई वोरा, सुरेशभाई बलु, अशोकभाई भणसाली, प्रकाशभाई महाजनी, विपिनभाई देसाई, विजयभाई अदाणी, बसंतभाई मोरखिया, जगदीशभाई परिख, महेशभाई मोरखिया, रमेशभाई वोरा, अनिलभाई कांतिलालजी, दिनेशभाई धरू, डाह्यालालभाई मेहता, रसिकलाल डी. कोरड़िया, सेवंतीभाई बी. वोरा, रमेशभाई चुनीलालजी देसाई, मासुकलालभाई के. वोहेरा, पिंकेशभाई संघवी, दिलिपभाई के. अदाणी, महेशभाई अमृतलालजी अदाणी, सुरेशभाई माणकलालजी वोरा, अशोकभाई मूलचंदजी संघवी, जयेशभाई नटवरलालजी संघवी, महेशभाई वाडीलाल शेठ, डिम्पल महासूखभाई संघवी के नाम उल्लेखनीय है। श्री महासुखभाई देसाई ने आभार व्यक्त किया।

प्रातः सत्र में महिला परिषद प्रभारी श्रीमती डॉ. कोकिलाजी भारतीय ने सुरत में महिला शाखा परिषद के गठन की घोषणा की तथा उनकी सूची का वाचन किया। महिला परिषद सुरत की पदाधिकारियों ने महिला परिषद की केन्द्रीय समिति की सदस्याओं का स्वागत किया।

सुरत सम्मेलन अपनी अविस्मरणीय छाप मुद्रित कर गया।

परिषद सम्मेलन सुरत में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव : अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का यह विशाल सम्मेलन देश में मांसाहार को प्रोत्साहित करने के लिए वधशालाओं की स्थापना के माध्यम सें हिंसक प्रवृत्ति को उत्तेजित करने की प्रवृत्ति पर गहरी चिन्ता प्रकट करता है। विशेषतः केन्द्र सरकार ने आठवीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विपुल धनराशि का प्रावधान कर पूरे देश में आठ नई आधुनिक यांत्रिक वधशालाएं स्थापित करने तथा ग्यारह वर्तमान कतलखानों का विस्तार करने का लक्ष्य घोषित कर देश की अहिंसक संस्कृति पर भीषण तथा तीक्ष्ण प्रहार किया है।

सम्मेलन यह मानता है कि भारत प्राचीन काल से ही अहिंसा संस्कृति का पोषक रहा है। इसी रूप में इसकी विश्व में पहचान बनती आयी है। साथ ही यहां के नागरिकों का नैतिक, आध्यात्मिक तथा वैचारिक स्तर भी विश्व में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। इतिहास में उन्होंने अपनी परम्पराओं से विश्व में अग्रणीय स्थान प्राप्त कर विश्व गुरू होने का गौरव भी प्राप्त किया था लेकिन हिंसा की अभिवृद्धि के साथ देश के नैतिक व आध्यात्मिक स्तर का पतन प्रारम्भ हुआ। इस पतन के कारण ही आज देश में मूल्यों का संकट उत्पन्न हो गया है एवं विविध प्रकार की विकृतियों से विनाश के लक्षण उभर रहे हैं। पशुधन का विनाश किसी भी देश के लिए बड़ी क्षति हैं। जब तक आचार विचार तथा व्यवहार की पवित्रता को समान रूप से महत्व देकर देश की अहिंसक संस्कृति को उसका स्थान पुनः प्राप्त नहीं होता है देश में हिंसा, उपद्रव एवं अतिवाद घातक दोषों के रुप में पनपते रहेंगे। साथ ही पशुधन का अभाव होने से पर्यावरण सम्बंधि कई समस्याएं उत्पन्न होती है।

अतः यह सम्मेलन पुरजोर यह मांग करता है कि नवीन वधशालाओं की प्रयोजनाओं को तत्काल निरस्त किया जाए तथा वर्तमान वधशालाओं को बन्द करनें के लिए योजना बद्ध

कार्यक्रम तैयार किया जाए। अगली पंचवर्षीय योजना में नवीन वधशालाओं के लिए किए गए प्रावधान को वापस लिया जाए।

साथ ही देश की अहिंसक जनता से यह सम्मेलन आव्हान करता है कि वह अहिंसा संस्कृति की पुनर्स्थापना के लिए अहिंसक तथा शांतिप्रिय अभियान हेतु अग्रसर हो।

प्रस्तावक : सेवन्तीभाई एम. मोरखिया (बम्बई)
समर्थक : चैतन्यकुमार काश्यप (रतलाम)

सर्वानुमति से पारित

प्रस्ताव : अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का यह सम्मेलन आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर अण्डे के प्रचार प्रसार का घोर विरोध करता है। तथा इसे तत्काल बन्द करने की मांग करता है।

सम्मेलन की मान्यता है कि आचार व आहार की विकृति से भावी पीढ़ी कुसंस्कारों की ओर प्रवृत्त हो रही है। देश में वातावरण बिगड़ रहा है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी अण्डे में कुपोषण के दोष सिद्ध हो चुकें हैं। यह भी दुःखद है कि केन्द्रीय कृषिमंत्रालय के अन्तर्गत मांस को शामिल किया गया है।

ऐसी स्थिति में सम्मेलन मांग करता है कि दूरदर्शन, आकाशवाणी से अण्डे के प्रचार को तत्काल बंद किया जाए, पाठ्यपुस्तकों में अण्डे की विशेषताएं लिए अध्याय हटाए जाएं तथा अण्डे को शाकाहारी घोषित करने का दुष्प्रचार रोका जाए।

साथ ही केन्द्रीय कृषि मंत्रालय से मांस विषय अलग किया जाए।

प्रस्तावक : भंवरलाल छाजेड़ (नीमच)
समर्थक : सौभाग्यमल सेठिया (निम्बाहेड़ा)
सुरेन्द्रलोढा (मन्दसौर)
जे. के. संघवी (ठाणे)
डॉ. कोकिला भारतीय (खाचरौद)

सर्वानुमति से पारित

प्रस्ताव : अखिल भारतीय स्तर पर आर्थिक नियोजन एवं उसके द्वारा समाज के मध्यमवर्गीय एवं आर्थिक सहयोग की अपेक्षा रखनेवाले व्यक्तियों के लिए "श्री राजेन्द्र सूरि सहकारी बैंक" का गठन किया जावे जिसका पंजियन एवमं मान्यता रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया से करवाई जावे। उक्त बैंक में डिपाजिट्स प्राप्त कर इसके द्वारा मध्यमवर्गीय एवं जरुरतमन्द व्यक्तियों को ऋण उपलब्ध कराया जावें, जिससे वे उनके द्वारा उद्योग व व्यापार प्रारम्भ करके स्वावलंबी बन सके। उक्त बैंक की शाखाऐं देश के सभी प्रान्तों में धीरे-धीरे विकसित की जाऐं। बैंक का संचालन अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा गठित संचालक मंडल द्वारा किया जावें। बेकिंग प्रणाली का विधिवत मेमोरेण्डम आदि तैयार कर उसकी नियमावली बनाई जावें। जो कि बैंकिंग एक्ट के अन्तर्गत बनायी गई धाराओं एवं नियमों के अनुरूप हों। सहकारी क्षेत्र में बैंक का पंजीयन प्रान्तीय (राज्य) आधार पर कराया जा सकता है।

प्रस्तावक : एस. एम. संघवी (इन्दौर)
समर्थक : यशवंत कुमार बोराणा (इन्दौर)

प्रायोगिक तौर पर परिषद शाखा इंदौर सघन प्रयत्न प्रारंभ करे।

प्रस्ताव : समाज के रीतिरिवाजों में सादगी तथा मितव्ययता लाने हेतु प्रयत्न किए जाएं -

प्रस्तावक : भुपेन्द्र सी. भणसाली (सुरत)
समर्थक : महेश जी. मोरखिया (सुरत)

सर्वानुमति से आव्हान किया जाता है कि सामाजिक रीतिरिवाजों जैसे-लग्न, सगाई, विभिन्न अवसरों पर दी जानेवाली भेंट को सीमित किया जाए तथा इन्हें सादगी के साथ आयोजित किया जाए। विशेषतः मध्यमवर्गीय तथा कमजोर वर्गीय समुदाय को राहत मिले ऐसे आयोजन समाज द्वारा आयोजित किए जाएं। इस दिशा में परिषद शाखाएं अपनी स्थायी स्थानीय परिस्थिति के अनुसार प्रस्ताव तैयार कर अपने यहाँ प्रयत्न करें।

प्रस्ताव : पर्यावरण सुधार हेतु परिषद शाखाएँ जानकारी दें।

प्रस्तावक : रतनलाल जैन
समर्थक : सुरेन्द्र लोढा (मन्दसौर)

सर्वानुमति से निर्णय लिया गया कि पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए धार्मिक प्राचीन परम्पराओं के पालन हेतू अलख जगाया जाए। जैन संस्कृति के अन्तर्गत जितने भी नियम बनाए हुए हैं, उन्ही को पर्यावरण प्रदूषण दूर करने के कार्यक्रम के रूप में स्वीकृत किया गया है। अतएव परिषद शाखाएं श्रेष्ठ ढंग से संस्कृति को उज्ज्वल बनाने के कदम उठा सकती हैं।

प्रस्ताव : पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सदप्रयत्नों से म. प्र. शासन द्वारा राजगढ़ (जिला-धार) स्थित महाविद्यालय का नाम गुरूदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज के नाम पर किए जाने हेतु धन्यवाद

(अध्यक्ष की ओर से)

म. प्र. शासन के मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा का जावरा चातुर्मास में पूज्य राष्ट्र संत श्री के दर्शनार्थ आगमन के समय पूज्य राष्ट्रसंत श्री ने उनसे राजगढ़ में प्रस्तावित शासकीय महाविद्यालय का नामकरण पूज्य गुरूदेव श्री की स्मृति में किए जाने का अनुरोध किया था। उस अनुसार माननीय मुख्यमंत्री जी ने नामकरण कर दिया है। इस हेतु यह सम्मेलन मुख्यमंत्री श्री सुन्दरलालजी पटवा के प्रति आभार ज्ञापन करता है।

प्रस्ताव : सुरत श्री संघ तथा परिषद शाखा द्वारा सम्मेलन आयोजित करने के लिए धन्यवाद।

(अध्यक्ष की ओर से)

सर्वानुमति से यह सम्मेलन श्री सौधर्मवृहत्पोगच्छीय श्वेताम्बर जैन त्रिस्तुतिक संघ सुरत तथा परिषद शाखा सुरत के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता है जिन्होंने अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के १६ वें सम्मेलन को इतनें उत्साह परिश्रम सेवाभाव तथा सुव्यवस्था के साथ सम्पन्न करवाया। इस सम्मेलन को काफी सफलता प्राप्त हुई है। इसका श्रेय सुरत श्री संघ एवं परिषद शाखा के कर्तव्यनिष्ठ महानुभावों का है। आशा है परिषद के प्रति उनका स्नेह इसी प्रकार रहेगा एवं ये गुरूभक्ति में जुड़े रहेंगे।

प्रस्ताव : अहिंसक कदम उठाने हेतु धन्यवाद

(अध्यक्ष की ओर से)

सर्वानुमति से इस प्रस्ताव के माध्यम से सम्मेलन देश में अहिंसक पहल करने के लिए सम्बंधितों को निम्नानुसार धन्यवाद देता है :

* अहमदाबाद नगर निगम द्वारा किसी भी धर्मस्थल से ५० मीटर दूरी तक मांस व अण्डे की दुकानें नहीं देने, लगाने के लिए किए गए निर्णय हेतु अहमदाबाद नगर निगम को धन्यवाद दिया जाता है।

* नीमच नगर में महिला शाकाहार संघ द्वारा मांस तथा मछली मार्केट हटानें का एक माह तक सफल आंदोलन किए जाने के बाद जिला कलेक्टर तथा अनुविभागीय अधिकारी नीमच द्वारा मांस व मछली मार्केट नगर के मध्य हटाए जाने हेतु प्रशासन को धन्यवाद पारित किया जाता है।

प्रस्ताव : परिषद शाखा नीमच द्वारा श्रीमद् जयंतसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ के मंदसौर जिले के रचनाकारों के किये गये सम्मान कार्यक्रम की प्रशंसा

प्रस्तावक : श्री ज्ञानचंद जी. डूंगरवाल (नया गाव)
समर्थक : श्री मोहनलालजी जैन दलौदा

सर्वानुमति से प्रस्ताव पारित करते हुए परिषद शाखा नीमच के उक्त अनूठे कार्यक्रम की प्रशंसा की जाती है तथा उसे साधुवाद अर्पित किया जाता है। आशा की जाती है कि परिषद शाखाएं ऐसे ही अद्वितीय कार्यक्रम आयोजित कर अपनी छबि उज्ज्वल बनाएगी।

सम्मेलन में श्री महेन्द्रजी जैन तथा श्री कमलेशजी जैन (धुधड़का) श्री नगीनजी सखलेचा तथा श्री प्रकाशचंद जी मारवाड़ी (जावरा), श्री नरेन्द्रकुमारजी धाड़ीवाल तथा श्रीमांणकचन्दजी छाजेड़ (महिदपुर) श्री हिम्मतभाई वोरा (अहमदाबाद) प्रकाशजी (टांडा) श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल टांडा ने प्रस्ताव सुझाव के रूप में पढ़कर सुनाए गए।

शोक-प्रस्ताव

(अध्यक्ष की ओर से)

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद का सुरतसम्मेलन गत वर्ष में जिन सम्माननीय श्रावक श्राविकाओं का निधन हुआ है, उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है तथा निम्नांकित दिवंगत आत्माओं का उल्लेख करते हुए मानता है कि इनके निधन से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है -

१) श्री समीरमलजी जैन (टांडा), संस्थापक कोषाध्यक्ष परिषद केन्द्रीय।
२) श्री अम्बालालजी जैन (पेद्दापूरम), अध्यक्ष - परिषद इकाई दक्षिण भारत।
३) श्री हुक्मीचंदजी भंडारी (सूरा) महामंत्री - परिषद इकाई राजस्थान।
४) श्री ज्ञानचंदजी पोरवाल (नीमच) सदस्य - परिषद राष्ट्रीय कार्यकारिणी।
५) श्री अरविन्दभाई कीर्तिलालजी (वोरा) मंत्री - परिषद शाखा प्रार्थना समाज बम्बई।
६) श्री अशोक भाई पूनमचंदजी देसाई।
७) श्री बहादूरमलजी सदस्य - परिषद शाखा जोगेश्वरी (बम्बई)।

तेरह नवकार मंत्र के मौन स्मरण के साथ शासनदेव तथा गुरूदेव से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति तथा शोक संतप्त परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति प्राप्त हो। ॐ शांति।

परिषद के राष्ट्रीय महामंत्रीद्वारा प्रस्तुत प्रगति प्रतिवेदन
(सुरेन्द्र लोढा, राष्ट्रीय महामंत्री परिषद)

उषा का उठाव तथा संध्या का संताप जीवन की गहराइयों को अपने तई अर्थ प्रदान करते हैं। जीवन चुनौतियों की भीत्ती पर अंकित वे अक्षर हैं जिन्हें युग की पीढ़ी साहस, शौर्य तथा उल्लास के साथ पढ़ती है। जीवन, मूल्यों की स्थापना करता हैं एवं समाज अपनी गतिशीलता से मूल्यों का संरक्षण करता है। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद भी इन्ही मूल्यों की परिप्राप्ति के लिए निरंतर अग्रसर है। परिषद की स्थापना स्व. गुरूदेव श्रीमद विजय यतीन्द्रसूरिश्वरजी महाराज ने संवत २०१६ की पूर्णिमाके शुभ दिन समाज संगठन, धार्मिक शिक्षा प्रचार, आर्थिक विकास तथा समाज सुधार जैसे चतुःदिव्य उद्देश्यों को लेकर की तथा तभी वर्तमान पूज्य जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज को इसे पुष्पित तथा पल्लवित करने के लिए सौंपा। आज परिषद जिस विशाल वटवृक्ष में परिणित हुई है वह गुरुदेव श्री के आशीर्वाद एवं राष्ट्रसंत श्री की पुण्यदायी प्रेरणा का ही परिणाम है। परिषद निरंतर विकास कर उपलब्धियां प्राप्त कर रही हैं। वर्ष में प्राप्त उपलब्धियों का उल्लेख विन्दुवार इस प्रकार है -

*' धार्मिक शिक्षा प्रचार के लिए परिषद के गत अधिवेशन में श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की स्थापना की गई थी। इस वर्ष के अरसे से ज्ञानपीठ द्वारा पाठशालाओं के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित किया जा चुका है, पाठ्य पुस्तकों की संशोधित जांच की जा चुकी है। इन्हें समाज की पाठशालाओं में लागू किया जाएगा। दो पाठ्यपुस्तकों का विमोचन इसी सम्मेलन में हो रहा है। शीघ्र ही इनके आधार पर वार्षिक परिक्षाएं आयोजित की जाएंगी तथा परीक्षा बोर्ड प्रभावशील हो जाएगा।

* परिषद द्वारा प्रकाशित श्रीमद् जयंतसेनसूरि अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन समारोह पूर्वक जावरा में वर्तमान राष्ट्रपति महामहिम डॉ. शंकरदयालजी शर्मा के करकमलों से करवाया गया एवं राष्ट्रसंत श्रीमदविजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज को अर्पित भी उन्होंने किया। ग्रन्थ जैन वाङ्मय ही नहीं हिन्दी साहित्य के लिए एक वेजोड़ ग्रंथ माना गया है। यह परिषद की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

* परिषद द्वारा शाखाओं तथा व्यक्तियों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने के लिए अधिवेशन के समय विभिन्न पांच पुरस्कार दिये जाने की घोषणा की गई थी, वे पुरस्कार इस वर्ष से आरंभ किये जा रहे हैं। मुल्यांकन के आधार पर इन पुरस्कारों का निर्णय कर इन्हें प्रदान किया जा रहा है। यह एक श्रेष्ठ परंपरा है। इससे परिषद शाखाओं की गतिविधियों में गुणयवत्ता का विकास होगा।

* परिषद द्वारा अभ्यास व लेखन की क्षमता को बढ़ाने के लिए आदर्श जीवन पत्राचार स्पर्धा क्र. २ का आयोजन घोषित किया जा चुका है। यह स्पर्धा पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज. द्वारा लिखित पुस्तक "अरिहंते सरणम् पवज्झामि" के आधार पर आयोजित की जा रही है।

* इस वर्ष में परिषद कार्यकर्ताओं को संगठन, सेवा तथा योग्यता के आधार पर सुव्यवस्थित तथा सुविकसित करने के लिए परिषद द्वारा राजगढ़ स्थित परिषद भवन पर एक त्रिदिवसीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में कार्यकर्ताओं को काफी सीखनें को मिला तथा यह सफल माना गया। इस शिविर की भोजन-नाश्ता आदि व्यवस्था का सम्पूर्ण व्यय श्री मोतिलालजी हरण राजगढ़ द्वारा वहन किया गया। इस हेतु उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाता है तथा भविष्य में भी पूर्ण सहयोग की अपेक्षा की जाती है। आगामी वर्ष में इस प्रकार के शिविर जिला शाखा स्तर पर आयोजित किए जाने का प्रयास किया जाएगा।

* गत वर्ष में परिषद की इकाईयों को सशक्त बनाने की दृष्टि से मध्यप्रदेश इकाई का प्रान्तीय सम्मेलन श्री तालनपुर तीर्थ कुक्षी जि. धार पर पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के सानिध्य में आयोजित किया गया। मंदसौर व रतलाम जिला शाखाओं का सम्मेलन परिषद शाखा जावरा के आमंत्रण पर जावरा मे परम पूज्य राष्ट्रसंत श्री की निश्रा में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

* शाकाहार प्रचार हेतु परिषद द्वारा 'अण्डे के बारे में १०० तथ्य' पुस्तक का वितरण किया गया।

* परिषद शाखाओं में स्वयंसेवक दल गठित किये जाने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई।

* समाज व संस्कृति पर होनेवाले कुठाराघातों के विरूद्ध शासन को विरोध पत्र भेजे गए एवं प्रयास किया गया कि ऐसे कदम वापिस हों।

* केन्द्रीय पदाधिकारियों जिनमें अध्यक्ष, उपाध्यक्षगण, महामंत्री, कोषाध्यक्ष आदि सम्मिलित है मंदसौर व रतलाम जिले की शाखाओं का दौरा किया।

* छ केन्द्रीय कार्यालय के संचालन को नियमित किया गया। एक वर्ष में महामंत्री कार्यालय से लगभग साड़ेतीन हजार पत्रों को प्रसारित किया गया।

परिषद सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित रूप से पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के मार्गदर्शन व प्रेरणा से अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संलग्न है। आशा है जैसा सहयोग अभी तक प्राप्त हुआ, भविष्य में भी प्राप्त होता रहेगा।

जय जिनेन्द्र! जय राजेन्द्र!

हमारे नये प्रतिनिधी

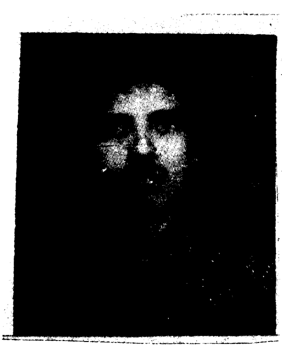

वडावदा निवासी श्री राजेन्द्र चौधरी जावरा वाले 'शाश्वत धर्म' के प्रचारार्थ राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारत के दौरे पर हैं, कृपया ग्राहक बनकर एवं विज्ञापन द्वारा उन्हे सहयोग दीजिये।

— सम्पादक

समाचार - सार

नागदा जंक्शन - जवाहर मार्ग स्थित श्री शान्तिनाथ जैन मंदिर एवं राजेन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर में पर्युषण पर्व निमित्त अठ्ठाई महोत्सव में प्रतिदिन दोपहर पूजन, रात्रिभावना एवं आंगी होती थी।

इन्दौर - श्री सरदारमलजी संघवी (केन्द्रिय प्रतिनिधी) की उपस्थिती में शाखा परिषद ९२-९३ के चुनाव सम्पन्न हुए। जिसमें श्री यशवन्त बोराणा (अध्यक्ष), श्री पुष्पेन्द्र जमीदार (उपाध्यक्ष) व श्री सुभाष 'मामा' (कोषाध्यक्ष) निर्वाचित हुए।

नीमच - मुनि श्री पीयुषविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में महापर्व पर्युषण में मासक्षमण, सोलह उपवास, ग्यारह उपवास, सिद्धितप, १२५ अठाई की तपस्याऐं सम्पन्न हुई। मुनि श्री अनन्तरत्नविजयजी म. सा. के मासक्षमण के पारणे का लाभ श्री मन्नालाल सुन्दरलालजी पटवा (मुख्यमंत्री) द्वारा लिया गया। तपस्या निमित्त रथयात्रा एवं पंच कल्याणक पूजा का आयोजन रखा गया।

पारा - श्री संघ व अ. भा. श्री. रा. जैन नवयुवक परिषद शाखा की उपस्थिती में नवकार आराधना व पर्युषण पर्व बड़े उल्लास से मनाया गया। पर्युषण पर्व में प्रभात फेरी, व्याख्यान, राजेन्द्रससूरि अष्ट प्रकारी पूजन तथा अठ्ठाई, नव उपवास की तपस्याएँ हुई। जन्मवांचन के दिन श्री नगीनलाल, मनोहरलाल, अशोककुमार छाजेड़ ने कार्तिक पूर्णिमा का श्री संघ स्वामीवात्सल्य का लाभ लिया। निर्माणाधीन नवकार आराधना भवन में प्लास्टर, फर्श का लाभ श्री राजेन्द्रकुमारजी कोठारी व श्री राजमलजी तलेसरा ने लिया।

जावरा - महिला शाखा परिषद के चुनाव सर्वानुमति से सम्पन्न हुवे। जिसमें श्रीमती ज्योत्सना जागीरदार (अध्यक्ष), श्रीमती लीलाबाई (सचिव), श्रीमती कंचनबाई पिपाडा (कोषाध्यक्ष) चुनी गई।

धुंधड़का - जयंतसेनसूरि जैन पाठशाला का शुभारम्भ डा. सोहनलालजी सुराणा, श्री अनिलजी सुराणा के तत्वाधान में हुआ।

बडवाह - पर्युषण पर्व की आराधना करवाने जोधपुर स्वाध्याय मंडल से तीन श्रावक बंधु आये थे। परिषद के पूर्व मंत्री श्री शांतिलालजी डूंगरवाल ने ११ व शाश्वत धर्म के प्रतिनिधी श्री अशोक श्रीश्रीमाल ने ९ उपवास किये। जुलूस, चैत्यपरिपाटी, पूजा, भावना एवं तपस्वियों का अभिनन्दन आदि कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

थाने - श्री जांवतराजजी गुंगलीया की ५ वीं पुण्यतिथि निमित्त श्री अभिनन्दन जैन मंडल के तत्वावधान में दि. १५/९/९२ को जैन मंदिर में श्री हरीभाई कोठारी का जाहिर व्याख्यान 'भगवान महावीर एक विलक्षण प्रतिभा' विषय पर आयोजित किया गया।

जमुनिया कला (नीमच) - आचार्य श्री कल्याणसागरजी म. सा. की निश्रा में नवकार आराधना का जाप २७ सितम्बर से प्रारम्भ हो रहा है।

अमलनेर - पू. मुनिराज श्री सर्वोदयसागरजी म. सा. की निश्रा में प्रतिदिन व्याख्यान व रविवारीय महिला व बाल शिविर सुचारू रूप से चल रहा है। १५ अगस्त को मंदिरजी की सफाई शिविरार्थियों द्वारा की गयी। स्थानीय तीनों मंदिरों में बहनों ने अत्यन्त उत्साह व भक्ति पूर्वक सफाई में भाग लिया।

मद्रास - गुरुणीजी श्री मुक्तिश्री जी म. सा. की सुशिष्या श्री महेन्द्रश्रीजी म. सा. आदि ठाणा ८ की निश्रा में व्याख्यान में 'विषांकसूत्र एवं भावनाधिकार में नल-दमयंती चरित्र चल रहा है। आपश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र की

आराधना, सिद्धचक्र महापूजन, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ के अट्ठम, पचरंगी तप, सिद्धि तप, समवसरण तप, सिंहासन तप आदि तपस्याएँ हुयी।

पिण्डवाड़ा - जैनाचार्य श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी के सानिध्य में साध्वीजी शासनरेखाश्रीजी व परागरेखाश्रीजी ने ३० उपवास व १८ व्यक्तियों ने सिद्धितप आदि आराधनाएँ की। ३१ अक्टूबर १, २ नवम्बर ९२ (तीन दिन) श्री बामणवाडजी तीर्थ में अखिल राजस्थान जैन सम्मेलन युवाओं को आमंत्रित किया गया है।

बैंगलोर - आचार्यदेव श्री भक्तिसूरीश्वरजी म. सा. आदि ठाणा ३ एवं पू. साध्वीजी श्री विशालनंदिनीश्रीजी आदि ठाणा २ की निश्रा में पर्युषण पर्व आराधना, सिद्धितप, वरसीतप अट्ठाई तपश्चर्या बड़े उल्लास के साथ सम्पन्न हुई।

माहिम - श्री आदिश्वर महाराज जैन चेरिटेबल ट्रस्ट के सदस्यों की मिटींग हुई जिसमें शा. चंतेरावजी जैन (रानीगॉव), शा. मीठालालजी भगवानजी (आहोर), शा. नैनमलजी एडवोकेट (बाली), शा. जुगराजजी गांधी (खिवांदी) एवं शा. सुकनराजजी उगमजी रानावत (बाली) ट्रस्टी चुने गए।

पुणे - श्री जैन युथ क्लब द्वारा जैन भक्ति संगीत प्रतियोगिता दि. १५/८/९२ को नेहरू मेमोरियल हॉल में सम्पन्न हुई। जिसमें प्रथम श्री जिनशासन मंडल को पुरस्कृत किया गया।

चेम्बूर (बम्बई) - श्री पार्श्वचंद्र गच्छीय ऊँकारश्रीजी की शिष्या साध्वीजी श्री भव्यानंदश्रीजी की शिष्या सिद्धावरसा श्रीजी के मासक्षमण पारणे का लाभ शा. वरदीचंदजी श्रीश्रीमाल (रानी) वालो ने लिया। साध्वीजी की निश्रा में व्याख्यान आदि धर्मआराधनायें चल रही है।

लोनावला - श्री राजस्थान जैन संघ की मिटींग हुई। जिसमें छः साल के लिये श्री माणिकचंदजी प्रतापचंदजी शाह (मेनेजिंग ट्रस्टी), श्री पारसमल वालचंदजी मुथा (आहोर), श्री मांगीलाल गणेशमलजी (फत्तापुरा), श्री कांतिलाल वालचंदजी मुथा (शिवगंज) ट्रस्टी चुने गये। मिटींग मारवाड़ी संघ प्रमुख श्री सुरजमलजी हंजारीमलजी ओसवाल के सानिध्य में सम्पन्न हुई।

सेवाडीनगर - गणिवर्य पू. पन्यासजी श्री जयन्तविजयजी म. सा. तथा साध्वी प. पू. जयलक्ष्मीश्रीजी म. सा. की शिष्या साध्वी जगतश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में पर्वाधिराज पर्युषण में मासक्षमण, सिद्धितप, पाक्षिकक्षमण, ग्यारह, अट्ठाई आदि तपस्याएँ निविघ्न पूर्ण हुई। तपस्याओं के अनुमोदनार्थ श्री संघ ने नवान्हिका महोत्सव का आयोजन रखा।

अमृतसर - श्रमण संघीय क्रांतिकारी मुनि श्री कमलेश के सानिध्य में ३१ उपवास, अट्ठाई, आयम्बिल आदि तपस्याएँ प्रथम बार हुई। तपस्वीयों का भव्य समारोह जिला कलेक्टर, समाज सेवी विधायिका, संघ अध्यक्ष श्री सुखचेनलालजी की उपस्थिति में हुआ। चल समारोह के समापन पर मूर्तिपूजक संघ, तेरापंथ संघ, दिगम्बर समाज, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति ने तपस्वी भाई-बहनों का शाल व माला से स्वागत किया गया।

द्राक्षाराम - (आ. प्र.) प. पू. आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी म. सा. आदि ठाणा ४ की निश्रा में आयंबिल, अखण्ड अट्ठम, भक्तामर अट्ठम, पंचरंगी तप, एकासणें आदि तपस्याएँ हुई। प्रति रविवार धर्मबिन्दु, मलयासुन्दरी के प्रवचन हुए। पू. लब्धिसूरिजी म. सा. की ३१ वीं पुण्य तिथि निमित्ते भक्तामर पूजन, चित्र स्पर्धा आदि रखी गई।

कोरेगाँव - आचार्य श्री भद्रगुप्तसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा २ की निश्रा में अखंड अट्ठम तप, शंखेश्वर पार्श्वनाथ आराधना, महामंत्र जाप की आराधना हुई। पर्युषण महापर्व में दैनिक प्रवचन में शांतसुधारस ग्रंथ जन्मवाचन, बारसासूत्र का वाचन हुआ।

खतौली - राष्ट्रीय आन्दोलन में जैनियों का योगदान विषयक सामग्री फोटो आदि डा. कपुरचन्द जैन (अध्यक्ष) संस्कृत विभाग श्री कन्द-कुन्द जैन डिग्री कालेज खातौली (उ.प्र.) पर भेजें। विषयक की अन्य जानकारी भी उपरोक्त पते से प्राप्त करें।

जावरा - सौ. वृ. त्रि. जैन श्वेताम्बर श्री संघ के तत्वाधान में पर्युषण महापर्व सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर नित्य प्रातः व्याख्यान, रात्रि प्रभु भक्ति, ऑगी रचना विभिन्न कार्यक्रमों का आंयोजन हुआ। इस दिन श्री संघ जावरा के पदाधिकारीयों का चयन किया गया जिसमें श्री बाबुलालजी काठेड़ (अध्यक्ष), श्री सुरेश मेहता (सहमंत्री), श्री बाबुलालजी (महामंत्री) सर्वानुमति से चुने गये।

खतौली - परमपूज्य उपाचार्य श्री कल्याणसागरजी म.सा. के सानिध्य में 'महामंत्र णमोकार एवं अहिंसा शाकाहार विषय पर दिनांक २७ व २८ सितम्बर को जमुनियाँ कला में संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

जयपुर - आचार्य पुज्य श्री देवेन्द्र मुनिजी म. की आज्ञानुवर्तिनी पूज्य साध्वीजी केशरदेवीजी म. आदि ठाणा ५ के सानिध्य में महावीर भवन आदर्श नगर में रविवार २ अगस्त को स्व. आनन्द ऋषिजी म.सा. की ९३ वीं जन्म जयंती तप त्यागपूर्वक मनायी गयी। इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं ने आयंबिल तप की आराधना की।

हुबली - राजस्थान युथ फेडरेशन के तत्वावधान में ८ अगस्त को मुख्य अतिथी श्री जी.बी. छब्बी (डिप्टि कमीश्नर) की उपस्थिति में मदर टेरेसा वृद्धाश्रम में बेडशीट, कीमती दवाईयाँ, प्रतिदिन उपयोगी वस्तुऐं एवम् मिठाई वितरण का आयोजन किया गया।

विजयवाड़ा - श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट के चुनाव (१९९२-९४) में निम्नांकित पदाधिकारी शा. तिलोकचंदजी सदाजी धाणसा (अध्यक्ष) श्री शा. मगनराजजी मंछालालजी (बागरा), शा. जुगराजजी पुखराजजी रेवतड़ा (उपाध्यक्ष), शा. चंपालालजी दानमलजी कोठारी, आहोर (सचिव), शा. मांगीलालजी रीखबचंदजी कबदी, सायला (सह सचिव), शा. मिठालालजी मिश्रीमलजी, आहोर (कोषाध्यक्ष) शा. तेजराजजी मीठालालजी भंडारी, आहोर (सहकोषाध्यक्ष) व कार्यकारिणी में शा. शेषमलजी मगनाजी, आहोर, शा. सुगालचंदजी उकचंदजी वाकरा, शा. हीरालालजी फूलचंदजी बागरा, शा. प्रकाशमलजी शीवलालजी मोदरान, श्री शांतिलालजी गणपतलालजी जालोर, शा. मनोहरलालजी सराजी हुंडीया, शा. भंवरलालजी सोनाजी सुरा, शा. हीराचंदजी नरसाजी कोरा निर्वाचित किये गए।

दिल्ली - भारतीय पशु कल्याण समिति - नयी दिल्ली द्वारा विश्व पशु-पक्षी दिवस ४ अक्टूबर रविवार के अवसर पर प्रातः ९ बजे इण्डिया गेट पर एक विशाल अहिंसा रैली का आयोजन किया जायेगा।

देवनहली तीर्थ (बैंगलोर) - पू. आचार्य श्री स्थूलभद्रसूरिजी म.सा. की प्रेरणा एवं निश्रा में नवनिर्मित श्री नाकोड़ा अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थधाम पर पर्युषण पर्व की आराधना विविध कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुई।

भागल सेफ्टा (राजस्थान) - श्री पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मंडल का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष श्री सुभाषचन्द्र जैन नियुक्त किये गए।

पुणे - जैन युवक संघटना द्वारा द्वितीय अस्थिरोग निवारण शिविर का आयोजन स्वतन्त्रता दिवस (१५ अगस्त) के उपलक्ष में किया गया जिसमें डॉ. श्री लक्ष्मणराव काले ने निःशुल्क १०० पीड़ितों का उपचार किया। इस प्रकार के शिबिर का आयोजन प्रति दो माह में रखने का निर्णय संस्था द्वारा लिया गया।

जोगेश्वरी - (बम्बई) शाह मूलचंदजी रतनचंदजी शाह द्वारा परिवार में सम्पन्न सिद्धितप, अट्ठाई, मासखमण आदि तपश्चर्याओं के उपलक्ष में १८-९-९२ को राजस्थान हॉल - गोरेगांव में स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया।

आहोर - श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर में पर्युपण पर्व उत्साह पूर्वक मनाया गया। कल्पसूत्र रात्रि जागरण हेतु मुथा पारसमलजी वालचंदजी हरजीवालों के यहाँ गया। चौदह स्वप्न घर ले जाने एवं तपस्वियों के पारणे का लाभ शा. पुखराजजी केसरीमलजी ने लिया।

आहोर - आचार्यदेव श्री अरिहंतसिद्धसूरिजी की आज्ञानुवर्तीनी पूज्य तपस्वीनी साध्वीजी श्री विश्वपूर्णाश्रीजी आदि ठाणा ९ का आहोर में चातुर्मासार्थ प्रवेश आपाढ़सुदि १० को हुआ। इनकी निश्रा में अजैन कुंभार श्रीमति सुमटीबेन ने अट्ठाई की तपस्या की। पूज्य साध्वीजी को वर्धमानतप की ९७ वीं ओली चल रही है।

दासपॉ - पूज्य आचार्यदेव श्री लब्धिचंद्रसूरीश्वजी आदि ठाणा की निश्रा में विविध आराधनायें चल रही है।

उमेदावाद - मुनिराज श्री मणिप्रभविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में विविध तपश्चर्याओं के उपलक्ष में भक्तामर पूजन एवं उवसग्गहरं पूजन सह जिनेन्द्रभक्ति स्वरूप अष्टान्हिका महोत्सव आयोजित किया गया।

साहित्य स्वीकार

श्री समग्र जैन चातुर्मास सूची १९९२ - सम्पादक - श्री बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल', प्रकाशक - अ. भा. समग्र जैन चातुर्मास सूची प्रकाशन, १०५ तिरूपति एपार्टमेन्ट, आकुर्ली क्रॉसरोड नं. १, कांदिवली (पूर्व) बम्बई - ४०० ०६७ (महाराष्ट्र); मूल्य २० रूपये; पृष्ठ ५००

इस विशाल सूची ग्रंथ में समग्र जैन समाज के चारों समुदायों के लगभग १० हजार पूज्य आचार्यों, साधु-साध्वियों के सभी नाम, सन १९९२ वर्ष के चातुर्मास स्थलों के नाम, सम्पर्क सूत्र, दीक्षा, महाप्रयाण, नयी पदवी प्रदान, जैन पत्र-पत्रिकाओं की सूची आदि जानकारियों के अलावा गिनिज बुक ऑफ जैन समाज रिकॉर्ड्स के लगभग २०० रिकार्ड प्रस्तुत किये हैं।

दिव्यध्वनी (आचार्य श्री समन्तभद्र विशेषांक) - सम्पादक - श्री प्रकाश शाह; वर्ष १६, जुलाई-ऑगस्ट १९९२ अंक ७-८; श्रीमद् राजचन्द्र आध्यात्मिक केन्द्र, कोबा - ३८२ ००९, जिला - गांधीनगर (गुजरात) मूल्य १० रूपये।

आचार्य श्री समन्तभद्र जन्मशताब्दि निमित्त उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को उजागर करते हुए यह विशेषांक प्रेरणास्पद है।

कुमारपाल महाराजा ना प्रेरक जीवन प्रसंगो - (गुजराती) लेखक : मुनि श्री विमलप्रभविजयजी; प्राप्तिस्थान : राजु. पी. शाह, ४०३ गेलेक्षी एपार्टमेन्ट, अठवा लाइन्स, सुरत, मुल्य - १२ रूपये; पृष्ठ ९६

परमार्हत महाराजा कुमारपाल के जीवन के विविध बोधदायक प्रसंगों को आलेखित किया गया है।

स्वरसंगीत गीत माला - प्रकाशक : श्री जैन युवक संगीत मंडल, लोनावला - ४१० ४०१

मंडल के सदस्यों द्वारा रचित स्तवनों का यह आठवॉ पुष्प प्रकाशित किया गया है।

श्रद्धांजली

शा. इन्द्रमलजी भगवानजी

सृजन एवं चिंतन के अद्वितीय हस्ताक्षर

: नरेन्द्रकुमार रायचंदजी - बागरा

त्रिस्तुतिक समाज के अग्रणी-लब्ध प्रतिष्ठित-मर्मज्ञ विद्वान, रचनात्मक प्रखर विचारक, सिद्धहस्त शब्दशास्त्री, वाक विभूषण शा. इन्द्रमलजी भगवानजी (अ. भा. राजेन्द्र परिषद के वरिष्ठ सलाहकार, 'शाश्वत' के परामर्शदाता) का महाप्रयाण दिनांक - १/९/९२ मंगलवार (भादवा सुदि ५) को सुवह ८ वजे मद्रास में हुआ। 'शाश्वत धर्म' परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजली

जीवन परिचय :

अग्रगामी और अतिक्रान्तिकारी साहित्य मनीषी शा. इन्द्रमलजी का नाम किसी परिचय, प्रस्तावना अथवा अनुमोदना का मोहताज नहीं है। उनके बारे में कुछ लिखना सूरज को दीपक दिखाने समान है। मन की गहराई एवं मस्तिक की उंचाई के अद्भूत समायोजन तथा संयोजन से वे व्यक्ति क्रान्ति के अनस्त सूरज के रूप में नजर आते थे। वे त्याग और समर्पण, निष्कामता और निश्छलता के प्रतीक थे, निर्लोभ और निर्वेर, अप्रमत्तता और साहस, निर्भिकता और अविचलता की जीती जागती मिसाल थे। प्रज्ञा और करूणा, बुद्धि और विवेक, अकिंचनता और वात्सल्यता का ऐसा अभूत मिलन बहुत कम देखने को मिलता है। वे वाग्मी पुरूष थे, वाग्मी इस अर्थ में कि वे जो जैसा सोचते थे, उसे त्यों तैसा अपनी करनी में अक्षरशः जीते थे। जो जीभ पर था - वही जीवन में था, उसमें कहीं कोई दुई नहीं थी। सत्य, निस्पृहता और निखालिसपन की साक्षात मूर्ति शा. इन्द्रमलजी के जीवन और विचार दोनो में गहरी सादगी थी और इसी सादगी में से ही वे श्रेष्ठता की झलक देते थे।

"इन हाथों ने आकाश को झुकाया है।
इन स्त्रोतों ने हर प्यास को वुझाया है।
असंभव पर भी उकेर दिया है संभव को।
अंधेरे में भी प्रकाश को फैलाया है।

इन्द्रमलजी सही मायने में अक्षर पुरूष थे, उन्हें वाणी और वर्ण पर विलक्षण प्रभुता प्राप्त थी। वाणी में सरस्वती प्रस्पुटित होने से उनके शब्दों में एक अद्भुत पारस स्पर्श था जो लोह चित्त को भी स्वर्णिम कान्ति दीप्ति से जगमगा देता था। मानव मनोविज्ञान के इस सुदक्ष ज्ञाता के ओजस्वी भाषणों में एक विशेष धीरता, गम्भीरता, समरसता, चिन्तन की सूक्ष्मता, भाषा की भव्यता नजर आती थी। उनके कई लेखों में (जैसे "कोश परम्परा और अभिधान

राजेन्द्र,'' 'कविवर प्रमोदरूचि और उनका ऐतिहासिक विनंतिपत्र,' 'मंत्र शिरोमणि - णमोकार,' भक्तिसंगम - एक परिशीलन, नमस्कार मंत्र आराधना - एक चिन्तन इत्यादी) भाषा और विचारों की आकर्षक जुगलबंदी देखने को मिलती है। उनकी अनेक रचनाओं में दर्शन की गहराई, तात्विक बोध, कलात्मक भावाभिव्यक्ति, प्रर्याप्त अंतर्वेधकता का संकेत मिलता है। शाश्वत भाव दर्शिता और अर्थगर्भिता में गहरे उतरकर उन्होंने अपने सृजन को युगानुरूप नव्यतर आश्रय और रूप दिया। कवी इन्द्रमलजी की 'रहो अचल आबाद गुरूवर गादी', 'भारत भूमि में विचरे राजेन्द्र सूरीश्वर', जिनशासन जयवंत रहो इत्यादी कविताएँ उनकी सर्वतिशायिनी प्रतिभा, उनकी उच्चतर साधना का प्रमाण है।

आचार्यश्री जयन्तसेनसूरि के प्रती पूर्णतः आस्थावान इस मूर्धन्य साहित्यकार को पद प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि का आकर्षण न होने से उनका एक रूप बहुत कम लोग जानते है और वो है उनका चित्रकार होना। उनके द्वारा बनाये गये गुरूदेव के कुछ चित्र जैसे स्वर्णगिरि-तीर्थ के पृष्ठभूमि पर वना राजेन्द्रसूरिजी का खड़ा चित्र, अभिधान राजेन्द्र कोष लिखते गुरूदेव इतने जीवंत, इतने कलात्मक है, इतने भावपूर्ण और सम्मोहक है कि देखनेवाला चकत्कृत एवं मंत्रमुग्ध हो जाता है। अनेक धार्मिक संस्थानों में लगे उनके अनेक चित्र चित्रकार के परिश्रम, उच्चतर साधना, विचक्षण सारस्वत का, उनकी सर्वतिशायिनि प्रतिभा का परिचय स्वयं देते है। वे जितने कला के प्रति जागरूक थे, उतने ही जीवन के प्रति भी, स्वजीवन और सम्रग जीवन के प्रति भी जागरूक थे।

बागरा (राजस्थान) ही उनकी जन्मभूमि उनकी कर्मभूमि रही। बागरा के सरपंच रहते हुए उन्होंने गांव के विकास के लिए कई योजनाओं को कार्यान्वित किया। अनेक धार्मिक-सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से वे सिर्फ नाम से नहीं मन से जुडे हुए थे। ७३ वर्ष के जीवन के अंतिम क्षण तक वे पढते रहे, लिखते रहे। आज यह ज्ञान-योगीश्वर हमारे साथ नहीं है मगर उनकी रचनाओं एवं अनमोल कलाकृतियों द्वारा वे हमेशा हमारे ह्रदय में जीवंत रहेंगे। इस आत्मदर्शी महामनुज की अनुपम ज्ञानतर्कता, सहिष्णुता, विनम्रता, चैतन्यता, बहुश्रुतता हमे सदा स्मरण रहेंगी।

'आपको मरहूम कहता कौन ?
आप तो जिन्दों के जिन्दा हो
आपकी नैकियाँ बाकी
आपकी खूबियाँ बाकी'

यदि वास्तविक मूल्यांकन किया जाए तो इन्द्रमलजी कल्पना-चिन्तन-अन्तर्दृष्टि, मनोविश्लेषण साधना आदि सभी में तमाम नामी-गिरामी साहित्यकारों से आगे थे। जैन समाज के श्रेष्ठतम व्यक्तियों के इतिहास में इन्द्रमलजी का महान जीवन स्वर्णिक अक्षरों से अंकित होगा। यदि हमें इस शताब्दि पुरूष को कोई श्रद्धांजली अर्पित करनी है तो वह अंजली निर्मल-प्रामाणिक आचरण की ही तो सकती है।

तू अनंत, अजर-अमर तेरा जीवन दर्शन।
'शाश्वत' का तव चरणों में वंदन-वंदन-वंदन॥

उज्जैन :- श्री शैतानमलजी कोठारी का नवकार आराधना के पश्चात् गांधार तीर्थ स्थान पर यात्रा के समय बैठे-बैठे देहावसान हो गया। आप सरल एवं शांत प्रकृति के व्यक्ति थे। आप नवकार मंत्र की आराधना १०-१२ वर्षों से आचार्य श्री के सानिध्य में करते थे।

राजगढ़ :- शाखा परिषद राजगढ़ के पूर्व अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द्रजी धारीवाल की माताजी श्रीमती सुगनवाई का दुःखद निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ कर्तव्यपरायण महिला थी।

लोनावला :- फत्तापुरा (राजस्थान) निवासी शा. गणेशमलजी नागौत्रा सोलंकी की धर्मपत्नी श्रीमती हुलसीवाई (८० वर्ष) का निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ गुरूभक्त कर्तव्यपरायण महिला थी।

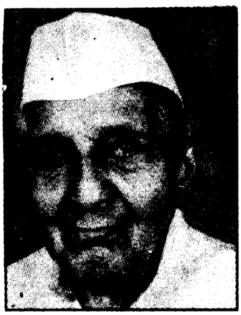

मन्दसौर :- वयोवृद्ध पत्रकार, स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवी, दैनिक ध्वज के सम्पादक एवं अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वर्तमान महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढा के पिता एवं भूतपूर्व शिक्षामंत्री श्री राजमलजी लोढ़ा का २८ अगस्त १९९२ की रात्रि को करीव १ बजे निधन हो गया। आप कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे। आपकी आयु ८३ वर्ष की थी। आपकी शवयात्रा २९-८-९२ को आपके निवासस्थान से निकली जिसमें विभिन्न वर्गों के लोगों ने वडी संख्या में सम्मिलित होकर श्रद्धांजली अर्पित की।

परिषद व शाश्वत धर्म परिवार की ओर से स्वर्गस्थ आत्माओं को हार्दिक श्रद्धांजली।

धन्य तपस्वी

श्री प्रवीण राठोड (थाने) मासक्षमण ★ कु. ज्योत्सना . पी. धरु, सुरत

सकल श्री संघ को भाव भरा आमंत्रण
नव्वाणु यात्रा करने पधारिये!
आयोजक
बाकरा निवासी शा उकचंद जुगराजजी
सालेचा परिवार

प्रारंभ कार्तिक सुदि १५

सम्पर्क:
१. सौधर्म निवास
तलाटी रोड
पालीतणा (सौराष्ट्र)

२. मंगलधर मेटल्स
६११ जी. आइ डी. सी
फेज ४ वटवा
अहमदाबाद.

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट

राष्ट्रसंत प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिश्वरजी म. सा. की निश्रा में सुरत में सम्पन्न नमस्कार महामंत्र आराधना में पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से प्राप्त -

- ५०१/- अमर टुथपेस्ट एवं पाउडर कम्पनी की ओर से।
- ५००/- राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयंतसेनसूरिश्वरजी की आज्ञानुवर्ती साध्वीजी श्री महाप्रभाश्रीजी आदि ठाणा के भीनमाल चातुर्मास निमित्ते श्री जैन संघ की ओर से।
- २५१/- कानपुर निवासी देवजीभाई सावला की पुत्र वधुओं सौ. लता तथा सौ. हंसा की अठाई तप की आराधना के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- २०१/- जोगेश्वरी (बम्बई) शा. मूलचंदजी रतनचंदजी की ओर से।
- प्रत्येक १०१/- रु. भेंट देनेवालों के नाम - राणापुर निवासी श्री सौभाग्यमलजी भेरूलालजी। अलिराजपुर निवासी अनिलकुमार (जय - जिनेन्द्र ट्रेडर्स) की ओर से। नीमच निवासी भंवरलाल नांदेचा की ओर से। जगदीश अमृतलाल गांधी। अजड़ निवासी लालचंदजी पन्नालालजी की ओर से। केशवलाल नागरदास बोहरा। एक सदगृहस्थ की ओर से। रतलाम निवासी नाथूलालजी सोनी की ओर से। मांडवला निवासी रुपचंदजी कुशलराजजी की ओर से। अलीराजपुर निवासी कमलकुमार (कमल क्लॉथ स्टोर्स) बामनिया निवासी बसन्तीलाल राजमलजी लुणावत की ओर से। बामनिया निवासी शांतिलाल हिम्मतलाल चौरडिया की ओर से। पारा निवासी शान्तिलाल मगनलालजी पंवार की ओर से। श्री नरपतलाल वीरचंद संघवी (महेन्द्रभाई) की ओर से। राणापुर निवासी शांतिलाल सकलेचा की ओर से। राजगढ़ निवासी केशरचंद वरदीचंदजी तांतेड की ओर से। इन्दौर निवासी एस. के. जैन की ओर से। टाण्डा निवासी जितेन्द्रकुमार कस्तुरचंद बाँठिया द्वारा। श्री हिराचंद रत्नाजी द्वारा। भाबुआ निवासी सागरमल भंडारी द्वारा। इन्दौर निवासी कान्तिलाल छाजेड़ द्वारा। सियाणा निवासी पारसमल हेमराजजी भंडारी द्वारा। सरसी निवासी कान्तिलाल वरदीचंदजी द्वारा। सुरत कीर्ति स्टील सेन्टर (ह. मांगीलालजी आहोर) द्वारा। राणापुर निवासी सेठ चाँदमलजी द्वारा। झाबुआ निवासी शांतिलाल सकलेचा द्वारा। मेघनगर निवासी महेन्द्रसिंह बोहरा द्वारा। गुप्तदान। बाली निवासी छगनलालजी द्वारा। झाबुआ निवासी मनोहरलाल सेवंतीलाल भंडारी द्वारा। हरजी निवासी केवलचंद - तोलचंदजी (ह. दिनेशकुमार) द्वारा। फत्तापुरा (राजस्थान निवासी स्व. शा.गणेशमलजी नागोत्रा सोलंकी की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती हुलसीबाई के स्वर्गवास निमित्ते पुत्र मांगीलाल हस्तीमल कांतिलाल एवं रमेशकुमार - लोनावला की ओर से।
- प्रत्येक १००/- रु. भेंट देनेवालों के नाम - श्रीमति सुगनबाई का आकस्मिक निधन हो जाने पर उनके पुत्र श्री कैलाशचंद की ओर से। श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. संघ की ओर से सादर।
- ५२/- राजगढ़ निवासी जितेन्द्रकुमार इन्दरमल द्वारा।
- प्रत्येक ५१/- रु. भेंट देनेवालों के नाम - रतलाम निवासी अशोककुमार राजमल सुराणा द्वारा। कालुखेड़ा निवासी हीरालाल भेरूलालजी द्वारा। मुनिराज श्री पीयुष विजयजी म. सा. की प्रेरणा से श्रीमति सौ. सुशीला डूँगरवाल के १६ उपवास की तपस्या निमित्ते श्री सरदारमलजी धाड़ीवाल जावरा वाले की ओर से। नीमच निवासी श्री मनोहरलालजी बैगानी की ओर से श्रीमति चन्द्रलेखा के ११ उपवास की तपस्या के निमित्तें।

શ્રી થરાદ જૈન સંઘ (મુંબઈ)નું સ્વામીવાત્સલ્ય અને મેળાવડો

શ્રી થરાદ જૈન સોશ્યલ ગ્રુપ (મુંબઈ) ના ઉપક્રમે તા. ૬/૯/૯૨ રવિવારે શ્રી થરાદ જૈન સંઘ (મુંબઈ)ના સ્વામિ-વાત્સલ્ય (ધાર્મિક-અનુષ્ઠાન)ના અંતર-ગત અ.ભા.શ્રી. રાજેન્દ્ર જૈન નવ યુવક પરિષદના અધ્યક્ષ શ્રી સેવંતીલાલ એમ. મોરખીયાની ઉપસ્થિતિમાં ધાર્મિક તથા શૈક્ષણિક મેળાવડાનું સુંદર આયોજન કરવામાં આવ્યું હતું.

સમસ્ત કાર્યક્રમનું પ્રમુખ-પદ તેઓશ્રીએ શોભાવ્યું હતું. તારીખ ૧૫-૮-૯૨ શનિવારના રોજ લેવાયેલી લેખીત તથા મૌખિક પરિક્ષામાં પ્રોત્સાહન-ઈનામો આપવામાં આવેલ. વિશેષમાં પર્યુષણ-મહાપર્વની અંત-ર્ગત કરેલી તપશ્ચર્યાના અનુમોદનાર્થે તમામ તપસ્વીઓનું બહુમાન શ્રી થરાદ જૈન ત્રિસ્તુતિક સંઘે કરેલ.

શૈક્ષણિક પરિક્ષામાં ધો. ૧ થી ૧૨ સુધીના ૨૧૫ ભાઈ-બહેનોએ ઉત્સાહ પૂર્વક ભાગ લીધો હતો તેમાં પણ દરેકને પ્રોત્સાહન ઈનામ તથા પહેલા-બીજા નંબરે આવનારને વિશેષ ઈનામ આપવામાં આવેલ.

એસ.એસ.સી.માં રિમ્પલ રમેશકુમાર મોરખીયા ૮૫% માર્કસ તથા એસ.વાય.જે.સી. (ધો.૧૨) પિયુષ ચંદુલાલ વોરા (વળાદરવાળા) ૭૧% માર્કસ મેળવેલ. તેઓને ગોલ્ડ-મેડલ એનાયત કરવામાં આવેલ. પ્રોત્સાહન ઈનામો આપી લાભ લેનાર ભાગ્યશાળી (સ્વ.) દેસાઈ છોટાલાલ અમુલખભાઈ પરિવાર (ધાર્મિક-પરીક્ષા), દેસાઈ ડાહ્યાલાલ મંછાચંદભાઈ પરિવાર (શૈક્ષણીક-પરિક્ષા) તથા (સ્વ.) અદાણી નરપતલાલ ટીલચંદભાઈ પરીવાર તરફથી શૈક્ષણિક પરિક્ષાઓમાં એસ.એસ.સી. તથા એસ.વાય.જે.સી.માં અવ્વલ નંબરે આવનારને ગોલ્ડ-મેડલ એનાયત કરવામાં આવેલ.

સમસ્ત કાર્યક્રમની પૂર્ણાહુતિએ પ્રમુખ શ્રી સેવંતીલાલ એમ. મોરખીયાએ બે શબ્દો રૂપે ''સમાજમાં આવા સુંદર મેળાવડાનું આયોજન એ એક સુંદર પ્રવૃત્તિ છે તે બદલ શ્રી થરાદ જૈન સોશ્યલ ગ્રુપ ખુબજ અભિનંદનને પાત્ર છે. અને સમાજ સેવાની દરેક પ્રવૃત્તિમાં પ્રગતિ સાધે'' આમ કહીને પોતાની અંતરની ભાવનાઓને વ્યક્ત કરેલ.

❇ ચેલ્લણા ❇

પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

વૈશાલી ગણતંત્રના અધિનાયક ચેડા મહારાજાની સૌથી નાની પુત્રી ચેલ્લણા અતીવ રૂપાળી, નમણી, ઠાવકી અને પરગજુ ઉપરાંત માયાળુ, હૃદયાળુ, કૃપાળુ અને દયાળુ હતી. પૂનમના ચંદ્રમાને ૧૬ કળાઓ હતી તે કારણે ચેલ્લણા પાસેથી ૬૪ કળાઓ શીખવા માટે માનો! આકાશમાં અહોરાત પરિભ્રમણ કરતો ચંદ્ર માનવ જાતને સંબોધન કરતાં કહેતો હતો કે—હે બુદ્ધિશાળી માનવો! જીવન જીવવાની મજા કલાધિષ્ઠિત હોવાથી તમારૂં માનવીય જીવન અધોમાર્ગી ન બનવાવું હોય તો તમે પણ નવી નવી કળા શીખવા માટે પ્રતિસમય પ્રયત્નશીલ બનજો, પરંતુ એટલું ધ્યાનમાં રાખજો કે જે કળાઓથી જીવનનું ઊર્ધ્વીકરણ થાય તેને કળા કહેવાય છે. પૂર્વના જ્ઞાનાવરણીયાદિ કર્મો અપુનર્બંધક અવસ્થાને પ્રાપ્ત થયેલા હોવાથી તે કન્યા શસ્ત્ર અને શાસ્ત્રવિદ્યામાં પારંગત હતી. કન્યા જીવન, સધવા જીવન અને વિધવા જીવન આ ત્રણે સ્ત્રીઓના જીવનનાં રૂપો છે તે નિર્મળ પવિત્ર અને પરોપકારી બનવા પામે તે હેતુતી પિતાની અનિચ્છા હોવા છતાં તે કન્યા મગધ દેશના રાજાધિરાજ શ્રેણિક મહારાજ સાથે લગ્નગ્રંથિથી જોડાયા પછી મહારાણી પદને પામ્યા. યદ્યપિ રાજાના અંતઃપુરમાં સુનંદા, ધારિણી, કાળી-મહાકાળી પ્રમુખ ઘણી રાણીઓ હતી. પણ બધાય પ્રસંગોમાં ચેલ્લણા પોતાના બુદ્ધિબળથી, ચતુરાઈથી અને પરોપકારીતાના કારણે આગળ પડતી હોવાથી રાજાની માનીતી હતી.

કર્મરાજાની કૃપા કહો, યા ભાવિકાળમાં ઘણા જીવોને ધર્મ પમાડવાનું બુદ્ધિકૌશલ્ય કહો ચેલ્લણાનું જીવન અહિંસક, સંયમી અને તપસ્વી હતું. જ્યારે શ્રેણિક રાજાનું જીવન હિંસક, માંસાહારી અને શરાબપાનમય હતું. વ્યવહાર દૃષ્ટિએ પોતાના પતિનું આવું જીવન ચેલ્લણાને પસંદ ન પડે તે સ્વાભાવિક હતું. સારાંશ કે પતિ-પત્નીના લક્ષ્યબિંદુઓ સર્વથા જુદી જુદી દિશાના હતાં, તેમ છતાં પણ રાણીજીએ પોતાના પતિ પ્રત્યે અણગમો, નારાજ કે બીજી કોઈ પણ ખરાબી તત્ત્વને પોતાના હૈયામાં પ્રવેશ થવા દીધું નથી. સમજાય તેવી વાત છે કે- જે ઘરમાં કે જેના ઘરમાં જીવન પસાર કરવાનું હોય, તેને વૈર-વિરોધ કે દંતક્લેશના સકંજામા કોઈ કાળે પણ આવવા દેવું જોઈએ નહીં. કેમ કે કોઈક આપણા જ માઠા કર્મોનો ઉદયકાળ હોય ત્યારે ધરજ કેળવ્યા વિના બોલવું-ચાલવું આદિની ક્રિયાઓ જ પરસ્પર વિરોધની આગને ઉત્પન્ન કરનારી બનવા પામે છે, જેમાંથી 'હા અને ના' નો સંઘર્ષ રાહ જોઈને જ તૈયાર બેઠો હોય છે, તેમાં એક જણ કહેશે તો બીજાને ના પાડ્યા વિના ચાલશે જ નહીં. અને આ રોગ કમજોર નથી પર ચક્રવર્તીઓના ઘરને પણ ખતમ કરે તેવી શક્તિ ધરાવનારો છે. ચેલ્લણા રાણી આ તથ્યને બરાબર જાણતી હોવાથી પોતાના પતિના ભયંકર દોષો માટે કદી પણ તોફાન, વાગ્યુદ્ધ કે દંતક્લેશમાં ઉતર્યા નથી. પ્રત્યેક જીવના કર્મો સર્વથા જુદા જુદા હોવાતી આપણે ગમે તેવા સાચા હોઈએ કે તટસ્થ હોઈએ

તો પણ આપણું કહ્યું સામેવાળો માની લેશે તે પ્રાયઃ કરીને બનતું નથી. આવી પરિસ્થિતિમાં જીવાત્મા પાસે બે જ માર્ગ છે. તે આ પ્રમાણે :—

(૧) સામેવાળાનો એક પણ દોષ પોતાના જીવનમાં ઉતરવા ન પામે તેની કાળજી. જેમ કે પતિના જીવનમાં માંસાહાર, શરાબપાન કે હોટલની ગુલામી હોય તો, પત્ની પોતાના જીવનમાં તે દૂષણોનો પ્રવેશ ન થવા દે તે ઉત્તમ માર્ગ છે. અન્યથા પતિ અને પત્ની બંને ભેગા મળીને શરાબપાન કે ભાંગનો નશો કરતાં તેમના માથા ઉપર ઉતરનારી સાડા. સાતની શનિની પનોતિને ઉતારવા માટે સંસારના જ્યોતિષિઓ માંત્રિકો તથા તાંત્રિકો પણ સફળ થવાના નથી.

(૨) સામેવાળા પ્રત્યે નફરત, ધૃણા કે તેને શત્રુ જ માની લેવાની ઉતાવળ કદી પણ ન કરવી, પરંતુ તે જ્યારે શાંત અને સ્વસ્થ હોય ત્યારે, ઈર્ષ્યા, અભિમાન કે ગંદાભાવને ત્યાગીને સારા, તથ્ય, સરળ અને રામબાણ જેવા શબ્દોનો પ્રયોગ કરવો જેથી તે વ્યક્તિ આજે, કાલે કે વર્ષે -બે-વર્ષે પણ તમારી વાત માન્યા વિના રહેશે નહીં.

અરિહંત ભગવંતોની પરમોપાસિકા ચેલ્લણા ઉપરોક્ત બંને માર્ગોમાં પૂર્ણ સાવધાન હતી. તેથી જ સમય આવ્યે મીઠી ટકોર પણ કરતી અને જીવનનો પ્રત્યેક સમય "પતિનો અગાધ પ્રેમ મને કેમ સાંપડે" તે પ્રમાણે વર્તવામાં પણ જાગૃત હતી. આ પ્રમાણે રાજા રાણીનો સમય ઘણા લાંબા સમય સુધી ચાલ્યો અને કોણિક (અજાતશત્રુ) હલ્લ તથા વિહલ્લ જેવા સંતાનોની બક્ષીસ પણ મેળવી શક્યાં હતાં

જૈન શાસનની પૂર્ણ રાગિણી ચેલ્લણારાણી, સંસારી હોવાના કારણે શ્રૃંગારરસમાં પણ મસ્ત હતાં. છતાં પણ માતૃત્વ ધર્મ પ્રત્યે વિશ્વાસુ અને વફાદાર હતાં. કેમ કે માતૃત્વભાવ વિનાના સ્ત્રીત્વમાં કદાચ દોષો ની પરંપરા આવી કે અને વધી પણ શકે છે, પરંતુ માતૃત્વભાવમાં સ્ત્રીત્વનો સમાવેશ ભલે થાય તો પણ તેમાં રહેલું માતૃત્વભાવ સશક્ત હોવાના કારણે તે સ્ત્રી, પતિ-પુત્ર અને પોતાના સહવાસમાં આવનારાઓને સદાચારી અને કર્ત્તવ્ય પરાયણ બનાવ્યા વિના રહેતી નથી

મગધસમ્રાટ શ્રેણિક રાજા ઉત્તમોત્તમ માનવ હતા. બુદ્ધિ શાળી અને રાજ્ય સંચાલનમાં અપ્રમાદી હતાં, તેમ છતાં તેમનાં કર્મોની વક્રમાના કારણે તેમનું યૌવનજીવન શિકાર, મદ્યપાન, માંસભોજન અને સ્ત્રીસહવાસ આદિ દૂષણોથી ઓતપ્રોત હતું. તેવા સમયે તે રાજાના પડખા સેવનાર પેટભરા પંડિતો શાસ્ત્રજ્ઞો અને ખુશામતીઆઓની સંખ્યા બધે અને તેમની માયા તથા સ્વાર્થાંધ જાલમાંથી તે મુક્ત બનવા ન પામે તે સમજી શકાય છે. એટલું જ નહીં પણ તે પાપ, પાપ જ છે એટલે કે શિકાર પાપ જ છે, માંસ ભોજન પાપ જ છે, શરાબપાન પાપ જ છે, ખુશામતીઓનો સહવાસ પાપ જ છે. આવું પેટભરા પંડિતો મોટા માણસોને કઇ રીતે સમજાવવાનાં હતાં. જ્યારે ઉપાદાન કારણ ખરાબ હોય છે ત્યારે નિમિત્ત કારણો પણ પ્રાયઃ કરી ખરાબ જ મળે છે. રાજાના આત્માને પણ મિથ્યાત્વ મોહનો જબ્બરજસ્ત તાવ ચઢેલો હોવાથી કદાચ કોઈ પંડિત પાપને પાપ સમજાવે તો પણ તે ઉમદા વાતને સાંભળવા માટે પણ રાજા તૈયાર ન હતાં તો પછી સમજવાની

વાત જ ક્યાં કરવાની.

મિથ્યાત્વ મોહધર્મની તાકાતનું આ પરિણામ છે જેથી આત્માને પોતાના આત્મસ્વરૂપેજ ઓળખી શકાનું નથી. જ્યારે ચારિત્ર મોહકર્મના કારણે આત્મા પોતાના શુદ્ધિકરણ તરફ સર્વથા બે ધ્યાન જ રહે છે. રાજાજી અત્યારે બંને કર્મોના ભોગવટામાં ચકચૂર હતાં, તેથી એકેય પાપની મર્યાદા ન કરી કે તે બનવા જોગ છે. તેમ છતાં તેવા આત્માઓને કદાચ નિમિત્તકારણો સારામાં સારા તાકાતપૂર્ણ મળી જાય તો સંભવ છે, તેમનો મિથ્વાત્વનો તા ઉતરવા માંડે અથવા સાવ ઉતરી પણ જાય છે.

પરણીને પોતાના પતિની સાથે સસુરાલ આવેલી સ્ત્રીમાં યદિ વિનયધર્મ હશે, વિવેકદીપ પ્રજ્વલિત હશે, કર્ત્તવ્યધર્મ જ સ્ત્રી ધર્મ છે તેનું ભાન હશે, તો તે સ્ત્રીને પતિની સહધર્મચારિણી કે ધર્મપત્ની બનતા વાર લાગતી નથી. ચેલ્લણારાણીજી પોતીની કુમારિકા અવસ્થામાં જ એટલું સમજી શક્યાં હતાં કે - પતિદેવને પાપમાર્ગોથી કે દુરાચાર માર્ગોથી બહાર કાઢવામાં જ સતીત્વધર્મની સમાપ્તિ થાય છે. આવું શિક્ષણ જેના શરીરના અણુઅણુમાં વ્યાપ્ત હોય તેનો જાગૃત આત્મા કયારે કેવા મિજાજમાં આવશે તેની ખબર ભલભલાને પણ પડતી નથી. આજે તો વિવાહિત જીવનને પણ ઘણાં વર્ષો પૂર્ણ થઇ ગયા હતાં અને શ્રેણિક રાજા પણ વૃદ્ધત્વના કિનારે પહોંચી ગયા છે, છતાં પોતાની પ્રતિજ્ઞાને પૂર્ણ કરવા માટે આજે ચેલ્લણારાણી પૂર્ણ તૈયારી કરીને રોજના નિયમ પ્રમાણે પતિના પડખે આસન જમાવી સ્વસ્થ થઈને બેસી ગયા. રાણીજીને પ્રતિજ્ઞા હતી કે—"ગમે ત્યારે પણ મારા પતિને મહાવીસ્વામીના શાસનમાં સ્થાપિત કર્યા પછી જ શાંતિ મેળવીશ." આમ તો પ્રતિદિન દંપતીમાં ધર્મકર્મની ચર્ચા ચાલતી ત્યારે રાણીજી પોતાના પક્ષમાં મુસ્તાક હતાં તો શ્રેણિક રાજા પણ ઓછા ઉતરે કે ઘરવાળીથી ગાંજ્યા જાય તેવા ન હતાં. રોજની આ ચર્ચા છેવટે શ્રૃગારરસમાં પૂર્ણ થતી હતી, પણ આજે બંને અસલી મૂડમાં આવી ગયા હતા, પણ ભવિતવ્યતાના યોગે યૌવનજીવનના કરેલા પાપો, પશુ હત્યાઓ, બત્રીસ લક્ષણા બાળકોના લીધલા બલિદાનો, દેવી-દેવોની સામે મૃત્યુના ઘાટે ઉતારેલા કેટલાય પશુઓના મૂક નિસાસા તેમજ દુરાચાર કર્મોના નકશાઓ શ્રેણિક રાજાની નજરમાં એક પછી એક આવી રહ્યાં હોવાથી રાજાનો આત્મા આજે કમજોર મૂડમાં હતો, સમયજ્ઞ રાણીએ કહ્યું કે - મારા પ્રાણનાથ! ક્ષણભંગુર આ જીવનમાં જ્યાં અમરત્વની આરાધના કરવાની હતી તેના બદલે આપ શ્રીમાને આજ દિવસ સુધી ક્યા ક્યા પાપો નથી સેવ્યા ? તમારા સામંતો, નોકરો કે મંત્રીઓ તો તમારો પગાર ખાતા હોવાના કારણે તમારા પાપકાર્યોમાં સહકારી બને તે માનવા જેવી વાત છે, પરંતુ આપશ્રી હવે વૃદ્ધ થવાની તૈયારીમાં છો, જન્મેલો માણસ અચૂક મરેજ છે, તો આપશ્રી ક્યા મોતે મરશો ? તેનો ખ્યાલ કદી પણ કર્યો છે? તમારો લાડકવાયો કોણિક યદ્યપિ સંસારને માટે અચાતશત્રુ છે તો પણ તમારા માટે પાકો દુશ્મન છે. આ વાત તો તે મારા ગર્ભમાં આવ્યો ત્યારથી હું એકલી જ જાણી રહી છું, કેમ કે આજ દિવસ સુધી આપશ્રીને પણ મારી ખાનગી વાત કરી નથી તો બીજાને તો કરાય જ કેવી રીતે? માટે મારૂં માનીને પણ આપશ્રી એક વાર દેવાધિદેવ પતિતપાવન ભગવાન

મહાવીરસ્વામીના ચરણોનું શરણ સ્વીકાર કરીને મારા આત્માને પણ ખુશ કરશો તેવી આશા છે. આજ સુદી હું તમારી આજ્ઞામાં છું તો આજે મારું વચન પણ માનીને દેવાધિદેવના દર્શનાર્થે પધારો.

જીવનધનની બધીય ક્ષણો, કર્મોની માયા, મનના અધ્યવસાયો કે લેશ્યાઓ કોઈને પણ એક સમાન રહી નથી. શ્રેણિક રાજા નરોત્તમ, પુરૂષસિંહ તથા રાજેશ્વરી હતાં. અને ભવિતવ્યતાનો સથવારો મળ્યો. તેથ જ પરમદયાળુ પરમાત્માના ચરણોમાં જવાનો નિર્ણય કરીને તૈયાર થયા. અભયકુમાર, ચેલ્લણા તથા સામંત અને મહાજનો પણ સાથે હતાં. રાજાની સવારી સમવસરણ તરફ જે માર્ગથી જઈ રહી હતી તે સમયે રાજાના કર્મબંધનો ઢીલા થઈ રહ્યાં હતાં, મન પ્રફુલ્લિત હતું, આંખોમાં નવોરંગ હતો, ગતિમાં ઉત્સાહ હતો. સમવસરણ આવતાં હાથીની સવારી છોડીને પગે ચાલવા લાગ્યા, સમવસરણની ભવ્યતા અને દિવ્યતા જોઈને રાજાજીના મન અને તન મહાવીરસ્વામીના ચરણે ઝુકી ગયા. એક પછી એક સમવસરણની પંક્તિને ઉલ્લંઘતા ગયા અને પ્રભુના ચરણે પહોંચી ગયા. આજ સુધી રાજાને પોતાના રૂપનો ગર્વ હતો પણ મહાવીર પરમાત્માના રૂપ જોયા, દેદાર જોયા, અમૃત ઝરતી આંખો જોઈ અને જીવનના પાપો, પાપ-રૂપે ભાસતા થયા. પછી તો હિંસાના તાંડવ નૃત્યોએ વિરામ લીધો, દુરાચારના કાળા નાગોએ પોતાની ફણા સંકેલી લીદી,અને ભોગપિપાસારૂપી રાક્ષસી મૃતપ્રાયબની.

ચેલ્લણાનો આત્મા આજે પ્રસન્ન હતો, અભયકુમાર વધારે પ્રસન્ન હતો, જ્યારે મગધદેશના નાગરિકોને આનંદનો પાર ન હતો.

જીવનના છેલ્લા ક્ષણો સુધરી ગયા અને સમ્યગ્દર્શનની આરાધના બળે આવતી ચોવીસના પ્રથમ તીર્થંકરપદ મેળવવાનું ભાગ્યમાં નિર્ણીત થયું. તેમ છતાં પણ પ્રતિક્ષણે પોતાની ધર્મપત્ની ચેલ્લણાને ભૂલી ન શક્યા.

'જય હો નારી નારાયણીનો'

કેટલીક વાર મંદ જણાતાં અનુકૂળ સ્પર્શો બહુ લોભાવનારા હોય છે, પરંતુ તે પ્રકારના સ્પર્શોનું મન કરવું નહિ. સાધકે ક્રોધથી પોતાના આત્માને રક્ષવો, માનને છોડવું, માયાને સેવવી નહિ તથા લોભને તજી દેવો.

(ઉત્ત. અ. ૪ ગા. ૧૨)

જે વીતરાગ છે, તે સર્વ રીતે કૃત કૃત્ય છે. તે ક્ષણ માત્રમાં માનાવરણીય કર્મનો ક્ષય કરે છે. તે જ રીતે દર્શનને આવરનારાં-અને અંતરાય કરનારા કર્મને પણ ક્ષય કરે છે.

(ઉત્ત. અ. ૩૨, ગા. ૧૦૮)

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

सरस्वती श्रुति महती न हीयताम् ।

अन्नाणी किं काही किंवा नाही सेय पावगं ।

– दशवैकालिक सूत्र ४/१०

अज्ञानी आत्मा क्या करेगा ? वह पुण्य और पाप को कैसे जान पायेगा ?

इह भविए वि नाणे, परभविए वि नाणे । तदुभयभविए वि नाणे ।।

– भगवती सूत्र १/१

ज्ञान का प्रकाश इस जन्म में रहता है, पर जन्म में रहता है
और कभी दोनों जन्मों में भी रहता है ।

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न हुंति चरण गुणा ।

– उत्तराध्ययन सूत्र २९/३०

सम्यग्दर्शन के अभाव में ज्ञान प्राप्त नहीं होता,
ज्ञान के अभाव में चारित्र के गुण नहीं होते ।

नाणेण जाणइ भावे ।

– उत्तराध्ययन २९/३५

ज्ञान से भावों (जीव-अजीवादिपदार्थों) का सम्यग् बोध होता है ।

सज्झाएणं नाणवरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

– उत्तराध्ययन सूत्र २९/१८

स्वाध्याय से ज्ञानावरण (ज्ञान को आच्छादन - करनेवाले) कर्म का क्षय होता है ।

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए ।

– उत्तराध्ययन ३२/२

ज्ञान के समग्र प्रकाश से आत्मा एकान्त सुख-स्वरूप मोक्ष को प्राप्त करता है ।

नाणं संजमसारं ।

– आचारांग निर्युक्ति २४४

ज्ञान का सार संयम है ।

नाणं पयासगं ।

– आवश्यक निर्युक्ति १०३

ज्ञानप्रकाश करनेवाला है ।

जइ नत्थि णाणचरणं, दिक्खा हु निरत्थिगातस्स ।

– व्यवहारभाष्य ७/२१५

यदि ज्ञान और तदनुसार आचरण नहीं है, तो उसकी दीक्षा निरर्थक है ।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।